महानदी

नराकास भिलाई – दुर्ग की गृह पत्रिका

2017

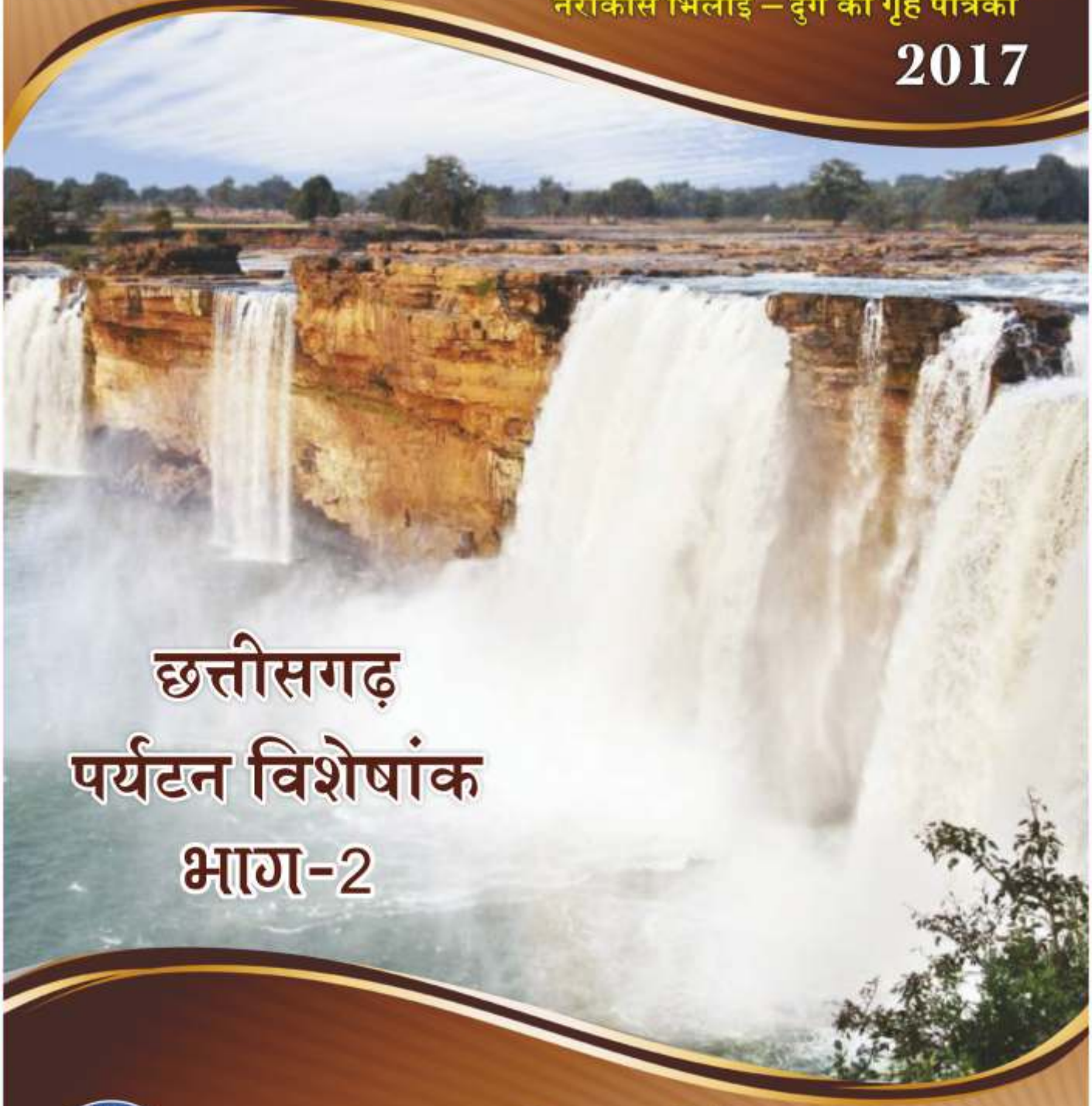

छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक भाग-2

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भिलाई – दुर्ग (छ.ग.)

नराकास की 44 वीं छः माही बैठक की झलकियां

नराकास की गृह पत्रिका 'महानदी' का विमोचन करते हुए अतिथिगण

कार्यपालक निर्देशक (खदान-रावघाट) मुख्यअतिथि को सम्मानित करते हुए

महानदी

राजभाषा गृह पत्रिका–वर्ष 2017

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई – दुर्ग (छ.ग.)

: संरक्षक :

श्री एम.रवि

मुख्य कार्यपालक अधिकारी

भिलाई इस्पात संयंत्र एवं

अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भिलाई–दुर्ग (छ.ग.)

: मार्गदर्शक :

श्री एम.के. बर्मन

कार्यपालक निर्देशक (कार्मिक व प्रशासन)

भिलाई इस्पात संयंत्र

: संपादक :

डॉ. बी.एम. तिवारी

वरि. प्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव,

नगर राजभाषा कार्या. समिति, भिलाई – दुर्ग (छ.ग.)

: संपादक मंडल :

श्री एस.के. राजा

सहा. महाप्रबंधक

सेल, सेट, भिलाई

श्री गोपेन्द्र सिंह ठाकुर

सहायक

केनरा बैक, सेक्टर–6, भिलाई

श्री रविप्रकाश

प्रधान आरक्षक लिपिक

केन्द्रिय औद्योगिक सुरक्षा बल

श्रीमती भावना चॉदवानी

उप प्रबंधक

युनाईटेड इंडिया इंश्योरेंस कं. लि. भिलाई

मुख्यपृष्ठ अभिकल्पन

वीरु स्वर्णकार

डिजाईनर स्क्वेयर

न्यू सिविक सेंटर, भिलाई(छ.ग.)

मो. : 77228 28880, 7400500068

संपादन सहयोग

नराकास सचिवालय के अधिकारी एवं कार्मिक

छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक भाग-2, अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	आलेखकर्ता	पृष्ठ क्रं.
1.	माता कौशल्या	डॉ. परदेशीराम वर्मा, भिलाई	07
2.	खल्लारी	पी.आर. साहू, दुर्ग	08
3.	डीपाडीह	मनोज कुमार, चरोदा	09
4.	गंगरेल बांध	कान्हा कौशिक, धमतरी	10
5.	मल्हार	रश्मि पुरोहित, भिलाई	11
6.	ताला	नीता देशमुख भिलाई	12
7.	पाली का शिव मंदिर	डॉ. रामगोपाल शर्मा, बिलासपुर	13
8.	विश्व का सबसे बड़ा शिवलिंग	मनोज कुमार सोनी, दुर्ग	14
9.	मदकू द्वीप	डॉ. रामकुमार बेहार, रायपुर	15
10.	चैतरपुर (लाफागढ़)	श्रीमती भावना चॉदवानी, भिलाई	16
11.	बहादुर कलारिन की शौर्य गाथा	डॉ. डी.पी. देशमुख, भिलाई	17
12.	मां बंजारी माई	तिलकेश्वरी पठारे, रायपुर	18
13.	पंचकोशी	डॉ. बी.एम. तिवारी, भिलाई	19
14.	तुम्माण खोल	डॉ. प्रकाश पतंगीवार, रायपुर	20
15.	पुरखौती मुक्तांगन	बीरेन्द्र साहू, कुथरेल, दुर्ग	21
16.	सिरकट्टी आश्रम	संतोष कुमार सोनकर, राजिम	22
17.	कांकेर	अब्दुल अजीज खान, कांकेर	27
18.	जोगीगुफा–उड़कुड़ा	गोपेन्द्र सिंह ठाकुर	28
19.	तिलस्मी दण्डक गुफा	डॉ. आभा तिवारी, भिलाई	29
20.	मण्डवा जलप्रपात	संदीप झा, रायपुर	30
21.	कंकालीन	डॉ. प्रकाश पतंगीवार, रायपुर	31
22.	तुरतुरिया	नीता देशमुख, भिलाई	32
23.	खरौद	दीनदयाल साहू, भिलाई	33
24.	गिरौदपुरी	मंगत रविन्द्र, अकलतरा	34
25.	श्रृंगीऋषि आश्रम–सिहावा	विश्वम्भर प्रसाद चंद्रा, नगरी	35
26.	सेतगंगा	राकेश गुप्त, मुंगेली	36
27.	गौ तीर्थ–बानबरद	एस.के. राजा, भिलाई	37
28.	प्रज्ञागिरी	धनंजय कुमार मेश्राम, भिलाई	38
29.	अरण्यक गुफा	डॉ. सुरेश तिवारी, तोकापाल	39
30.	मलाजकुंडम जलप्रपात	मोहम्मद नईम, रायपुर	40
31.	सिद्धपीठ मां चण्डिका आश्रम,	डॉ. राजेन्द्र पाटकर, बेरला	41
32.	दामाखेड़ा मंदिर	रामविशाल, भिलाई	42
33.	लुतरा शरीफ	मो. अबु तारिक, भिलाई	43
34.	राजाबाबा	दिनेश वर्मा, चारामा	44
35.	कोरिया	विनोद कुमार पाण्डेय	45

टिप्पणी :

पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। मौलिकता एवं अन्य विवादों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपर्क सूत्र :

राजभाषा विभाग–313–ए, तीसरा तल, इस्पात भवन,

भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई नगर (छ.ग.) – 490 001

हरीश सिंह चौहान
सहायक निर्देशक (कार्यान्वयन)
एवं कार्यालयाध्यक्ष

भारत सरकार

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य.)
निर्माण सदन 52ए, अरेरा हिल्स,
कमरा नं. 206, भोपाल - 462011
भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755–2553149

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भिलाई–दुर्ग पत्रिका ''महानदी'' का छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक भाग–2 प्रकाशित करने जा रही है। विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन व कुशल नेतृत्व में यह पत्रिका निरंतर पुष्पित एवं पल्लवित होती रहेगी तथा इसकी सामग्री व सुगंध से भिलाई–दुर्ग से जुड़े सभी क्षेत्रों के पाठक लाभान्वित होते रहेंगे। साथ ही यह पत्रिका छत्तीसगढ़ ही नहीं अपितु देश के अन्य केन्द्रि प्रतिष्ठानों के पाठकगणों के लिए भी उपयोगी सिद्व होगी। निश्चित रूप से बहुत ही उपयोगी जानकारी भी प्रकाशित होगी।

किसी भी देश की राजभाषा सरकार और जनता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है इसलिए प्रत्येक सरकारी कर्मचारी का दायित्व है कि वह अपना शासकीय कार्य राजभाषा हिन्दी में करे, भारत की अधिकांश जनता हिन्दी समझती है और इसका प्रयोग करती है।

मुझे विश्वास है कि भिलाई–दुर्ग नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों के सहयोग एवं सामूहिक प्रयासों से इस प्रकार की पत्रिकायें निरंतर प्रकाशित होती रहेंगी, और पाठको को रोचक तथा ज्ञान वर्धक एवं उपयोगी जानकारी मिलती रहेगी।

निश्चित रूप से भिलाई–दुर्ग द्वारा इस ओर एक नया कदम बढ़ाया गया है। मुझे आशा है कि, यह अंक भी पूर्व प्रकाशित अंको की भांति सुंदर रोचक एवं ज्ञान वर्धक होगा। इस अंक के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयासों से इस पत्रिका को उच्च स्तरीय बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

8.8.17

(हरीश सिंह चौहान)

हर किसी की जिन्दगी से जुड़ा हुआ है सेल
There's little bit of SAIL in everybody's life

एम. रवि
मुख्य कार्यपालक अधिकारी, भिलाई इस्पात संयंत्र
एवं अध्यक्ष नराकास, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

M.RAVI
CEO, Bhilai Steel Plant &
Chairman TOLIC, Bhilai-Durg (CG)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

मध्य क्षेत्र के नराकासों में अग्रणी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग के सदस्य संस्थानों में कार्यरत कार्मिकों एवं छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों की रचनाओं के अनुपम संग्रह के रूप में ''महानदी'' का यह अंक ''छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक,भाग–2''के रूप में प्रकाशित हो रहा है। समिति संस्थानों में कार्यरत प्रतिभा संपन्न कार्मिक बिरादरी न केवल साहित्यिक क्षेत्र में अपितु कार्यालयीन कामकाज में भी अव्वल हैं। तभी तो हमारे नराकास को वर्ष 2015 एवं 2016 के 'क' क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ नराकास के रूप में राष्ट्रपति महोदय द्वारा ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' प्राप्त हुआ है। सच मानिये तो यह पुरस्कार हमारे सामूहिक प्रयास का ही प्रतिफल है। इसलिए मैं व्यक्तिगत रूप से नराकास परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

आप जानते ही हैं कि आज का युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है, जिसमें हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार हेतु तकनीकी विषयों को हिंदी में उपलब्ध कराना होगा। इस दिशा में नराकास, भिलाई–दुर्ग ने अपनी स्वतंत्र वेबसाइट निर्मित की है, जिसके माध्यम से हमें सदस्य संस्थानों से ऑनलाइन सम्पर्क करने में सहुलियत हुई है। अब सभी सदस्य संस्थानों के तिमाही प्रतिवेदन एवं अन्य गतिविधियों के समाचार हमें ऑनलाइन ही प्राप्त हो रहे हैं।

ऐसे में सूचना प्रौद्योगिकी विभाग भी इस बात को बखुबी मानता है कि देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है। तभी तो यूनिकोड जैसी पद्धति के माध्यम से हमने हिंदी प्रयोग वृद्धि की दिशा में एक अनुपम उपहार पाया है। मेरा व्यक्तिगत मत है कि यूनिकोड में काम करना अति सरल एवं संविधानसम्मत है, जिसे सबको अपनाना चाहिए।

अंत में ''महानदी'' के इस विशेषॉक के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों / संपादकमंडल के सदस्यों को शुभकामनाएँ देते हुए, इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

एम रवि

(एम.रवि.)

एम.के. बर्मन
कार्यपालक निर्देशक कार्मिक एवं प्रशासन

M.K. BARMAN
Executive Director (Pers. & Admn.)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

मानव एक सामाजिक प्राणी है, जिसे एक सूत्र में जोड़ने का काम भाषा ही करती है। भाषा वही सक्षम है, जो जुबान पर आसानी से आती है। तभी तो कहा गया है कि हिंदी, समझने में भी आसान तथा समझाने में भी आसान है। यही कारण है कि हिंदी आज विश्व में बोली आने वाली प्रथम भाषा बन गई है।

हिंदी की इसी विशालता के कारण संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को संविधान में देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। भारतीय संविधान की रक्षा में सतत् प्रयासशील नराकास, भिलाई–दुर्ग इसके प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इसी कड़ी में समिति की हिंदी गृह पत्रिका ''महानदी'' का यह अंक छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषाँक, भाग–2 के रूप में प्रकाशित की जा रही है, ताकि आप इस प्रदेश की सॉस्कृतिक विरासत से वाकिफ हो सकें।

समिति द्वारा प्रकाशित ''महानदी'' का यह विशेषाँक सदस्य संस्थानों के कार्मिकों एवं छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों की रचनाओं का अनुपम संग्रह है।

आशा है, पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ आपके लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

पत्रिका प्रकाशन की अमित शुभकामनाओं सहित,

(मृणाल कांती बर्मन)

डॉ. बी.एम. तिवारी
वरि. प्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव,
नराकास, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संपादकीय

आदिमानव से लेकर अब तक मानव समाज को बौद्धिक एवं व्यावहारिक स्तर पर कार्यपटु बनाने में भाषा की अहम भूमिका है। तभी तो वैदिककाल के श्रुत परम्परा से लेकर आज के बॉट्सअप ब्लॉग लेखन एवं फेसबुक युग तक भाषा ही हमारी मार्गदर्शिका की भूमिका निभा रही है। इसी परम्परा को जोड़ते हुए समिति की गृह पत्रिका महानदी का यह अंक छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषाँक, भाग–2 के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसके माध्यम से हम भारतीय जनमानस को छत्तीसगढ़ की साँस्कृतिक विरासत से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। इसको साकारस्वरूप देने में कला परम्परा के संस्थापक दाऊ भाई श्री डी.पी.देशमुख जी एवं अन्यान्य लेखकों एवं विद्वानों का हृदय से आभारी हूँ।

संप्रति, 21वीं शताब्दी सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। हमारी समिति भी इससे कदमताल करके चल रही है। हाल ही में हमने भारत सरकार, राजभाषा विभाग के वेबसाइट पर अपने नराकास की समस्त गतिविधियों को ऑनलाइन जनसुलभ करवाया है, ताकि अधिक से अधिक जनसमूह के समक्ष समिति की गतिविधियों को पहुँचा सके।

पत्रिका, समाज की दर्पण होती है, जिसमें वहाँ के सांस्कृतिक सरोकार, रीति–रिवाज एवं ऐतिहासिक समृद्धि को देखा जा सकता है। महानदी का यह अंक इन्हीं सारे दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए प्रकाशित किया जा रहा है।

आशा है, आप हमारे विद्वान, लेखकों एवं सहयोगी साथियों के द्वारा परोसी गई सामग्री अवश्य स्वीकारेंगे।

सादर,

(डॉ. बी.एम. तिवारी)

नराकास सदस्य संस्थानों के हिन्दी समन्वयकों के प्रशिक्षण की झलकियां

माता कौशल्या - छत्तीसगढ़ की बेटी

यह मंदिर दुर्लभतम है, जैसे पुष्कर में ब्रह्मा जी का अकेला प्राचीन मंदिर है, वैसे ही माता कौशल्या का पौराणिक मंदिर रायपुर के पास स्थित गाँव चंदखुरी में है। यह गाँव राजधानी रायपुर से तकरीबन २५ कि.मी. दूर पर स्थित है ।छत्तीसगढ़ अपनी सरलता और सहिष्णुता के लिये मशहूर है। यहां के जन-जन में समन्वय की जो भावना है, उसकी कोई मिसाल ही नहीं है। यहां के सांस्कृतिक परिवलों को चंदखुरी स्थित माता कौशल्या की भव्य मूर्ति छत्तीसगढ़ राज्य के गौरवपूर्ण इतिहास को दर्शाता है। छत्तीसगढ़ की बेटी माता कौशल्या से संबंधित लोककथा, आख्यान और पुराण के कथाओं का भरा-पूरा संसार हमारे पास उपलब्ध है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार सन् १९७३ में हुआ। प्रतिवर्ष यहां भव्य समारोह सम्पन्न होता है।

इतिहासविद बताते हैं कि, भानुमंत राजा की बेटी थी भानुमति। चुंकि उस समय यह क्षेत्र कोसल प्रदेश के नाम से जाना जाता था । अतः भानुमती जब महाराज दशरथ की पटरानी बनकर गई तो उनका नाम नाम कौशल्या पड़ा। कैकय देश से आई कन्या कैकई और सुमात्रा से आई बिटिया सुमित्रा। कौशल्या ने ही विश्व वंदनीय सुपुत्र श्रीराम को जन्म दिया। श्रीराम को सदा धीरज रखकर संग्राम जीतने और हर स्थिति में विवेक रखते हुए सबके हित के लिये सर्वस्व न्यौछावर करने का संस्कार भी माता कौशल्या ने ही दिया। गोसांई तुलसीदास जी ने राज्याभिषेक के बदले वनगमन की आज्ञा पाकर सहज भाव से मातृ आज्ञा लेने पहुंचे श्रीराम को सदुपदेश देती माता कौशल्या का चित्रण इस तरह किया,:-

सरल सुभाऊ राम महतारी बोली बचन धीर धरिभरी ।
तात जाऊँ बलि कीन्हेउ नीका, पितु आयसु एक धरमक टीका ।।

पुत्र के वन जाने का क्लेश माता कौशल्या को नहीं था। वे तब भी भरत और प्रजा के दुख के बारे में सोचकर व्यथित होती हैं। ऐसी महान माता कौशल्या छत्तीसगढ़ की बेटी हैं।छत्तीसगढ़ की पावन भूमि में माता कौशल्या का मंदिर पूरे भारत में एक मात्र मंदिर होना, इसकी दुर्लभता ही नहीं अपितु छत्तीसगढ़ राज्य की गौरवपूर्ण अस्मिता का परिचायक है। माता कौशल्या मंदिर रायपुर जिले के विकास खण्ड आरंग के चन्दखुरी नामक एक छोटे से ग्राम में एक सुन्दर विशाल जलसेन जलाशय के मध्य में स्थित है। इतिहास बताता है कि छत्तीसगढ़ का अधिकांश भाग दण्डकारण्य क्षेत्र के अंर्तगत आता था।

पुरातात्विक दृष्टि से इस मंदिर के अवशेष के अवलोकन से सोमवंशी कालीन ८वीं-९वीं शती इस्वी की मानी जाती हैं। इस जलसेन तालाब के आगे कुछ दूरी पर प्राचीन शिव मंदिर है, जो इसके समकालीन है। पाषाण में निर्मित इस शिव-मंदिर के भग्नावशेष की कलाकृति है। इस तालाब में एक सेतु बनाया गया है। माता कौशल्या का मंदिर जलसेन तालाब के मध्य में स्थित है। तालाब लगभग १६ एकड़ क्षेत्र में विस्तृत है। सुन्दर तालाब के चारों ओर लबालब जलराशि में तैरते हुए कमल पत्र और कमल पुष्प इस जलाशय की सुन्दरता को बढ़ाते हैं। प्राकृतिक सुषमा के अनेक अनुपम दृश्य इस स्थल पर दृष्टिगोचर होते हैं। मंदिर के गर्भगृह में माँ कौशल्या की गोद में बालरूप में भगवान श्रीरामजी की वात्सल्यमय प्रतिमा श्रद्धालुओं एवं भक्तों का मन मोह लेती है। चन्दखुरी सैकड़ों साल पूर्व तक चन्द्रपुरी देवताओं की नगरी मानी जाती थी। चन्दखुरी-चन्द्रपुरी का अपभ्रन्श हैं। कहा जाता है कि जलसेन इस क्षेत्र का सबसे बड़ा तालाब था। इसके चारों ओर छह कोरी अर्थात १२६ तालाब होने की जलश्रुति मिलती है। किन्तु अभी केवल २० से २६ तालाब ही शेष रह गये हैं।

पौराणिकता काल में वाल्मीकि रामायण के अनुसार अयोध्यापति युवराज दशरथ के अभिषेक के अवसर पर कोसल नरेश भानुमंत को अयोध्या आमंत्रित किया गया था। इसी अवसर पर राजकुमारी भानुमति भी अपने पिता के साथ अयोध्या गई थी। उसकी सुन्दरता से मुग्ध होकर युवराज दशरथ ने भानुमंत की पुत्री से विवाह का प्रस्ताव रखा तभी कालान्तर में युवराज दशरथ एवं कोसल की राजकन्या भानुमति का वैवाहिक संबंध हुआ और कोसल की राजकन्या भानुमति को विवाह उपरान्त कौशल्या कहा जाने लगा। रानी कौशल्या की कोख से प्रभु राम का जन्म हुआ और यह कोसल प्रदेश जो बाद में दो भाग में विभक्त हुआ। उत्तर कोसल या अवध का क्षेत्र एवं दक्षिण कोसल छत्तीसगढ़ का क्षेत्र कहलाया। इस प्रकार माता कौशल्या का संबंध कोसल से होने के कारण इस पावन धरा में उसकी मधुर स्मृति में कौशल्या मंदिर का निर्माण माता कौशल्या के प्रति अगाध सम्मान एवं प्रेम का परिचायक है। पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार श्रीराम ने अपनी माता से प्राप्त दक्षिण कोसल छत्तीसगढ़ राज्य अपने पुत्र कुश को सौंपा था। इस कारण छत्तीसगढ़ के पौराणिक संबंध रामायणकालीन घटनाओं से होती है। कौशल्या जी छत्तीसगढ़ में पैदा हुई थी। इस नाते रामचन्द्र जी छत्तीसगढ़ के भांजे हैं और इसीलिये यहां भांजो के चरण छूए जाते हैं। भांजो को प्रणाम कर छत्तीसगढ़ी व्यक्ति श्रीराम तक जा पहुंचता है।

अपने प्रिय प्रभु मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचंद्र जी की जननी माता कौशल्या की पुण्य स्मृति में उसके छत्तीसगढ़ के संबंध को महिमामंड़ित करने के लिये चन्दखुरी में बनाया गया माता कौशल्या मंदिर देश के मंदिरों के इतिहास में एक अनुपम उदाहरण है।

डॉ. परदेशीराम वर्मा, भिलाई

खल्लारी- छ.ग. का ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल

प्राचीनतम ऐतिहासिक नगरी खल्लारी छत्तीसगढ़ के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में से एक है। शिलालेख कलाकृतियों व पुरातात्विक महत्व के अवशेष के दृष्टिगत यह अंचल भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के सर्वाधिक प्राचीनतम स्थल खण्ड गोंडवाना का ही एक भाग है जो पुराण युग (पूर्व केम्ब्रयन) युग में निर्मित हुआ था। ग्राम खल्लारी तहसील बागबाहरा एवं जिला महासमुंद में स्थित माँ खल्लारी माता का मंदिर है। यहां दूर-दूर से भक्त देवी के दर्शन के लिए आते है, यह मंदिर जिला महासमुंद से 25 कि.मी. तथा बागबाहरा से 13 कि.मी. में स्थित है। यह मंदिर रायपूर (छ.ग.) से 79 कि.मी., जिला महासमुंद से 25 कि.मी. भीमखोज के पास में स्थित है ।

मंदिर परिसर एवं ग्राम शिलालेख से ये मंदिर सन् 1415–16 ई. का है। कहा जाता है राजा हरिब्रह्मदेव ने खल्लारी को अपनी राजधानी बनाया तो उसकी रक्षा के लिये माँ खल्लारी की मूर्ति स्थापना की। ऐतिहासिक नगरी खल्लारी अर्जुन पुत्र बब्रूवाहन जो पाण्डव वंश का राजा था, का शासन तत्कालीन श्रीपुर में 11वीं शताब्दी तक था।

खल्लारी का तात्पर्य है खल + अरी अर्थात् शत्रुओं का नाश करने वाली। माँ खल्लारी मंदिर में अनेकों किंवदंतियाँ प्रचलित है, आज से लगभग 300 वर्ष पूर्व बेमचा (महासमुंद) में नायक (बंजारा) जाति के लोगों का आधिपत्य था जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और समृद्धशाली माने जाते थे। इन्हीं नायक राजा के द्वारा बेमचा में बालाजी का मंदिर बनाया गया। इसी स्थान पर बैठकर राजा नायक अपनी रानी के साथ मनोरंजन हेतु पाशा खेलते हुए प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लिया करते थे।

किंवदंती के अनुसार नायक राजा का मन माँ के सौन्दर्य पर आसक्त हो गया और वह राजहठ द्वारा उन्हें पाने की लालसा करने लगे। माँ ने उसे विभिन्न तरिको से अहसास कराया कि तू जिसे पाने की चेष्ठा कर रहा है वह साधारण नारी नहीं वरन् तुम्हारे गांव बेमचा की रक्षिका कुलदेवी खल्लारी माता हूँ। परन्तु कामांध राजा माँ के साथ अमर्यादित आचरण करने के लिए उघत थे । तब कुपित हो माँ ने श्राप दिया कि आज से तुम्हारा राज-पाठ, धन-वैभव, कुटुम्ब-परिवार सब कुछ नाश हो जाएगा।

जनश्रुति के अनुसार रानी उसी समय वहां पहुँची तथा माँ के साथ राजा का कुकृत्य उससे देखा नही गया और वह बावली में कूद गई। आत्मग्लानि से व्यथित राजा ने लोक-लाज और लोक-निंदा के भय से तत्क्षण ही बावली में कूदकर आत्मलीला समाप्त कर ली। कहा जाता है कि राजा-रानी के पूरे परिवार ने उसमें कूदकर जान दे दी। माँ खल्लारी ने उसी दिन पाषाण रूप धारण कर लिया। वर्तमान में मंदिर परिसर में बावली और मंदिर आज भी मौन स्वरूप में राजा और माता की कहानी दोहराते हैं। बेमचा बस्ती की पूर्व दिशा में माँ खल्लारी का मंदिर है जहां प्रति वर्ष चैत्र पूर्णिमा को मेला लगता है। श्रद्धा-सुमन अर्पित करने विभिन्न स्थानों से माता के भक्त यहां आते हैं ग्राम खल्लारी में प्रवेश करते समय एक मंदिर नीचे भी स्थित है जिसे नीचे वाली माता का मंदिर या शहर कहते हैं माता के मंदिर से पहले सिद्धबाबा (भगवान शंकर) की पूजा क्षेत्र के आदिवासी बैगाओं द्वारा की जाती है ।

भीमपाँव :- परिक्रमा के दौरान मनुष्य के पद की आकृति का बहुत बड़ा चिन्ह है इसमें पूरे वर्ष भर पानी भरा रहता है। पूर्व में पहाड़ों पर जल आपूर्ति का यही एक मात्र स्त्रोत था।

सिद्ध बाबा मंदिर गुफा :- आदिवासी बैगाओं द्वारा सर्वप्रथम पूजा यहीं की जाती है। भीम चूल्हा से आगे सिद्ध बाबा की इस गुफा में उनकी मूर्ति स्थापित हैं।

भीम चूल्हा :- वनवास के दौरान भीम इस चूल्हे पर खाना बनाया करते थे। पहाड़ी पर चूल्हे की आकृति की तरह बना यह गढ्ढा सदैव सूखा ही रहता है।

पत्थर की नाँव :- पश्चिम दिशा में नाँव की आकृति का यह पत्थर आधा मैदान की ओर तो शेष भाग सैकड़ो फिट गहरी खाई में झुका हुआ है। जो एक छोटे से पत्थर पर संतुलित है। इसके ठीक सामने गस्ती के विशाल वृक्ष के नीचे एक पत्थर के सामने जमीन पर ठोंकने से हर स्थान से अलग-अलग आवाजें आती है। एक स्थान पर जमीन खोखली होने का आभास होता है। यहां छोटे-छोटे पत्थर से ठोक-ठोक कर पर्यटक गण विभिन्न प्रकार की आवाजों का आनन्द लेतें हैं।

हाथी-हथनी पहाड़ :- भीम पांव के दक्षिण-पश्चिम में कुछ दूरी पर हाथी-हथनी आकृति की दो विशाल शिला है इसे नायक राजा के हाथी कहा जाता है नीचे खल्लारी आगमन के समय वहॉ के विद्युत मण्डल कार्यालय व स्कूल के समीप देखने से यह हाथी के जोड़े के समान दिखाई पड़ते हैं।

जलधारा :- भीम चूल्हा के बगल से निकलनें वाली यह जलधारा पहाड़ो के अन्दर से होकर पूर्व दिशा के बीच में दिखाई पड़ती है।

पी.आर. साहू–दुर्ग

डीपाडीह-प्राचीन देव स्थल

छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित अंबिकापुर रेलवे स्टेशन से 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित प्रमुख पुरातात्विक स्थल के रूप में विख्यात है । डीपाडीह शब्द का अर्थ देव स्थान या प्राचीन भग्न आवासों के टीले के रूप में रहा होगा। कृषि हेतु भूमि खेत में परिवर्तित कर दिए जाने के कारण आवासीय संरचना पूर्णतः स्पष्ट हो जाने के पश्चात् भी यहां पर लगभग 6 कि.मी. के क्षेत्र में प्राचीन भग्न मंदिरों के अवशेष टीलों के रूप में विद्यमान हैं। इन्हीं टीलों के खनन से 6वीं शदी ईसवी से लेकर 10 वीं शदी ईसवी तक के प्राचीन मंदिरों के अवशेष, प्रतिमाएँ, स्थापत्य, खण्ड, मूर्तिफलक तथा दैनिक उपयोग की अन्य महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध हुई है।

डीपाडीह में प्रमुख रूप से सामत सरना, उरांव, टीला, रानी पोखरा, चामुण्डा मंदिर, पंचायतन मंदिर तथा बोरजा टीला में भूतल के गर्भ से खनन कार्य द्वारा 6 प्रमुख तथा 74 लघु मंदिर प्रकाश में आए हैं। इनमें से अधिकांश शिव मंदिर हैं। इसके अतिरिक्त यहां विष्णु, सूर्य, कुबेर, देवी मंदिर भी मिले हैं। सामत सरना डीपाडीह का प्रमुख पुरातात्विक स्थल रहा है। सामत राजा के नाम से पूजित स्थल में पशुधर शिवजी की विशालकाय चतुर्भुजी प्रतिमा, कार्तिकेय, नदी, देवियों, शिव तथा राजलक्ष्मी एवं बाहर चामुण्डा, महाकाल, गरूड, चंद्र व सूर्य की प्रतिमाएँ भी रखी है। स्थानीय जनश्रुति है कि प्राचीन काल में सामत राजा टांगीनाथ की पत्नी को हरण करके लाया था, जिससे टांगीनाथ व सामंत राजा में भीषण युद्ध हुआ, जिसमें सामंत राजा युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए थे तथा उनकी रानियों ने समीपस्थ बावड़ी में प्राण त्याग दिये थे। वास्तव में शिव की जादू-भग्न प्रतिमा को ही सामंत राजा की प्रतिमा मानकर पूजते थे, उन्ही के नाम से यह स्थल सामंत सरना के नाम से प्रसिद्ध है। सामंत-सरना परिसर में प्रतिमाओं के आधार पर खनन कार्य करवाया गया था, जिससे अनेक भूसात मंदिर तथा कलाकृतियां अनावृत हुए हैं। उरांव टोला स्थित शिव मंदिर में लोक जीवन तथा जीव जन्तुओं को शिल्पियों ने रूपायित करने में अद्भूत भाव प्रवीणता का परिचय दिया है। इस मंदिर में विवर से निकलते सर्प, युद्धरत मयूर तथा बाज़, दौड़ते हुए राजहंस तथा नायिकाओं के चित्रण से इस तथ्य की पुष्टि होती है। कर्णाभूषणों के प्रयोग में प्रमुख रूप से पोंगल एवं तरकी तथा बाली का प्रयोग किया गया है। एक ही नायिका को दोनों कान में अलग-अलग आभूषण धारण करते दिखाया गया है,

सामंत सरना का प्रमुख शिव मंदिर आकार से बड़ा तथा भव्य है । इस मंदिर का अधिष्ठान भाग सहित गर्भगृह मूल रूप से अवशिष्ठ है। इस मंदिर की द्वार शाखाओं पर मकर वाहिनी गंगा तथा कुर्म वहिनी यमुना का निवास है। प्रवेश द्वार के सिरदल पर गजाभिषेकित लक्ष्मी व दोनों कोण पर पशुधर शिव अंकित है व देहरी के बीचोंबीच कल्पवृक्ष तथा अगल-बगल शस्त्रों से सज्जित सैनिकों का अंकन है। गर्भगृह में चौकोर पीठ पर 7 फीट ऊंचा शिवलिंग प्रस्थापित है। मंदिरों के टीलों की सफाई में इस मंदिर से कार्तिकेय, विराट रूप विष्णु, भैरव, गणेश, महिषासुर मर्दिनी दुर्गा, कल्याण सुंदर शिव-गौरी, कुबेर, पृथ्वी उद्धार करते हुए वाराह, उमा- महेश्वर, विशालकाय ब्रम्हा आदि प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। यहां से प्राप्त प्रतिमाओं में उमा-महेश्वर की प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय है। यहां पर चौकोर गोल आर्घिकार पीढ़ में अत्यंत लघु आकार से लेकर 7 फीट ऊंचाई तक के अनेक शिवलिंग प्राप्त हुए हैं। लिंग पिढ़ों में मकर मुख प्रणालिकाएं भी बनी हुई हैं। एक शिवलिंग में 108 शिवलिंग बने हुए हैं। यहां से ब्रम्हा की एक विशिष्ट मूर्ति प्राप्त हुई है,जो दाढ़ी-मूंछ विहीन है। भारतीय कला में यह प्रतिमा अद्वितीय है। विश्व में यह ब्रह्माजी की पहली प्रतिमा है जो दाढ़ी-मूंछ विहीन है।

कुबेर की ललितासन में बैठी हुई प्रतिमा के एक हाथ में धान की थैली है तथा उनके पास निधि घट ढका हुआ रखा है। विष्णु के चतुर्भुज रूप के साथ-साथ प्रमुख अवतार वाराह एवं पृथ्वी की बीस भुजी विराट स्वरूप की प्रतिमा शास्त्रीय तथा मौलिकता की दृष्टि से अद्वितीय है । डीपाडीह की शिल्पकला में देवी प्रतिमा को भी प्रमुखता से रूपायित किया गया है। महिषासुर मर्दिनी, चामुण्डा, योगिनी, दुर्गा, गौरी, स्कन्दमाता, सप्तमातृका की कई प्रतिमायें कला की दृष्टि से उच्चकोटि की हैं। सौम्य सप्त मातृकाओं में हंस वाहिनी, ब्रम्हाणी, गरूड़ासीन वैष्णवी, मयूरासीन, कौमारी, गजारूढ़ा, इंद्राणी आदि को वात्सल्यमय रूप में शिशु के साथ स्निग्ध प्रवाह स्पन्दित है। इन्हीं के निकट वींणाधर शिव तथा गणेश को भी रूपायित किया गया है।

नदी देवियों के रूप में नारी का मर्यादित शील, सौंदर्य तथा लावण्य कण-कण में प्रस्फुटित है। नदी देवियों के विभिन्न केश विन्यास, कर्णभूषण तथा वस्त्र विन्यास में सौन्दर्य और शील का संगम है।

शिल्पियों ने आध्यात्मिक चिंतन के साथ-साथ लौकिकता को भी कला में स्वच्छता सहित सूक्ष्म ढंग से रूप मंडित किया है। डीपाडीह की शिल्प कला में अप्सराओं, सुर-सुंदरियों तथा यौवनाती नायिकाओं को अनेक भाव-भंगिमाओं में प्रदर्शित किया है। नृत्य तथा संगीत के दृश्य में वीर नायक के द्वारा अपनी प्रेयसी के पैर में चुभे हुए कांटे को बाण के फलक से निकालते हुए चित्रित किया गया है। डीपाडीह की मूर्तिकला में अध्यात्मिक तत्व तथा लौकिक परिवेश को संतुलित ढंग से प्रदर्शित करने के प्रयास में शिल्पियों का प्रयास स्तुत्य हैं।

धार्मिक प्रतिमाओं में शिव, विष्णु तथा शक्ति प्रतिमाओं से संबंधित प्रमुख देव-देवियों को रूपायित किया गया है। इनमें शैव धर्म की कलाकृतियों की संख्या सर्वाधिक है। उमा-महेश्वर, नटराज, परशुधर, वीणा शंकर, भैरव, वीरभद्र, अर्द्ध-नारीश्वर की एक प्रतिमा में शिव तथा पार्वती के संयुक्त रूप की चतुर्भुजी प्रतिमा अत्यंत भव्य तथा कलात्मक है। शिव के मस्तक पर चन्द्र त्रिनेत्र तथा पार्वती के शिरोभाग को अलकावली केश विन्यास एवं रत्न मुकुट से अलंकृत दिखाया गया है। शाक्त प्रतिमाओं में विष्णु, वाराह तथा सूर्य की प्रतिमाएं अधिक हैं। डीपाडीह के स्मारकों के लिए समीप स्थित चईता पहाड़ से स्थापत्य खण्ड काटकर मंदिर निर्माण हेतु प्रयोग किया गया है।

मनोज कुमार, चरोदा

पर्यटकों को आकर्षित करता - गंगरेल बांध

छत्तीसगढ़ के क्षैतिज धरातल पर धमतरी जिला, पर्यटन के दृष्टिकोण से काफी महत्व रखता है। यहां महानदी पर निर्मित गंगरेल बांध के अलावा मॉढ़म सिल्ली, दुधावा और सोंढूर जलाशय को देखकर पर्यटक आनंदित हो उठते हैं। यहाँ वर्ष भर पर्यटकों का आना-जाना लगा रहता है यहां बरसात के मौसम का आनंद लेने दूर-दूर से लोग पहुंचते हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य में अनेक नदियाँ पूज्यनीय मानी जाती है। इन नदियों में महानदी का अपना एक अलग स्थान है। हमारे प्रदेश के धमतरी जिले में महानदी का उद्गम स्थान है। जहां एक ओर तीन बांध महानदी के पानी को सुरक्षित भी करतें हैं वही दूसरी ओर जलाशय का जल भी धमतरी जिले में ही है। पूरे भारत में ऐसा शायद ही होगा कि एक जिले में चार बांध और सभी पर्यटन के लिए बेहतरीन स्थल हों। आईये जानें इन स्थलों के बारे में :-

गंगरेल :- राजधानी रायपुर से 70 कि.मी. दक्षिण-पूर्व की ओर धमतरी शहर से मात्र 10 कि.मी. दूरी पर स्थित गंगरेल बांध में महानदी का विशाल जल यहां भव्यता दर्शाता है। जर्मनी की एजलेस्टेम कंपनी की मशीनरी से सन् 1978 में इस बांध का निर्माण किया गया। बांध की ऊंचाई 47 मीटर है। गंगरेल में 10 किलो वाट का विद्युत उत्पादन केन्द्र हैं। पर्यटन क्षेत्र घोषित गंगरेल में विश्राम गृह, खूबसूरत बगीचे, लग्जरी कॉटेज की सुविधाएं हैं। यहां नौकायन का आनंद और प्रकृति का खूबसूरत नजारा मन को मंत्रमुग्ध कर देता है। बांध के तट पर अंगारमोती मंदिर है, जहां मेला भरता है। नवरात्रि में दीप प्रज्जवलित होते हैं। समीप में अंगार इको एडवेंचर कैम्प हैं, यहां ऑटो से आसानी से पहुंचा जा सकता है गंगरेल से लगभग 5 कि.मी. पहले रूद्री बैराज है जहां रूद्रेश्वर महादेव का प्राचीन मंदिर है। माघ पूर्णिमा में यहां विशाल मेला भरता है। बांध के सभी गेट कभी-कभी खुलते है। कुल मिलाकर गंगरेल बांध को देश का उत्तम पर्यटन स्थल माना जा सकता है।

मॉढ़म-सिल्ली :- जिला मुख्यालय धमतरी से लगभग 27 कि.मी. नगरी मार्ग पर स्थित यह साइफन पद्धति का विलक्षण बांध है। ग्राम बनरौद से दाई ओर भेथापारा, मुरूम सिल्ली गांव से मॉढ़म सिल्ली जलाशय पहुंचते हैं। महानदी का जल यहां संग्रहित होता है। बनरौद में लोक निर्माण विभाग का विश्राम गृह है, जिसे पर्यटन विश्राम गृह के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है क्योंकि यहाँ से बांई ओर सोंढूर बांध के लिए रास्ता है। इस रास्ते पर चिकनी सड़को के साथ वनों से आच्छादित दृश्य में शुद्ध हवाएं शरीर में ताजगी ला देती है। रास्ते में किनारे लगे लोहे में रेडियम रात में भी मशाल जैसा प्रतीत होता है। बांध के बीच एक टापू बना हुआ है। मॉढम सिल्ली में सुंदर विश्राम गृह, मनोरम उद्यान, झरने, सुंदर पहाड़, मछुआरों की नौकाएं पर्यटन के लिए श्रेष्ठ नजारा है।

दुधावा बांध :- मॉढ़म सिल्ली से मात्र 30 कि.मी. दूर नरहरपुर से सरोना होते हुए दुधावा बांध पहुंचा जाता है। दुधावा का सफर सरल व आनंदित होता है। यह बांध कांकेर जिले को छूता है। यहाँ कर्क ऋषि का तपोस्थल रहा है। बांध के मध्य में प्राचीन शिव मंदिर था, मंदिर के डूबने के कारण इस मंदिर के शिवलिंग को देवखूंट ग्राम में लाया गया है। बांध का सुरम्य दृश्य बेहद लुभावना है। छोटी पहाड़ी में विश्राम गृह एक ओर तथा दूसरी ओर शिव मंदिर, सुंदर पहाड़, मछुआरों की नौका, गांवों का दृश्य अति सुंदर है।

सोंढूर जलाशय :- वैसे तो धमतरी बनरौद से नगरी नगर पंचायत सांकरा होते हुए सोंढूर पहुंचा जा सकता है या फिर दुधावा बांध के भ्रमण के बाद बिरगुड़ी सिहावा होते हुए भी सोंढूर पहुंच सकते हैं, यहां पर सोंढूर व लिलांज नदी बहती है। 1988 में बने इस बांध के विस्तार के लिए विभिन्न परियोजनाएं लागू की गई है। यहां स्थानीय टैक्सी से पहुंचा जा सकता है। छत्तीसगढ़ के 41 जलाशयों में प्रमुख 4 जलाशय धमतरी जिले में होने का गौरव इसे प्राप्त है जिससे देश के पर्यटन मानचित्र में यह प्रमुख स्थान ले सकता है।

कान्हा कौशिक, धमतरी

मल्हार-एक ऐतिहासिक धरोहर

मल्हार छत्तीसगढ़ के पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों में से एक है । मल्हार में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर आधुनिक काल तक का हेबीटेशन साईट दृष्टिगोचर होता है ।मल्हार ताम्रपाषाण कालीन युग से मध्यकाल तक का इतिहास लिये मौन खड़ा है । यहां पुरातात्विक उत्खनन के दौरान ईसा की दूसरी शती की ब्राह्मी लिपि में आलेखित एक मृण मुद्रा प्राप्त हुई है । जिस पर गामस कोसलीया (कोसल ग्राम) लिखा है । मल्हार से मात्र १६ कि.मी. दूर स्थित कोसला गॉव की प्राचीनता इन्हे मौर्यों के समयुगीन ले जाती है. वहां कुषाण शासक विमकेड़फाइसिस का एक सिक्का मिला हैं ।

मल्हार में (ई.पू.-३२५ से ई.पू.-३०० तक) ई.-३०० से ई.-६५० तक सातवाहन वंश, शरभपुरीय वंश, कलचुरि वंश तथा मराठों का शासन रहा है । जिनके शासनकाल में अनेकों ऐतिहासिक पुरातात्विक स्थान निर्मित किये गये हैं । मल्हार चतुर्भुज विष्णु की एक अद्वितीय प्रतिमा के कारण प्रसिद्ध है जिसका निर्माण काल ई.पू.-२०० है ।

सातवाहन वंश :- सातवाहन शासकों की शासकीय मुद्रा मल्हार उत्खनन में प्राप्त हुई है । बालपुर ग्राम से सातवाहन शासक अपीलक का सिक्का प्राप्त हुआ था । वेदिश्री के नाम की मृण मुद्रा मल्हार में प्राप्त हुई है । सातवाहन कालीन अनेकों अभिलेख गुंजी, किरारी, मल्हार, सेमरसत, दुर्ग मल्हार से प्राप्त हुए है । कुषाण शासकों के प्राप्त सिक्कों में विमकेडफाइसिस तथा कनिष्क प्रथम के सिक्के उल्लेखनीय है । यौधयों के भी कुछ सिक्के क्षेत्र में उपलब्ध हुए हैं । सुनियोजित नगर निर्माण का प्रारम्भ इसी काल में माना जाता है । ईंट से बने भवन एवं ठप्पांकित मृदभांड यहां मिले हैं ।

शरभपुरीय एवं सोमवंशी राजवंश :- शरभपुरीय तथा सोमवंशी इन दोनों वंशो का राज्यकाल लगभग ६२५ से ६५५ ई. के बीच माना जाता है, इसे छत्तीसगढ़ के इतिहास का स्वर्ण युग कहा जा सकता है । धार्मिक एवं ललित कलाओं के क्षेत्र में यहां उल्लेखनीय उन्नति हुई । शरभपुरीय राजवंश में ललितकला के पाँच मुख्य केन्द्र मल्हार, ताला, खरोद, सिरपुर तथा राजिम थे ।

कलचुरि वंश :- कोकल्लदेव द्वितीय के १८ पुत्रों में से एक कलिंगराज ने तत्कालीन सोमवंशी नरेश को पराजित कर कोसल क्षेत्र पर अधिकार कर लिया । तुम्माण को अपनी राजधानी बनाने के पश्चात कलचुरि वंश का शासन क्रमशः कमलराज, रत्नराज प्रथम, तथा पृथ्वीदेव प्रथम ने शासन किया । प्रथम शासन का श्रेय जाजल्यदेव प्रथम के समय में स्थापित हुआ । पृथ्वीदेव के पुत्र जाजल्यदेव द्वितीय के समय सोमराज नामक ब्राह्मण ने मल्हार में प्रसिद्ध केदारेश्वर मंदिर का निर्माण कराया जो अब पातालेश्वर मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है ।

मराठा शासन :- कलचुरि वंश का अंत रघुनाथ सिंह के साथ हो गया । रघुजी भोंसले के सेनापति भास्कर पंत ने रतनपुर पर विजय प्राप्त की इस प्रकार सात शताब्दियों से चला आ रहा हैह्यवंशी कलचुरियों का अंत हो गया ।

उत्तर भारत से दक्षिण पूर्व की ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित होने के कारण मल्हार का महत्व बढ़ा. शैव, वैष्णव तथा जैन धर्मावलंबियों के मंदिरों, मठों, मूर्तियों का निर्माण हुआ. मौर्यकालीन ब्राह्मीलिपि में अंकित लेख वाली चतुर्भुज विष्णुजी की अद्वितीय प्रतिमा मल्हार का विशेष आकर्षण है. यहां ५ ईस्वी से ७ ई. तक निर्मित शिव, कार्तिकेय, गणेश, स्कंधमाता, अर्धनारीश्वर आदि की उल्लेखनीय मूर्तियॉ यहां प्राप्त हुई है. एक शिलापट्ट पर कच्छप जातक कथा अंकित है. शिलापट्ट पर सुखे तालाब से उडकर जलाशय की ओर जाते हुए दो हंस बने हैं. दूसरी कथा उलुक जातक की है, जिसमें उल्लू को पक्षियों का राजा बनाने के लिये सिंहासन पर बैठाया गया है. मल्हार की मूर्तिकला में उत्तर गुप्तयुगीन विशेषताएँ स्पष्ट परिलक्षित हैं । मल्हार में बौद्ध स्मारकों एवं प्रतिमाओं का निर्माण इस काल की विशेषता है । बुद्ध, बोधीसत्व, तारा, मंजुश्री, हेवज्र आदि अनेक बौद्ध देवों की प्रतिमाएँ मल्हार में मिली है । उत्खनन में बौद्ध देवता हेवज्र का मंदिर मिला है, ई.६ के पश्चात् यहां तांत्रिक बौद्ध धर्म का विकास हुआ । जैन तीर्थकारों, यक्ष-यक्षिणियॉ, विशेषत : अंबिका की प्रतिमा भी यहां मिली है । १० वीं से १३ वीं शताब्दी में शिव के अनेकों मंदिरों का निर्माण हुआ जिसमें केदारेश्वर मंदिर प्रमुख है । मल्हार पुरातात्विक दृष्टिकोण तथा धार्मिक आस्था दोनों ही रूप में दर्शनीय है ।

रश्मि पुरोहित, भिलाई नगर

ताला-मूर्ति कला का अद्भूत स्थल

छत्तीसगढ़ के महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों में से एक ताला न सिर्फ ऐतिहासिक वरन् धार्मिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है. शैव उपासकों की महत्वपूर्ण स्थली के रूप में भी जाना जाता है । सन् १८७३-७४ में तत्कालीन कमिशनर फिशर जे०डी० बेलगर ने भारतीय पुरातत्व के प्रथम महानिदेशक एलेक्जेन्डर कनिंघम के सहयोगी को ताला गाँव की सूचना दी । एक विदेशी महिला जोलियम विलियम्स ने अपने सर्वेक्षण में इसे गुप्तकाल का मंदिर बताया. पुरातत्ववेत्ताओं ने ताला गाँव के काल का निर्धारण ६ वीं-७ वीं शताब्दी के आस-पास निर्धारित किया है । ऐतिहासिक नगर मल्हार से मात्र १८ कि.मी. की दूरी पर बसा ताला स्थापत्य व मूर्तिकला का अत्यंत समृद्ध स्थल रहा होगा, ऐसा प्रतीत होता है । मूर्तियों की शैली और प्राप्त अवशेषों से ज्ञात होता है कि, यह स्थान शैव उपासकों की धर्मस्थली रही होगी, वर्तमान में भी "ऊँ नमः शिवाय" और"ऊँ त्रयम्बकं यजामहेसुगंधिम पुष्टीवर्धनम्मामृतात्" की ध्वनि ताला की फिज़ाओं में गूंजती रहती है । शिवजी के अनेकों विधानों को शिवभक्त सम्पन्न करते आ रहें हैं । निषाद समाज द्वारा निर्मित राम-जानकी मंदिर एवं स्वामी पूर्णानन्द महाराज की कुटिया तथा गौशाला शोभायमान है ।

ताला का विश्व प्रसिद्ध शैव साम्प्रदायिक देवरानी-जेठानी मंदिर कलात्मक रूप में उपस्थित है । देवरानी-जेठानी मंदिर विशिष्ट तल विन्यास विलक्षण प्रतिमा निरूपण तथा मौलिक अलंकरण की दृष्टि से भारतीय कला में विशिष्ट स्थान रखता है । मंदिर के तल विन्यास में आरंभिक चन्द्रशिला और सीढ़ियों के बाद अर्द्धमण्डप, अन्तराल और गर्भगृह तीन मुख्य भाग है । शिव के यक्षगण एवं भारवाहक गणों की सुन्दर आकृतियाँ दर्शनीय है जो जेठानी मंदिर की सीढ़ियों पर भग्न अवस्था में है । उसके उत्तरी पार्श्व में दोनों किनारों में विशालकाय हाथी बैठी हुई मुद्रा में है । दक्षिण की ओर मुख्य प्रवेश द्वार के अलावा पूर्व और पश्चिम दिशा में भी द्वार है । कमनीयता अंकन लिये मुख्य प्रवेश द्वार में पत्थरों के कलात्मक स्तंभ है । सन् १९८७-८८ में देवरानी मंदिर परिसर में उत्खनन के दौरान एक अद्भुत प्रतिमा प्राप्त हुई जो भारतीय शिल्प कला में अद्वितीय है, शिव के रूद्र अथवा अघोर रूप से सामन्जस्य होने के कारण इसका रूद्र शिव के रूप में उच्चारण किया गया । ताला की एक मात्र परिपूर्ण प्रतिमा को स्मारक स्थल पर सुरक्षित रखा गया है. यह प्रतिमा २.५४ मीटर ऊंची तथा १ मीटर चौड़ी है । विभिन्न जीव-जन्तु की मुखाकृति से इसके अंग-प्रत्यंग निर्मित है ।

प्रतिमा समपाद स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित है, इसका रूपांकन कृकलास (गिरगिट), मछली, केकड़ा, मयूर, कच्छप, सिंह आदि जीव-जन्तु तथा मानव मुखों की मौलिक प्रकल्पनायुक्त रूपाकृति अत्यंत ओजस्वी है । इसके शिरोभाग पर मंडलाकार चक्रों में लिपटे हुये दो नाग क्षेत्रिजीय क्रम में पगड़ी के सदृश्य दृष्टव्य है । नीचे की ओर मुख किये हुए गिरगिट के पृष्ठ भाग से नासिका, अग्रपाद से नासिका रंध्र, सिर से नासाग्र तथा पिछले पैरों से भौहें निर्मित हैं । बड़े आकार के मेंढ़क के विस्तारित मुख से नेत्र गोलक बने है । छोटे आकार के प्रोष्ठी, मत्स्य से मूछे तथा निचला ओष्ठ निर्मित हैं. बैठे हुए मयूर से कान रूपांकित हैं ।

कंधा मकर मुख में निर्मित है । भुजाएं हाथी के सुंड के सदृश्य हैं तथा हाथों की अंगुलियां सर्प मुखों से निर्मित हैं. वक्ष के दोनों स्तन तथा उदर भाग पर मानव मुख दृष्टव्य है. । कच्छप के पृष्ठ से कटिभाग, मुख से शिश्न और उसके जुड़े हुए दोनों पैरों से अंडकोष निर्मित है । अंडकोष पर घंटी के सदृश्य जोंक लटके हुये हैं । दोनों जंघाओं पर हाथ जोड़े विद्याधर तथा कटि पार्श्व में दोनों ओर एक-एक गंधर्व की मुखाकृति है । दोनों घुटनों पर सिंह मुख अंकित हैं । स्थूल पैर हाथी के अगले पैर के सदृश्य है । प्रमुख प्रतिमा के दोनों कंधों के ऊपर दो महानाग पार्श्व रक्षक के सदृश्य फन फैलाये हुये स्थित हैं । पैरों के समीप उभय पार्श्व में गर्दन उठाकर फन फाडे हुए नाग अनुचर दृष्टव्य हैं । प्रतिमा के दांये हाथ में स्थूल दण्ड का खंड़ित भाग बच रहा है । उनके हार वक्ष-बंध, कंकण तथा कटिबंध नाग तथा अधिष्ठान भाग भग्न है । सामान्य रूप से इस प्रतिमा में शैव मत, तंत्र तथा योग के गुह्य सिद्धान्तों का प्रभाव और समन्वय दिखलाई पड़ता है । उत्खनन से प्राप्त अन्य मूर्तियों में चतुर्भुज कार्तिकेय की मयूरासन प्रतिमा है जो शौर्य और उत्साह से प्रकाशित है । द्विमुखी गणेश की प्रतिमा अपने दांत को बायें हाथ में लिये हुए चंद्रमा की ओर प्रक्षेपण के लिये उद्यत मुद्रा में हैं । अर्धनारीश्वर, उमा-महेश्वर, नागपुरूष, यक्ष, मूर्तियों में अनेक पौराणिक कथानक झलकतें है । शाल भंजिका की भग्न मूर्ति में शरीर सौष्ठव और कलात्मक सौंदर्य का संतुलित प्रयोग है । ताला न सिर्फ ऐतिहासिक पुरातात्विक दुष्टिकोण से वरन् धार्मिक शैव सम्प्रदाय की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थल के रूप में अपनी पहचान रखता है ।

नीता देशमुख, भिलाई नगर

पाली का शिव मंदिर - कलात्मक सौंदर्य का ऐतिहासिक स्थल

बिलासपुर से रतनपुर कटघोरा मार्ग पर लगभग ४० कि.मी. पर प्राचीन ऐतिहासिक स्थल पाली है । यहाँ छत्तीसगढ़ का बहुत प्राचीन शिव मंदिर है । इसका स्थापत्य एवं कलात्मक सौंदर्य छत्तीसगढ़ में अद्वितीय है । बाण वंश के शासक विक्रमादित्य प्रथम ने पाली के इस मंदिर का निर्माण करवाया था । बाद में इस मंदिर की सुरक्षा के दृष्टिकोण से कुछ सुधार और निर्माण कार्य दक्षिण कोसल में कलचुरी शासक जाजल्लदेव ने करवाया यह निर्माण गुंबद को सहारा देने हेतु किया गया था । इस जीर्णोद्धार का प्रमाण है कि मंदिर में कई स्थानों पर "श्रीमज्जाजल्लदेव कीर्तिरियम" खुदा हुआ है ।

मंदिर ऊँची जगती पर बनाया गया है. यह पूर्वाभिमुख है इसकी योजना सप्तरथ प्रकार की है । जंघा भाग में अंदर देव प्रतिमायें, नायिकायें एवं मिथुन मूर्तियाँ हैं । शिखर के प्रारंभ स्थान पर भारवाहक बनाये गये हैं, जिनके ऊपरी हिस्सों में सुंदर अलंकरण है ।

मंदिर के द्वारशाख में भी सुंदर अलंकरण हैं द्वार के दाहिनी ओर नदी देवी गंगा अपने वाहन मकर के साथ हैं जिनके हाथों में घट एवं सनाल कमल बनाये गये हैं तथा बांयीं ओर यमुना अपने परंपरागत वाहन कच्छप पर हैं । द्वार शाख पर दाहिनी तरफ गणेश प्रतिमा एवं पार्वती पट्टी पर हैं । सबसे ऊपर नंदी पर बैठे हुए शिव अंकित किये गये हैं । बांयीं ओर अर्ध पर्यंक मुद्रा में पार्वती एवं नृत्य करते हुये गणेश एवं कार्तिकेय बनाये गये हैं । द्वार शाख की एक शाखा में मकर मुख से लतावल्लरियाँ निकलती बनाई गई हैं । जिनके बीच-बीच के स्थानों में मिथुन आकृतियाँ एवं अन्य प्रतिमाएँ अंकित की गई है । एक तरफ शिव-पार्वती की आलिंगन प्रतिमा हैं जिसमें शिव त्रिशूल धारण किये हुए हैं । उनका एक हाथ खंडित हैं . पार्वती शिव की जंघा पर बैठी हुई दिखाई गई हैं. शिव पार्वती की ठोड़ी छू रहें हैं तथा पार्वती जी बड़ी मोहक मुद्रा में शिव को निहार रहीं हैं । गर्भगृह के सामने स्तंभ हैं जो बाद के काल के प्रतीत होते हैं जो शायद सुरक्षा हेतु बनाये गये लगते हैं ।

मिथुन मूर्तियाँ :- पाली के इस शिव मंदिर में मिथुन मूर्तियाँ भी बनाई गई हैं । इनमें भी शिल्प कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं सौंदर्य शिल्पकारों नें प्रदर्शित किया हैं ।

व्याल प्रतिमा :- इस शिव मंदिर में व्याल प्रतिमा भी बनाई गई है ये प्रतिमाएँ बाह्य भित्तियों के अंदर के भाग में बनाई गई हैं । व्याल प्रतिमाएँ वे होती हैं जिनमें शरीर तो सिंह का बना होता है और मुंह के स्थान पर शिल्पकार अपनी कल्पना से किसी भी पशु या पक्षी या मानव का मुँह बना देता है ।

अन्य प्रतिमायें :- पाली के इस शिव मंदिर के द्वार मंडप के पास गजलक्ष्मी की प्रतिमा है जो पद्मासन मुद्रा में दोहरे कमल के आसन पर बैठी है । ऊपर एक गज प्रतिमा है जो देवी का अभिषेक करती प्रदर्शित है । मंडप द्वार के पास ही एक अन्य देवी प्रतिमा सरस्वती की है यह भी पद्मासन मुद्रा में है एवं हाथों में परंपरागत अलंकरण है पुस्तक भी हाथ में है । गर्भगृह के पश्चिम की दिशा में सूर्य देव की प्रतिमा है इसमें सूर्यदेव चार अश्वों के रथ पर हैं । इसमें सुंदर अलंकरण है यहाँ सारथी अरूण भी दिखाये गये हैं । इसी स्थान पर दक्षिण भित्ति में अपने वाहन मयूर के साथ कार्तिकेय की प्रतिमा बनाई गई है । इसकी छः भुजाऐं हैं इनके एक तरफ के हाथ खंड़ित और दूसरी ओर के सुरक्षित हैं । इस मंदिर में चामुंडा देवी की भी प्रतिमा है किन्तु खंड़ित है । देवी की प्रतिमा के अंकन में भयावहता बताई गई है । वैसे इस देवी की उपासना का विशेष महत्व तंत्र साधना में है अतः संभवतः इस मंदिर में ऐसी उपासना होती रही हो या कुछ लोग साधना करते हों । यहाँ एक छः भुजी शिव की अन्य प्रतिमा गर्भगृह की दक्षिण भित्ति में है जो दैत्य का वध करने वाले शिव के रूप का प्रदर्शन करती है. शिव की एक अन्य प्रतिमा नृत्य मुद्रा में है ।

हरिहर प्रतिमा :- यहाँ एक सुंदर प्रतिमा हरिहर की है हरि अर्थात् विष्णु और दूसरे भाग में देवता हर अर्थात् शिव का अंकन होता है । ऐसी ही प्रतिमा यहाँ है जिसकी पहचान दोनों देवताओं के स्पष्ट अंकन में है । विष्णु रूप के हाथों में गदा एवं शंख बनाये गये है तो शिव रूप के भाग में त्रिशुल और अक्षमाला प्रदर्शित है । यह प्रतिमा शिल्प सौंदर्य की अनुपम कृति है तथा दक्षिण कोसल के उत्कृष्ट शिल्प सौंदर्य का प्रमाण भी हैं ।

छत्तीसगढ़ के इस प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थल के इस अति प्राचीन शिव मंदिर में बहुत से देवी-देवताओं की सुंदर कलात्मक प्रतिमाएँ हैं जो अपने समय की उत्कृष्ट कला का बोध कराती है ।

डॉ. रामगोपाल शर्मा, बिलासपुर

विश्व का सबसे बड़ा शिवलिंग - उँचाई 70 फिट, मोटाई 220 फिट

धार्मिक, पौराणिक और प्राकृतिक सौंदर्य को अपने आंचल में समेटे देश के ३६वें राज्य के रूप में उदित छत्तीसगढ़ के कण-कण में देवी-देवता विराजमान होकर आशीर्वाद प्रदान कर रहें हैं । शस्य-श्यामला माटी की सौंधी-सौंधी महक पूरी दुनिया में फैली हुई हैं । प्राचीन धरोहर स्मारक, उत्कीर्ण कलाकृतियां आज भी इतिहासकारों व पुरातत्वविदों के मन में कौतूहल उत्पन्न कर देती है । चाहे वह प्रयागराज राजिम, सिरपुर, आरंग, भोरमदेव, मल्हार, खरौद, शिवरीनारायण, दंतेवाड़ा, बारसुर, पाली के मंदिरों में उकेरी गई मूर्तिकला का श्रेष्ठ उदाहरण हो या रामायण, महाभारत कालीन पौराणिक गाथाएं. पर्व, त्यौहार में लोकगीत एवं लोकनृत्य के माध्यम से जन-जन के पटल पर परम्पराओं के अनुरूप सांस्कृतिक पहचान बनाये इन्द्रधनुषी रंग बिखेर रही हैं । औद्योगिकतथा भौगोलिक दृष्टि से भी यह अंचल बघेल खण्ड के पठार, मेखला, रामगिरी, सिहावा जैसे विशाल पर्वत मालाओं से घिरा सुरम्य सघन वनों से आच्छादित है । नदियों की कलकित धारा, खनिज सम्पदाओं के भरपूर भंड़ार छाती को चौड़ी कर देती है । जहां इतनी सारी खूबियां गौरवमंडित हो, उन हसीन वादियों की झलक पाना भला कौन नहीं चाहेगा ।

मित्रों के साथ मोटर सायकल से वनांचल वादियों की सैर करनें राजधानी रायपुर के बाद राजिम से जैसे ही निकले, पाण्डुका से बांयी ओर १५ कि.मी. दूर तौरेंगा बांध की लहरें हमें भा गई और हम एकटक उसे देखते ही रहे । फिर कोसमपानी से जतमई डोंगरी में विराजमान आदि शक्ति माँ जतमई देवी के दर्शन को बढ़े । चढ़ते-चढ़ते टेढ़े-मेढ़े मोड़ से पेड़-पौधे, खाई, ऊंची डोंगरी की सुन्दरता अमरकंटक पहाड़ सी परिलक्षित हो रही थी । देवी मॉ के चरणों में श्रीफल चढ़ा, पूजा-अर्चना किये और २०० गज की दूरी पर स्थित सिंह गुफा को देखने संकरे रास्ते से गए । मंदिर ट्रस्ट के सदस्य ने बताया कि शेर कभी-कभी गुफा में आता है, माता जी को प्रणाम कर अन्यत्र चला जाता है ।

पुनः राजमार्ग में आकर गरियाबंद रोड से आगे प्रस्थान किये. सड़क के ऊपर निर्मित मंदिर में कचना-घुरवा माता को प्रणाम कर बांस पेड़ गांव के पास से चिंगरा पगार का आनंद लेने ३ कि.मी. पैदल जंगल में चलते रहे । चट्टान पार कर समीप पहुंचे तो करीब १०० फीट ऊंची डोंगरी से नीचे गिरते झरने ने मन मोह लिया । फौव्वारे से शरीर में ताजगी आ गई । चित्र उतारने के लिए कैमरे की कमी खलती रही. मालगांवपुर से २ कि.मी. पूर्व सोंढूर और पैरी नदी के संगम को देखने क्षण भर रूके. सावन की रिमझिम बरसात के बीच ठंड अपने आगोश में लेने ही वाली थी कि गरियाबंद आ धमके । ठंडकता भगाने के लिए गरम चाय की चुस्की ली । गांधी मैदान से होते हुए राजाधानी रायपुर से ९३ कि.मी. दूर विश्व के सबसे बड़े शिवलिंग के दर्शन के वास्ते वनों व पहाडियों से घिरे पारागांव के आगे ग्राम-मरौद की पावन धरती को वंदन कर कदम रखे । सड़क किनारे पंचवटी के मध्य ७० फीट ऊंची और १०० मीटर गोलाकार आकृति में शिवलिंग सुशोभित हो रहे हैं । इसे दक्षिणमुखी भूतेश्वर "भकुर्रा"महादेव के उच्चारणसे अलंकृत किया जाता है । पास ही चबूतरा आकारमें जलहरि देवी"माता पार्वती"बैठी हुई है । १०० गज के अन्तराल में नंदी महाराज पालथी मारे बैठे हुए हैं । सामने छोटी सी गुफा नजर आ रही है, उसे अर्ध-नागेश्वर के नाम से जाना जाता है । पुजारी कहतें हैं कि सर्प कभी-कभी इस स्थान पर महिनों तक निवास करते हैं पर किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते हैं । इससे लोगों का विश्वास अटूट होता गया और लगातार दर्शनार्थियों की भीड़ बढ़ती जा रही है, जो मनोकामना पूर्ण होने का साक्ष्य है । प्रत्यक्षश्रुत्वाओं का मानना है कि शेर की दहाड़, गड़गड़ी बजना, रात में घंटी की आवाज व देवउठनी त्यौहार के दिन नंदी जी की हुंकार स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ती है, जो कौतुहल मचा देती है । एकाएक यकीन नहीं होता कि सचमुच यह शिवलिंग है या कोई टीलानुमा चट्टान है. परन्तु गौर करने वाला तथ्य यह है कि प्रत्येक वर्ष कम से कम एक इंच ये बढ़ जाता है जो भू-वेत्ताओं के लिए खास बात हो सकती है, फिर भी इनके महत्व व हरकत ने इसे देव स्वरूप मानने को विवश कर दिया है । इस संबंध में अधिक जानकारी हेतु जन श्रुतियों का सहारा लिया जा सकता है ।

आज से सैकड़ों साल पूर्व शोभ सिंह नामक ज़मींदार हुआ करते थे । यहां उनकी खेती-बाड़ी थी । उसे प्रतिदिन गोधुली बेला में एक विशेष आकृतिनुमा टिले से सांड के हुंकारने की ध्वनी सुनाई देती थी । कई बार आवाज सुनने के बाद ज़मींदार ने इसका ज़िक्र ग्रामीणों से किया । गांव वालों ने इकट्ठे होकर हुंकार सुनी और आसपास उसे खोजने लगे, किन्तु कहीं भी कोई जानवर नहीं मिला । उसी समय से उस टीले को शिवलिंग का रूप मानकर बड़ी श्रद्धा से पूजन करने लगे और अब इसकी ख्याती दूर-दूर तक फैलने लगी है । इस शिवलिंग की महत्ता के बारे में सन् १९५९ से गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित पत्रिका की "कल्याण" के वार्षिक अंक के पृष्ठ सं.- ४०८ में विश्व का एक अनोखा, महान एवं विशाल शिवलिंग बताया गया है । भूतेश्वर महादेव का संबंध भगवान राजीवलोचन की नगरी राजिम में प्रवाहित त्रिवेणी संगम के बीच स्थित पंचमुखी कुलेश्वर महादेव से जोड़ा जाता है । इस रमणीय सुन्दर स्थान पर सावन मास तथा महाशिवरात्रि पर्व पर दर्शनार्थी श्रद्धा-सुमन अर्पित कर ईश्वर के प्रति आस्था प्रकट करते हैं ।

मनोज कुमार सोनी, दुर्ग

मदकू द्वीप - छत्तीसगढ़ में पेगोड़ा मंदिरो का एकमात्र स्थल

छत्तीसगढ़ पुरातत्व की दृष्टि से समृद्ध अंचल है । विद्वानों की राय में रायपुर की अपेक्षा बिलासपुर जिला पुरातात्विक धरोहरों का खजाना है। मल्हार, ताला, रतनपुर की चर्चा बहुत हुई, अब पुरातत्व का नया खजाना मदकू द्वीप में मिला है ।

रायपुर - बिलासपुर मार्ग पर 80 कि.मी. की दूरी पर बैतलपुर ग्राम है, यहां से दाहिनी ओर 4 कि.मी. दूरी पर मदकू द्वीप स्थित है। पहले यह टापू पर स्थित था, अब मार्ग निर्मित हो जाने पर यहां आसानी से बारहों महिने पहुंचा जा सकता है। शिवनाथ नदी के तट पर स्थित यह अंचल "हरिहर क्षेत्र" के रूप में विख्यात हो रहा है। यह मंडूक ऋषि की तपःस्थली होने के कारण सिद्ध क्षेत्र है।

मदकू द्वीप में उत्खनन, सर्वेक्षण व संवर्धन का कार्य पुरातत्व विभाग छत्तीसगढ़ की ओर से ख्याति प्राप्त पुरातत्व वेत्ता डॉ० अरूण कुमार शर्मा कर रहें हैं। किंवदन्तियाँ इतिहास के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाली होती है। लगभग 80 किंवदन्तियाँ सही साबित हुई है। मदकू द्वीप में पुरातन काल से शिवरात्रि व माघ पूर्णिमा को स्वतः स्फूर्त होकर लोग आते रहें हैं। अंचल की शैव क्षेत्र के रूप में ख्याति रही है। हरिहर क्षेत्र हिमालय की तलहटी में है, मगर छत्तीसगढ़ का यह हरिहर क्षेत्र ख्याति के मार्ग पर है। किंवदन्ति है कि मदकू द्वीप, मंडूक ऋषि का आश्रम स्थल था। ऋषियों के आश्रम के कारण छत्तीसगढ़ का तुरतुरिया, सिहावा भी प्रसिद्ध रहें हैं।

24 फरवरी 2011 से मंदिर क्षेत्र में उत्खनन का कार्य प्रारंभ हुआ जिसमें 18 मंदिर निकाले गए हैं, जो समय व शिवनाथ के प्रवाह में लुप्त हो गए थे। समतल जमीन से लगभग डेढ़ मीटर नीचे दबे ये मंदिर पेगोडा प्रकृति के मंदिर हैं। मंदिर पुराने है, इन्हें उसी स्थल पर व्यवस्थित किया गया है, लाल बलुआ पत्थर से इन मंदिरों का निर्माण कलचुरि शासक प्रतापमल्ल देव ने प्रारम्भ करवाया था। प्रतापमल्ल 1196 ई. को सिंहासनारूढ़ हुए थे। शिवनाथ नदी की बाढ़ से मंदिर को नुकसान हुआ था। बाढ़ से आई मिट्टी, परत दर परत जमती गई और मंदिर धरती में समा गया था, ऊपर से नीचे तक 5 विभिन्न काल के प्रमाण मिले है। नीचे के दो तल कलचुरि नरेश प्रतापमल्ल के काल की गवाही देते हैं। ताम्र सिक्का मिला है। कलचुरि संवत 947 अर्थात 1196 ई.का यह सिक्का प्रतापमल्ल के राज्यारोहण के समय जारी किया गया था। अभी तक 1200 ई. प्रतापमल्ल का राज्यारोहरण काल माना जाता था। इतिहास के इस करवट ने उसे 1196 ई. में गद्दी पर बताया, विद्वानों ने माना है।

14वीं शताब्दी तक शानदार मंदिर खड़े रहे फिर शिवनाथ नदी की बाढ़ ने इन्हें नष्ट करना प्रारंभ किया। इसी स्थल से गुप्त काल की सामग्री शिलालेख के रूप में प्राप्त हुई हैं, जो अंचल की पुरातन स्थिति का द्योतक है। नव पाषाण काल के पाषाण उपकरण भी मिले हैं। इस तरह पाषाण काल से कलचुरि काल तक के प्रमाण मिले हैं। ब्रिटिश कालीन सिक्के भी उत्खनन से प्राप्त हुए है इस तरह से प्रागेतिहासिक काल से आधुनिक काल तक के प्रमाण यहां से प्राप्त हुए हैं।दुर्गों की अलग-अलग श्रेणियां होती है। जहां तक मदकू का सवाल है, यह जलदुर्ग था। छत्तीसगढ़ में बहुत कम जलदुर्ग रहें हैं।

मंदिर क्र.-9 का गर्भगृह उत्खनन के चौथे दिन ही मिल गया। कुल 18 मंदिर क्रम से स्थापित हैं, मदकू द्वीप के बारे में विशेष बात यह है कि कलचुरि राजा प्रतापमल्ल के समय से द्वीप में बसना मना था। यह केवल धार्मिक स्थल, पावन स्थल के रूप में जाना जाता था, परन्तु बसाहट के लिए निशिद्ध स्थल था। शिवनाथ नदी का ईशान कोण वाहिनी धारा के पास मंदिर बनाया गया। मंदिर क्र. 6-8 में गरुड़ पर सवार लक्ष्मी-नारायण की युगल प्रतिमा है, उमा-महेश्वर की युगल मूर्ति भी है । सामान्य शिल्प परंपरा में युगल प्रतिमाओं में देवी के दो हाथ ही प्रदर्शित होते हैं मगर यहाँ चारो हाथ प्रदर्शित किए गए है।

उत्खनन से तीर का अग्रभाग, लौह डावेल (प्रस्तर खंडों को जोड़ने के काम में आने वाला) बड़ी संख्या में प्राप्त हुआ है। वेणु वादक कास्य की प्रतिमा भी मिली है। पेगोड़ा जो बने है उनमें कलश पत्थर के ही लगाये गए हैं। लाल बलुआ पत्थर से मदिर बनाए गए हैं। ललाट बीम जो मिले है, उनमें बीचों-बीच गणेश की प्रतिमा है। मंदिरों में बारीक चित्रकारी उल्लेखनीय है। गर्भगृह से योगी पीठ मिला उसे वहीं स्थापित किया गया है। पूर्व और पश्चिम दोनों ओर मुख वाले मंदिर हैं।

मदकू द्वीप में कलचुरि कालीन मंदिरों के उत्खनन व स्थापन से अंचल के इतिहास के कुछ बहुमूल्य पृष्ठ उजागर हुए हैं। आने वाले समय में मदकू की एक धार्मिक व पर्यटन-स्थल के रूप में स्थापना होगी इसमें दो राय नहीं है। सांप्रदायिक सद्भावना स्थापित करने में मदकू सहायक ही सिद्ध होगा।

डॉ. रामकुमार बेहार, रायपुर

चैतरपुर (लाफागढ़)

बिलासपुर से कटघोरा जाने वाली सड़क मार्ग पर पाली से उत्तर की ओर उन्नीस कि.मी. पर लाफा ग्राम है । यह कटघोरा तहसील में आता है ।यही प्राचीन किला है जो पहाड़ी पर बना हुआ है ।यह प्राचीन स्थल है जो चैतुरगढ़, चित्तौरगढ़, लाफागढ़ के नाम से जाना जाता है। कलचुरी शासकों ने पर्वत श्रेणियों में ऊँचाई पर एक सुरक्षित किला बनवाया, यही चैतुरगढ़ या लाफागढ का किला है ।इस किले के निर्माण का समय एवं निर्माता का नाम अभी तक अनुपलब्ध है किन्तु इस संबंध में वेंगलर ने अपनी सर्वे रिपोर्ट में इस किले को पृथ्वीदेव प्रथम के काल का मान्य किया है। यह एक विशाल किला है जहाँ प्रकृति ने पहाड़ी की सीधी चट्टानें बनाई हैं। दुर्ग निर्माताओं ने वहाँ दीवार बनाने की आवश्यकता महसूस नहीं की है । इसमें मुख्य तीन प्रवेश द्वार हैं :- उत्तर में मेनका द्वार, पूर्व की ओर हुंकरा द्वार, पश्चिम में सिंह द्वार और दक्षिण दिशा में कोई प्रवेश द्वार नहीं है ।

मेनका द्वार :- यह दोहरा बनाया गया है अर्थात् बाहरी द्वार एवं भीतरी द्वार तथा इन दोनों की दूरी तीन मीटर से कुछ अधिक है ये धनुषाकार हैं ।भीतरी द्वार ध्वस्त स्थित में है ।भीतरी द्वार के दोनों ओर बरामदा है जो सैनिक कक्ष के समान प्रतीत होता है ।बरामदे के स्तम्भों पर आधारित छत थी जिसमें आज कुछ ही स्तंभ शेष बचे है बाकी टूट गये हैं। दाहिनें बरामदे के एक आले में पद्मासन मुद्रा में बैठी हुई एक नारी प्रतिमा है यही मनका देवी, मेनका दाई या माया देवी के नाम से जानी जाती है जिसके नाम पर इस द्वार का नाम पड़ा है।

हुंकरा द्वार :- यह भी भीतरी, बाहरी दो द्वारों से बना है ।बाहरी दरवाजे से भीतरी दरवाजे तक लगभग बहत्तर सीढ़ियाँ है ।जिनके दोनों ओर की दीवार आज पूरी तरह टूटी हुई है ।दोनों दरवाजों के मध्य की दूरी लगभग पचास मीटर है ।इसका भीतरी द्वार इस गढ़ का प्रमुख प्रवेश द्वार था । इसका ऊपरी भाग नष्ट हो गया है यहाँ भी बरामदे हैं जिसकी दीवारों में आकृतियां बनी हुई हैं, जिनमें विभिन्न देवियों की प्रतिमायें है इनमें कई प्रतिमायें अब भग्न हो चुकी हैं।

सिंह द्वार :- किले की पश्चिम दिशा में यह मुख्य प्रवेश द्वार है ।इसे झंडी द्वार भी कहा जाता है ।यह भी दोहरे द्वार वाला है ।दोनों द्वार के बीच की दूरी लगभग पच्चीस मीटर है ।दरवाजे के अंदर की ओर पहरेदारों के लिये कमरे बने हुये हैं इन दरवाजों का आकार धनुष के समान है

मेनका द्वार से पूर्व की ओर कुछ दूरी पर एक गुफा है जिसे महादेव खोला के नाम से जाना जाता है । इस गुफा में कक्ष भी बनाये गये थे जो संख्या में तीन रहें होंगे । इस गुफा में प्रवेश करते ही चट्टानों को काटकर बनाया गया कक्ष मिलता है, इस कक्ष के दाहिनी तरफ एक संकरा रास्ता है जो गुफा के भीतर की तरफ जाता है । इसकी छत इतनी नीची है कि उसमें बैठकर जाना पड़ता है ।यह मार्ग एक अन्य कक्ष में खुलता है जो बहुत छोटा है इसी के बगल में एक तीसरा कक्ष है जो ऐसा लगता है कि वह कोई पूजा स्थल रहा होगा । इस गुफा में शिवलिंग स्थापित है जो गढ़ से भी पहले के काल का लगता है । यहाँ एक किवदंती है, जिसके अनुसार भस्मासुर इसी गुफा में भस्म हुआ था कहा जाता है । गुफा के पास से एक धारा भी बहती है जिसे जटाशंकरी धारा कहतें हैं इस कारण इसे जटाशंकरी गुफा भी कहा जाता है ।

चैतुरगढ़ की महामाया देवी (मंदिर एवं प्रतिमा) :- चैतुरगढ़ में महामाया का प्राचीन मंदिर है ।इस गढ़ क्षेत्र में प्राचीन धरोहर के रूप में लगभग पूरी तरह सुरक्षित यही एक मात्र मंदिर बचा है ।यह पूर्वाभिमुख एवं ग्यारहवीं सदी का माना गया है ।इस देवी प्रतिमा में बारह भुजायें है, जिनमें दाहिनी ओर के हाथों में आयुध स्पष्ट हैं नीचे की ओर देवी का वाहन सिंह महिषासुर पर आक्रमण रत प्रदर्शित है।

किले के सिंह द्वार के पास एक नृत्यरत गणेशजी की प्रतिमा है। यहाँ महिषमर्दिनी देवी की प्रतिमा तो है ही और भी देवी प्रतिमायें है हुंकरा द्वार के पास बरामदे के एक आले में वाराही देवी की छः भुजाओं वाली प्रतिमा ह।इस प्रतिमा में नारी सौंदर्य एवं आभूषण बड़े सुंदर एवं आकर्षक रूप में अंकित हैं । यहीं विष्णु की शक्ति वैष्णवी देवी की भी प्रतिमा हैं यह छः भुजाओं वाली है ।

श्रीमती भावना चॉदवानी, भिलाई

बहादुर कलारिन की शौर्यगाथा

रानी दुर्गावती, लक्ष्मीबाई और रज़िया सुल्तान भारत की ये वीरांगनाएं है, जिनके शौर्य और साहस की गाथा विश्व इतिहास में अमर हैं । छत्तीसगढ़ में बहादुर कलारिन की गाथा शौर्य और साहस का पाठ पढ़ाती हैं । आज विभिन्न मंचों के माध्यम से इस वीरांगना के साहस और त्याग की अभिव्यक्ति भी जनमानस में होने लगी हैं । नारी जाति पर हुए अत्याचार के लिए इस कलार जाति की महिला ने जिस साहस और त्याग का परिचय दिया था । उसका लेश मात्र भी आज की महिलाओं में होता तो पुरूषों में नारी के प्रति सम्मान की भावना अधिक होती । प्रस्तुत गाथा दुर्ग जिले के गुरूर से १२ कि.मी. दूर पश्चिम में स्थित "सोरर" गांव की है जिसका प्राचीन नाम"सरहरगढ़"था ।

एक बार रतनपुर का कलचुरी राजा शिकार करते सरहरगढ़ के बीहड़ जंगल में आया । कहा जाता है कि तब शिकार के लिये शिकारी अपने साथ एक बाज़ पक्षी रखा करता था और बाज़ की दिशा में शिकार तलाशते हुए राजा आगे बढ़ता था । जंगल इतना घना था कि राजा को बाज़ दिखाई नही दिया, एक तरह से वह दिशा-भ्रमित हो गया । सैनिक पीछे रह गये, सूर्यास्त का समय था, जंगल की घनी छाया के कारण अंधेरा गहराने लगा था, रास्ते भी लुप्तप्राय हो गये । जंगल में राजा को आश्रय की तलाश थी, तभी घने जंगल में कुछ दूरी पर टिमटिमाती हुई मशाल दिखाई दी । फिर राजा के थके-हारे पॉव उस दिशा में चल पड़े ।

घने जंगल के बीचो-बीच एक कुटिया थी । जहां कलारिन जाति की अति सुंदर युवती अपनी वृद्ध माँ के साथ निवास करती थी । युवती प्रतिदिन मचोली में बैठकर जिविकोपार्जन के लिये शराब बेचती थी । उन दोनों के भरण-पोषण का यही एकमात्र साधन था । गांव के बाहर खुले मैदानों में स्थित पत्थरों की नक्काशीदार विशाल मचोली अतीत के साक्ष्य के तौर पर आज भी विद्यमान है । कुटिया पहुंचकर राजा ने अपना परिचय दिया और अन्य साथियों से बिछड़ जाने की आपबीती सुनाई । रात्रि भर जगह देने के लिए उसने युवती से आग्रह किया जो परिस्थितिजन्य था, और उसे आश्रय मिल भी गया । राजा युवती के रूप और सौंदर्य को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया । हाड़-मांस का इंसानी जिस्म ना होकर वह संगमरमर की कलात्मक मूर्ती जो थी, राजा अपने होश-हवास खो बैठा और युवती को पाने की लालसा में उसने वृद्ध कलारिन के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा । गधर्व विवाह के साथ राजा और युवती दाम्पत्य सुख में बंध गए । सुबह राजा को राजपाट एवं परिवार की सुधि आई । राजपाट की मुश्किलें बताकर पुनः वापस आने का बहाना बनाकर राजा वहां से चला गया और वह फिर कभी सरहरगढ़ नहीं आया । समय बीतता गया, कुछ महिनों के पश्चात् युवती ने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया । उसका नाम राजा की याद में "छछानछाडू"रखा गया, जिसका शाब्दीक अर्थ है "बाज को छोड़दिया"। बाल्य काल से ही छछानछाडू अन्य बालकों से भिन्न था । जिज्ञासावश कभी-कभी वह सोचता कि उसका पिता कौन है ? कहाँ है ? लेकिन माँ से पुछने का साहस वह नहीं कर पाता था । धीरे-धीरे वह किशोर अवस्था की ओर बढ़ने लगा, पिता को लेकर मित्रों में उसकी खिल्ली उड़ाई जाती थी । इसी बात पर एक हम उम्र साथी से झगड़ा हो गया । छछान बहुत दुखी हुआ और ठान लिया कि घर जाकर माँ से सारी बात पुछ कर रहेगा । घर पहुंच कर उसने माँ के आगे प्रश्नों की बौछार कर दी । उसके तेवर देख विवश माँ ने सारी बातें सिलसिलेवार बता दी । माँ पर हुए अत्याचार को सुन छछान क्रोधाग्नी में जल उठा और अपने पिता से तथा समस्त राज परिवार से ही उसे घ्रणा होने लगी, प्रतिशोध की अग्नि में वह जल उठा । विद्रोही मन तरह-तरह की योजनाएं बनाता । बलीष्ठ और ताकतवर तो वो था ही, बुद्धि का भी तेज था । योजनाबद्ध तरीके से उसने हम उम्र युवकों की एक टोली बनाई । कलाबाजी और युद्ध कौशल के प्रशिक्षण द्वारा उसने एक सशक्त फौज भी तैयार कर ली । दिन-रात वह केवल एक ही बात सोचता था कि माँ पर हुए अत्याचार का बदला कैसे लिया जाए ? डॉ० बलदेव प्रसाद मिश्र ने छछानछाडू के इस स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है कि प्रकृति ने उसे पुरूषार्थ प्रदान किया वहीं परिस्थिति ने उसे उद्दण्ड भी बनाया । सुनियोजित ढंग से उसने अपनी फौज के साथ छत्तीसगढ एवं अन्य प्रांतों कि १४७ राजकुमारियों का अपहरण किया, उन्हें क्रूर यातनाएं दी । उसने १४७ ओखलियां बनाईं और राजकुमारियों को धान कुटने की आज्ञा दी । गांव में आज भी "सात आगरसात कोरी" अर्थात् १४७ ओखलियों के अवशेष हैं । इस इलाके में सात सागर कोरी लोकोक्ति भी बहुत प्रचलित हैं । छछानछाडू का कठोरतम जुल्म माँ को अच्छा नही लगा, उसकी नज़रों में यह नारी जाति का अपमान था । निरपराध राजकुमारियों को जुल्म से मुक्त कराने का उसने भरसक प्रयास किया । लेकिन छछानछाडू ने उसकी एक न सुनी और यातनाओं का क्रम चलता रहा । अंततः एक मॉ ने बेटे के साथ वह किया जो कि सामान्यतः एक मॉ के लिए असंभव था ।

नारी अत्याचार के विरूद्ध किसी महिला द्वारा अपने बेटे के बलिदान की यह गाथा अपने आप में बेजोड़ है । जनमानस के बीच कलारिन महिला के साहसिक कार्य ने उसे "बहादुर कलारिन"बनादिया, जिसकी गाथा आज भी संपूर्ण इलाके में मुँह-जुबानी सुनने को मिलती है । कटार लिये विरांगना की मूर्ति ग्राम सोरर के गर्भ में आज भी स्थित है ।

डी.पी. देशमुख, भिलाई

मां बंजारी माई - अनोखा एवं उत्कृष्ट मंदिर

प्राचीन मंदिरों से छत्तीसगढ़ की धरा सदा से जानी जाती रही है । मंदिरों के वैभवशाली इतिहास से छत्तीसगढ़ हमेशा उच्च शिखर पर रहा है । प्राचीन समय में रैयपुर नाम से प्रचलित राजधानी में आज ढेरों मंदिर अपनी ऐतिहासिकता का बखान करते हैं । यहां कई जाति एवं वर्ग के लोगो ने कई भव्य एवं उत्कृष्ठ मंदिरों का निर्माण करवाया है । भव्य एवं धार्मिक श्रद्धा के केंद्र रहें यह मंदिर हमेशा से ही आस्था का केंद्र रहें है, इस कारण से ही इन मंदिरों की प्रसिद्धि दूर तक फैली है । उम्दा नक्काशी एवं उत्कृष्ठ शिल्पकला से ओतप्रोत ये मंदिर संस्कृति एवं वैभव का सर्वोत्कृष्ठ नमूना हैं । कई वर्षों पहले बने ये मंदिर आज भी राजधानी में संरक्षित अवस्था में हैं ।

राजधानी से करीबन १० कि.मी. दूर बिलासपुर मार्ग पर रांवाभाठा में स्थित है माँ बंजारी माई का दरबार । शहर की भीड़ -भाड़ से दूर एकांत में बसा है माता का दरबार । यहां भक्त अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए उनके आगे माथा टेकते हैं । नवरात्रि सहित कई पारंपरिकपर्वों में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है । माता अपने भक्तों पर हमेशा कृपा बरसाती है ।

अलौकिक मंदिर का इतिहास :-

रावांभाठा में स्थित है माँ बंजारी मांई का अनोखा एवं उत्कृष्ठ प्राचीन मंदिर । कहतें हैं कि करीबन ५०० वर्ष पहले यहां बीहड़ बंजर भूमि थी. यहीं से ही माता स्वयंभू स्वरूप में प्रकट हुई हैं । एक बार घूमते-फिरते बंजारे उस स्थान से गुजरे जहां माता की सूक्ष्म प्रतिमा विद्यमान थी। जो उनकी कुलदेवी थी । कुछ दिनों तक वे माता के छोटे रूप की ही पूजा करते रहे । बहुत समय बाद इन्हीं बंजारों ने माता को बंजारी के नाम से संबोधित किया । तभी से कालांतर में माता बंजारी माई के नाम से प्रसिद्ध हो गई । जहां माता की प्रतिमा निकली थी, वह स्थान पगडंडी था । काफी समय बाद एक हरिजन व्यक्ति ने माता की प्रतिमा को देखा तो उन्होंने उसे छोटे से गर्भगृह में विराजित किया था तब हरिजनों का गर्भगृह में प्रवेश निषेध था । तभी से सुदामा सतनामी नाम के व्यक्ति ने गर्भगृह बनवाकर वहां पर चौरा जैसा बनाकर माता की प्रतिमा विधिवत् विराजित की। माता का स्वरूप बगुलामुखी है । माता का मंदिर कांच से बने भव्य भवन की छत्रछाया में विराजित है । सन् १९८७ में मंदिर का नवनिर्माण बंजारी माता ट्रस्ट द्वारा करवाया गया । माता की प्रारंभिक पत्थर की प्रतिमा आज भी उसी स्वरूप में विद्यमान है ।

गर्भगृह में है इच्छाधारी नाग का वास

कहतें है कि जहां माता की प्रतिमा विद्यमान है ठीक वहीं उसके भीतर इच्छाधारी नाग देवता का वास है । नागिन का वास मंदिर के बाहर झाड़ो के पास है. ऐसा कई बार हुआ है कि इस नाग के जोड़े ने कई सौभाग्यशाली भक्तों को दर्शन दिया है । ऐसा कहा जाता है कि हमेशा ये नाग किसी भी रूप में प्रकट होतें हैं, इस कारण ही उसे लोग इच्छाधारी नाग कहतें हैं । यह नाग इस स्थान पर करीबन १०० सालों से हैं । आश्चर्य की बात यह है कि नाग के साथ ही उस बिल में एक चूहा भी उसके साथ ही रहता है. जो मंदिर कें प्रांगण में बिल्ली एवं कुत्ते के साथ घूमता रहता हैं. चूहा, बिल्ली एवं कुत्ते को एक साथ मित्रवत घूमते देखना किसी कौतुहल से कम नहीं है ।

क्षीरसागर का दुर्लभ दृश्य

मुख्य मार्ग से ३ फीट नीचे बसा माता के दरबार में हनुमान जी एवं गणेश की प्रतिमा विद्यमान हैं । मंदिर में ही भगवान विष्णु की क्षीरसागर जैसे स्थल में भगवान विष्णु पंचायत ले रहें हैं । जिसमें समस्त देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ विराजमान हैं । हनुमान, शंकर, माता सरस्वती, सामने ब्रह्मा जी, गणेश, उग्रतारा, देवी लक्ष्मी, पार्वती समेत इस सभा में समस्त देवी-देवतागण उपस्थित हैं । क्षीरसागर के बगल में प्रभु सांई बाबा का दरबार है एवं आगे शंकर भगवान की भव्य प्रतिमा सहित हनुमानजी की भी भव्य प्रतिमा विद्यमान हैं । मंदिर में युग के अनुसार देवताओं की प्रतिमाएं विद्यमान हैं, जिनमें त्रेता युग में श्रीराम, भक्ति युग में हनुमान एवं कलियुग में तुलसीदास जी हैं ।

पाँच एकड़ में फैले मंदिर में व्यायाम शाला, भोजन शाला सहित बैंक ऑफ बडौदा का एटीएम एवं कलश के रूप में पानी की टंकी बनाई गई है. पाँच एकड़ क्षेत्र में फैले इस मंदिर में चैत्र एवं कुवांर नवरात्रि में भक्तों की अपार भीड उमडती है. दोनों ही नवरात्रि में देश-विदेश से एवं मुस्लिम भक्तों के भी बड़ी संख्या में ज्योति कलश जलतें हैं । यहां एक जनवरी, पूर्णिमा, महाशिवरात्रि, पुन्नी मेला एवं छेरछेरा आदि पारंपरिक पर्वों पर मेले जैसा माहौल रहता है ।

तिलकेश्वरी पठारे, रायपुर

पंचकोशी - शेव एवं वैष्णव धर्म का संगम स्थल

एक बार की बात है कि ब्रह्मा सहित देवतागण विचार करने लगे कि मृत्युलोक में दुष्टों की शांति के लिए क्या करना चाहिए ? अविनाशी परमात्मा का ध्यान किया तो एकत्रित देवताओं ने एक बड़ा आश्चर्य देखा । सूर्य के समान तेज वाला एक कमल फूल गो-लोक से गिरा, जो पाँच कोश लम्बा और सुगंध से भरा था, जिसमें भौंरे गुंजार कर रहे थे, फूल का रस टपक रहा था मानो यह अमृत-कलश है. इसे देखकर ब्रम्हा जी बहुत प्रसन्न हुए और आज्ञा दी कि- "हे पुष्कर । तुम मृत्यु लोक में जाओ जहाँ तुम गिरोगे वह क्षेत्र पवित्र हो जाएगा." नाल सहित वह मनोहारी कमल पृथ्वी पर गिरा और पाँच कोश भूमण्डल को व्याप्त कर लिया, जिनके स्वामी स्वयं भगवान श्री राजीव लोचन हैं । कमलफूल की पाँच पंखुडियाँ थी, इन्हीं पाँचों पंखुडियों में पाँच स्वयंभू शिवपीठ प्रस्थापित हैं. पटेवा में पटेश्वर नाथ महादेव, चम्पारण में चम्पेश्वर नाथ महादेव, बम्हनी में बम्हनेश्वर नाथ महादेव, फिंगेश्वर में फणिकेश्वर नाथ महादेव और कोपरा में कर्पूरेश्वर नाथ महादेव ।

लोमश ऋषि द्वारा पंचकोशी परिक्रमा :- कमलक्षेत्र में पंचकोशी परिक्रमा की महिमा सर्वथा अकथनीय है । इस पवित्र भूमि में पाँच कोस की दूरी पर स्थित शिवजी के पावन पीठों की परिक्रमा की परम्परा सदियों से चली आ रही है । पूरे प्रदेश से हजारो की संख्या में श्रद्धालुगण सम्मिलित होकर पुण्य लाभ अर्जित करतें हैं । भारत में इसी स्थान को पंचकोशी परिक्रमा की मान्यता मिली है । संगम से लगा कुलेश्वर नाथ महादेव मंदिर से करीब २०० गज की दूरी पर श्रृंगी ऋषि के गुरू ब्रह्मज्ञानी महर्षि लोमश ऋषि का आश्रम है ।

लिंगो के स्वामी पंचमुखी कुलेश्वरनाथ महादेव :- भगवान कुलेश्वरनाथ महादेव को साक्षात् काशी के विश्वनाथ और कोटि लिंगो का स्वामी माना जाता है । यहां पंचकोशी यात्रा पूर्ण होती है । किंवदंति है कि त्रेतायुग में बनवास काल के दौरान दशरथ पुत्र राम, भाई लक्ष्मण एवं पत्नी सीता के साथ ब्रह्मर्षि लोमश से मिलने उनके आश्रम आये थे । विश्राम पश्चात् माता सीता ने संगम स्नान के उपरान्त अपने आराध्य देव की पूजा-आराधना के लिए बालु (रेत) से शिवलिंग बनाकर पूजा-अर्चना की तथा उसमें डाली गई जल से लिंग पंचमुखी हो गया, इसलिए इसे पंचमुखी कुलेश्वरनाथ महादेव कहते हैं । विश्व के गिने-चुने स्थानों पर पंचमुखी महादेव के दर्शन होते हैं । भगवान राम ने सेतु निर्माण के समय रामेश्वरम् में शिवलिंग की स्थापना की थी और कहा था कि :-

जे रामेश्वर दरसनु करहहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ।।
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि । सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि ।।

ठीक इसी भांति जगत-जननी देवी सीता ने कुलेश्वरनाथ महादेव की स्थापना कर इस भूमि को पवित्र एवं दर्शनीय तथा मोक्षधाम बना दिया. सोंढूर, पैरी व महानदी के संगम पर १७ फीट ऊँची जगती के ऊपर एक विशाल मंदिर के गर्भगृह में कुलेश्वरनाथ महादेव का शिवलिंग स्थापित है । पूर्व काल में शिवलिंग में सिक्का डालने से "ऊँ" की ध्वनि सुनाई देती थी तथा दूध, फल, पत्तियाँ, अक्षत्, द्रव्य आदि पूजा सामग्री अंदर से ही नदी में जाकर मिल जाती थी । वर्तमान में यह छिद्र बंद हो चुका है । इसका महत्व अपने-आप एक नई श्रद्धा भावना को जन्म देती है ।

पट्टानापुरी स्थित पटेश्वरनाथ महादेव :- सभी शिवपीठ अपने-आप में अनेक धार्मिक रहस्यों को छिपाए हुए हैं. प्राचीन पट्टानापुरी वर्तमान में पटेवा ग्राम है. जहां भगवान पटेश्वरनाथ महादेव लिंग रूप में प्रस्थापित हैं । रायपुर-देवभोग राजमार्ग में दक्षिण दिशा की ओर राजिम से ७ कि.मी. की दूरी पर बसा हुआ है. यह पंचकोशी परिक्रमा का प्रथम पड़ाव है. यात्रीगण यहाँ पहुंचकर रात्रि विश्राम के पश्चात् प्रातः काल १८ एकड़ क्षेत्र में फैले सरोवर में स्नान आदि नित्य क्रिया करके रूद्राभिषेक, जप,ध्यान,पूजा-आराधना करते हैं ।

भगवान पटेश्वरनाथ महादेव को सद्योजात शम्भु की मूर्ति कहा जाता है, जो समस्त तत्वात्मक होने से सम्पूर्ण शरीरधारियों में स्थित रहा करता है । तत्वज्ञानी पुरूष उन्हें भूमि का जनक मानते हैं । सद्योजात देव विश्वंभर जगतगुरू चराचर का भरण करने वाले एक ही स्वामी हैं । भगवती अन्नपूर्णा इनकी अर्द्धांगिनी हैं । पंचकोशात्मक स्वरूप की दृष्टि से यह अन्नमय कोश के प्रतीक है ।

त्रिस्वरूपात्कम स्वयंभू लिंग चम्पकेश्वर महादेव :- राजिम से उत्तर-पूर्व में १४ कि.मी. की दूरी पर आरंग सड़क मार्ग में महानदी के तट पर भगवान चम्पकेश्वरनाथ महादेव एवं महाप्रभु वल्लभाचार्य की पुण्यभूमि चम्पारण (चांपाझार) स्थित है ।

बम्हनेश्वर महादेव :- चम्पारण से ९ कि.मी. दूरी पर सुरम्य आम्र-कुंजो एवं निरंतर प्रवाहमान निर्झर शीतली नाले के तट पर ग्राम बम्हनी स्थित है । बम्हनी महादेव की भूमि है जहाँ स्वयं आदि देव लिंग रुप में ब्रह्मनेश्वरनाथ महादेव के रुप में प्रसिद्ध हैं । जनश्रुति है कि शीतली नाले के किनारे एक वितरागी योगी धुनी रमाये हुए शिवार्चन में लीन थे । बड़े बुजुर्गों ने योगीराज से ग्राम में निवास करने की विनती की, तब उन्होंने कहा कि यह स्थान बड़ा ही पवित्र है जहां स्वयं शिवजी और मोक्षदायनी गंगा विराजमान है ।

शेषनाग द्वारा स्थापित फणिकेश्वर महादेव :- शास्त्रों के अनुसार भगवान विष्णु की आज्ञा से ब्रम्हा जी ने सृष्टि की रचना की, तब इस अनुपम सृष्टि को देखने के लिए शेषनाग शरीर रुप धारण करके भ्रमण करने लगे । उन्होंने देखा कि सभी प्राणी ईश्वर की माया से अभिभूत हो रहे थे । उन्हें मुक्त करने की इच्छा से शेषनाग सृष्टि से पृथक कमलक्षेत्र आये और भगवान श्री राजीवलोचन के दर्शन कर वर प्राप्त किया तथा पार्वती सहित फणिकेश्वर नाथ शिवलिंग की स्थापना की ।

डॉ. बी.एम. तिवारी, भिलाई

तुम्माण खोल

तुम्मान या तुम्माण को पहले "तुम्माण खोल" कहते थे. खोल का अर्थ है छिद्र, जो चारों ओर से घिरा हुआ है। सचमुच तुम्मान चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ है। छत्तीसगढ़ एटलस में इसे टुम्मान कहा गया है। प्राचीन समय में तुम्मान आना-जाना दूभर हो जाता था। तुम्मान के दो प्राकृतिक मार्ग हैं, एक पूर्व दिशा में और दूसरा दक्षिण दिशा में हैं. यह दक्षिण कोसल की पुरानी राजधानी थी। ९वीं शताब्दी के अंत में त्रिपुरी (तेवर) यानी जबलपुर के कलचुरियों ने यह प्रदेश जीता। पाली के शिवमंदिर में प्राप्त अभिलेखों के अनुसार ९वीं शताब्दी के अंत में यहाँ बाणवंशीय विक्रमादित्य प्रथम का अधिकार था। इसके उत्तराधिकारी से त्रिपुरी से आये मुग्धतुंग ने यह प्रदेश हथिया लिया। राजा मुग्धतुंग तुम्माण में नहीं रहा, उसने अपने छोटे भाई को यहाँ की सत्ता सौंप दी। सन् ९०० के लगभग यहाँ पूरी तरह कल्चुरी सत्ता व्याप्त हो गई।

प्रमाण बताते हैं कि यहाँ कल्चुरियों की तीन पीढ़ियों ने राज्य किया. भले ही सोनपुर (उड़ीसा) के सोमवंशीय राजा कल्चुरियों के पीछे हाथ धोकर पड़े थे. पर त्रिपुरी शाखा के कल्चुरी ताकतवर थे। युवराज सिंह देव और लक्ष्मणदेव ने मिलकर सोमवंशीय राजाओं को हरा दिया और सन् ९५० थ्व्र ९७० के बीच कल्चुरी राजाओं ने यहाँ स्थायी सत्ता स्थापित कर ली।

१- राजा कलिंगराज :- त्रिपुरी के राजा कोकल्यदेव के राजकाल में उसके १८ पुत्रों में से एक छोटे पुत्र कलिंगराज (तनय) ने आकर तुमान को राजधानी बनाया, उसने तुम्माण का वैभव बढ़ाया और शत्रुओं को परास्त किया।

२- राजा कमलराज :- (सन् १०२०-१०४५) त्रिपुरी शाखा के राजा गांगेयदेव ने कमलराज को साथ लेकर उड़ीसा पर आक्रमण किया और वहां से लूट सामग्री प्राप्त की।

तथ्य :- तथ्यों से साबित होता है कि तुम्माण, पुरी के रास्ते पर पड़ता था. और इसीलिये यहाँ उड़ीसा के राजाओं का आक्रमण होता ही रहता था। उत्कल युद्ध से कमलराज को लाभ हुआ। उसे साहिल्ल नामक वीर योद्धा ईनाम में मिला जिसने कमलराज के लिए अनेक प्रदेशों को जीता ओर राजा का वैभव बढ़ाया।

३- रत्नदेव प्रथम :- (सन् १०४५-१०६५) कमलराज के पुत्र ने तुम्माण का राज्य संभाला. एक बार वह आखेट के विचार से मणिपुर गाँव आया था, तब वट-वृक्ष के पीछे विश्राम करते हुए उसे महामाया देवी का साक्षात्कार हुआ। तभी से उसने मणिपुर को (रतनपुर) राजधानी बनाने का निर्णय लिया।

मंदिरों का शिल्प :- तुम्माण हैहयवंशी कल्चुरी राजाओं की राजधानी रही है। राजाओं ने तुम्माण को समृद्ध, सुंदर और वैभवशाली बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। राजाओं ने यहाँ बड़े-बड़े तालाब खुदवाये. आम्रवन व उपवन लगाये। फल एवं फुलों के उद्यान लगवाये। जटाशंकरी नदी के किनारे राजमहलों की कतारें बांध दी। इतिहास प्रमाणित करता है कि कल्चुरी काल के पहले भी तुम्माण आबाद राजधानी थी। जटाशंकरी नदी की कल-कल धाराओं में इसका इतिहास छुपा हुआ है। राजाओं का कला शिल्प व सौन्दर्य प्रेम का पता तुम्मान का वैभव देखकर ही लगता है. राजमहल तो अब है नहीं, अवशेष ही बताते हैं कि इमारत बुलंद थी।

राजा रत्नदेव ने बंकेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया। इस मंदिर का निर्माण ऋषि बंकु की स्मृति में कराया गया है। यहीं पर बंकु मुनि का आश्रम था। मंदिर में शिवजी के तांड्व नृत्य वाली व ब्रह्माजी की मूर्ति है. समीप में उनका हंस दिखाई देता है। दांयी ओर वामन भगवान अंकित हैं. कल्चुरी राजाओं की विशेषता रही है कि द्वार पर नवग्रहों की मूर्तियाँ उकेरी जाती हैं। गणेशजी व देवी-देवताओं का आह्वान किया जाता है। मंदिर में विष्णुजी व दशावतार की मूर्तियाँ चित्रित है. गंगा, यमुना और द्वारपाल खड़े हुए हैं. मंदिर के सामने नंदी बैल की तराशी हुई भव्य प्रतिमा है।

जटाशंकरी नदी के किनारे राजमहल "सतखंडामहल" के नाम से मशहूर है जो वर्तमान में जीर्ण-शीर्ण हालत में खड़ा है। नदी के बहाव में कुछ इमारतें ध्वस्त हो गई हैं। शिव मंदिर के किनारे राजा कलिंग राज ने "राजारानी तालाब"बनवाया है। तीन कल्चुरी राजाओं ने यहाँ सैकड़ों तालाब खुदवाये परन्तु आज भी कुछ तालाब शेष हैं जो तत्कालीन वैभव और ऐश्वर्य का वर्णन करनें से प्रतीत होते हैं। तुम्माण के निवासी पंचरथ मंदिर में पूजा-अर्चना करतें हैं। एक स्थान पर सूर्यदेव की प्राचीन प्रतिमा दिखाई देती है। अभी भी लोग रत्नदेवेश्वर और पृथ्वीदेवेश्वर मंदिर में आस्था के फूल चढ़ातें हैं। कल्चुरी कालीन वैभव अब तो रहा नहीं फिर भी तुम्माण की विरासत को याद करके पर्यटक अब भी पहुंच ही जाते हैं।

डॉ. प्रकाश पतंगीवार, रायपुर

पुरखौती मुक्तांगन

छत्तीसगढ़ की धरती पुरातात्विक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत संपन्न है । महानदी, शिवनाथ, इन्द्रावती और अरपा आदि नदियों के जल से सिंचित यह अंचल अत्यधिक उर्वर है, साथ ही प्राकृतिक सौंदर्य और खनिज संपदा से परिपूर्ण है । यहाँ की सांस्कृतिक विशिष्टता भी उल्लेखनीय है । गौंड़, कुमार, बैगा, हल्बा और बिंझवार आदि आदिवासी जनजातियाँ नृत्य, संगीत, विवाह तथा पारंपरिक पर्वों में अनेक रूपों में थिरकती है तथा प्रकृति के साथ अठखेलियाँ करती हैं । सदाबहार लहराते हुए सुरम्य वन तथा जनजातियों का नृत्य संगीत यहाँ के मुख्य आकर्षण है । हरे-हरे धान के खेतों में सजी हुई छत्तीसगढ़ की धरती में अद्‌भुत मादकता तथा माधुर्य है ।

पुरातात्विक और सांस्कृतिक धरोहर से सुसज्जित छत्तीसगढ़ राज्य के सुन्दर भू-भाग में अनेकानेक प्राचीन धरोहर और धार्मिक महत्व के दर्शनीय स्थल तो हैं ही, जिन्हें देखकर मन अनायास ही आकर्षित होने लगता है, प्रफुल्लित होने लगता है । उसी तरह छत्तीसगढ़ की संस्कृति, परंपरा और जीवन शैली के ऐतिहासिक तथा अनवरत प्रगति को प्रदर्शित करने वाला उन्नत पथ की ओर अग्रसर संग्रहालय "पुरखौतीमुक्तांगन" है । जिसकी परिकल्पना छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक गतिविधियों को रेखांकित करनें के साथ ही साथ भौगोलिक विविधता की धरोहर तथा प्रकृति के अगाध संबंध की अभिव्यक्ति है. विभिन्न कलाओं का संगम स्थल है "पुरखौतीमुक्तांगन" । जहाँ चित्रकला, मूर्तिकला, हस्तकला, शिल्पकला, नृत्यकला आदि द्वारा छत्तीसगढ़ के सम्पूर्ण पहलुओं को चित्रित करने का अद्‌भुत एवं अनुपम प्रयास किया गया है ।

"पुरखौतीमुक्तांगन" संग्रहालय के विचित्र और विशाल प्रवेश द्वार के समीप पहुंचते ही छत्तीसगढ़ की धरती में विराजमान विविध प्रकार के कलाओं की कल्पना मनोमस्तिष्क में प्रतिबिम्बित होने लगती है, मानो सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ वास्तव में इस विशाल एवं विस्तृत संग्रहालय में समाहित है ।

महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने पुरखौती मुक्तांगन के उद्‌घाटन अवसर पर ७ नवम्बर २००६ को कहा था कि " पुरखौतीमुक्तांगन को छत्तीसगढ़ के समस्त विभागों, उद्योगों और अंतर्राष्ट्रीय विपणन एजेंसियों को संयुक्त रूप से सहयोग करना चाहिए और सांस्कृतिक विरासत तथा पारंपरिक मूल्य पद्धति से नए उत्पादों का प्रसार करना चाहिए, इस कोशिश से नतीजन इन वस्तुओं के मूल्य तथा प्रभावी उत्पादन में वृद्धि होगी. "

जय जोहार (छत्तीसगढ़ी), इलो सगा के जुहार (हल्बी), वायले सगा तुम जोहार (गोंडी)

संग्रहालय किसी धरती, किसी राष्ट्र या किसी राज्य के गौरवशाली परंपरा या विरासत को प्रदर्शित करने वाले दर्पण के समान होते हैं, जो उस भू-भाग के निवासी को उन सम्पूर्ण गुजरे दिनों या बातों की याद दिलाते है, जिसे नवीनतम तकनीक, बोली, भाषाओं तथा नवीन जीवन पद्धतियों के द्वारा धूमिल कर दी गई होती हैं ।

पुरखौती मुक्तांगन में प्रवेश करते ही शबरी एम्पोरियम में संग्रहित बस्तर हस्त-शिल्प को देखने के बाद दण्डामी मांड़िया पथ में ढोल बजाते हुए अभिनन्दन, स्वागत करने के स्वरूप में बनाये गये मूर्तिकला बरबस ही अन्तर्मन को आकर्षित एवं आह्लादित करता है । फिर शिल्पग्राम, छत्तीसगढ़ की महान विभूतियों (शहीद वीरनारायण सिंह, मीनी माता, पं. सुंदरलाल शर्मा, माधव राव सप्रे, बेरिस्टर छेदीलाल, पं. रविशंकर शुक्ल, ठाकुर प्यारेलाल, खूबचंद बघेल) के हुबहु चलनें की अवस्था में स्थापित प्रतिमूर्तियाँ, छत्तीसगढ़ चौक की छत्तीस चकाचौंध रंगीन खम्भे, आदमों गाँव, शल्फी ग्राम, जलप्रपात जलीय मंच, छत्तीसगढ़ के पारंपरिक आभूषण, करमा वृक्ष, ढोकरा शिल्प, गुलाब गार्डन, सरगुजा के पारंपरिक रजवार गृह तथा छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में किये जाने वाले विविध प्रकार के नृत्य - पंथी नृत्य, माड़िया नृत्य, शैला नृत्य, सुवा नृत्य, राउत नृत्य, बैगा नृत्य, गेड़ी नृत्य आदि की बनाई गई समस्त अनुपम दर्शनीय कलाकृतियों को देखकर छत्तीसगढ़ की अधिकांश सांस्कृतिक, धार्मिक समरसता की सुखद अनुभूति हो जाती है ।

इस संग्रहालय में छत्तीसगढ़ की जनता का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का संदेश, विभिन्न जीव-जंतुओं की जानकारी तथा प्रकृति प्रेम सहज ही परिलक्षित होता है । विचरण करते हुए कुछ कदम आगे बढ़ने पर मानयतला में निर्मित विभिन्न जनजातीय मुखौटे एवं बाजा बजगरी में विभिन्न धातुओं को रूप, रंग, आकार देकर बनाये गये छत्तीसगढ़ के लोक संगीत की झलक, सांसे थाम कर अपलक निहारनें को मजबूर कर देता है । निकलते-निकलते पुरखौती मुक्तांगन कार्यालय की दीवार में चित्रांकित सरगुजा गोदना पेंटिंग की कलाकृतियाँ भी देखने के लिए मानव मन को कुछ समय रोकने का प्रयास करता है ।

वीरेन्द्र साहू, कुथरेल, दुर्ग

सिरकट्टी आश्रम

छत्तीसगढ़ का यह स्थल आज से 50 वर्ष पूर्व जानकारी के अभाव में यह स्थल बिलकुल निर्जन एवं वीरान था, जिसे श्री श्री 108 संत सिया भुनेश्वरी शरण व्यास जी ने आश्रम का आकार देकर खुशहाल कर दिया है । साधु–संन्यासियों का हमेशा डेरा लगा रहता है। समय–समय पर यज्ञ पूर्णाहूति व धार्मिक प्रवचन का कार्यक्रम होता है, जिसका लाभ अर्जित करने के लिए सालभर श्रद्धालुओं की चहल–पहल रहती है।

पहुँच मार्ग – राजधानी रायपुर देवभोग मुख्य मार्ग पर 75 कि.मी. की दूरी पर पाण्डुका से पश्चिम दिशा में महज 3 कि.मी. का फासला लिये हुये कुटेना का सिरकट्टी आश्रम पैरी नदी के तट अवस्थित है।

पेड़ पौधों की झरझर एवं यमुना नदी के समान पैरी के कलकल निनाद से गूंजती मंदिरों झुंड के मध्य पंचवटी में विशाल पीपल वृक्ष के नीचे चबूतरे में गोलाकार प्राचीन सिर कटी हुई खंडित मूर्तियॉं स्थापित है, जिसमें चतुर्भुजी भगवान विष्णु का विग्रह चार फीट उंचाई का है। यहा एक शिवलिंग भी है इसके संबंध में जनश्रुति है कि गाय चराने वाला चरवाहा जंगल में एकाएक पत्थर से टकराकर गिर गये, रूककर देखा तो महादेव का शिवलिंग लगा, घर ले जाने के उद्देश्य से मिट्टी खोदना शुरू किया, किन्तु अधिक गहराई के कारण निकालने में असमर्थ रहा । दूसरे दिन आकर देखा तो शिवलिंग काफी उभर आया था। उस दिन से लोगों की श्रद्धा भक्ति बढ़ गई। बिखरी हुई मूर्तियों संख्या नौ हैं, इसमें अंकित कला कौशल व चित्रकारी से संकेत मिलते हैं कि ये 11 वीं शताब्दी के हैं। मूर्तियों के सिर कटने के कारण इस स्थल का नाम सिकट्टी पड़ा।

आश्रम परिसर के प्रवेश द्वार को बहुत ही आकर्षक बनाया गया है, आश्रम स्थल में अनेक नवीन मंदिरों का निर्माण किया गया है, जिसमें लक्ष्मीनारायण मंदिर, दुर्गा देवी मंदिर, राम जानकी मंदिर, हनुमान मंदिर, विश्वकर्मा मंदिर, कृष्ण गोपाल मंदिर, गायत्री मंदिर, यज्ञ शाला, मॉं कौशिल्या प्रसाद भंडार गृह, धर्मशाला आदि शामिल है। गुफा में सवधर्म चित्रित है, इसमें मोहक चित्रकारी का नमूना पेश किया गया है। यहां सुरंग मार्ग होने की भी जानकारी मिलती है, जो छत्तीसगढ़ के प्रयाग तीर्थ नगरी राजिम तक जाती है।

लोथल की तरह आश्रम से 200 गज के अंतराल में नदी तट से लगा हुआ छत्तीसगढ़ के एकमात्र प्राचीन बंदरगाह के अवशेष मौजूद है। डॉकयार्ड अर्थात् व्यापारिक नाव खड़े होने की गोदी है, जो चट्टानों को काटकर बनाई गई है, और 5 से 6.5 मीटर तक चौड़ी है। ऐसा अनुमान है, कि बंदरगाह के साथ यह वस्तु विपणन केन्द्र भी था। यहां से देश–विदेश में नदी मार्ग व्यापार होता था, इसे लोथल से प्राप्त बंदरगाह के बंद के किसी काल का माना जाता है।

यहां महर्षि महेश योगी का गुरूकुल आश्रम पाण्डुका की शान है, महेश योगी का जन्म पाण्डुका में ही हुआ था, प्राथमिक शिक्षा उन्होंने यहीं से प्राप्त की थी। आज देश–विदेश में इनके हजारों अनुयायी है, करीब 12 एकड़ भूमि पर फैला गुरूकुल आश्रम अत्यंत रमणीय है। वर्तमान में एक सौ 110 विद्यार्थी पूरे छत्तीसगढ़ से विद्या अध्ययन कर रहे हैं, जो दस से सत्रह वर्ष आयु वर्ग के हैं, यहां मुख्य रूप से वेद, विज्ञान, ध्यान एवं योग की शिक्षा दी जाती है।

सिरकट्टी आश्रम में प्रतिवर्ष पौष पूर्णिमा छेरछेरा के बाद पड़ने वाले गुरूवार से लेकर तीन दिनों तक विराट यज्ञ, हवन का अनुष्ठान तथा आषाढ़ माह के पूर्णिमा को गुरू पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है, इस दिन संत श्री भुनेश्वरी शरण व्यास जी के अनुयायी अपने गुरू के प्रति श्रद्धा–सुमन अर्पित करने के लिए एकत्रित होते हैं, तथा लागों की भारी भीड़ ने मेले का स्वरूप ले लिया है।

आवासीय व्यवस्था– वन मण्डल द्वारा रेस्ट हाउस, रिसॉर्ट एवं रायपुर शहर में उच्च एवं मध्यम वर्गीय हॉटल एवं लॉज की व्यवस्था है।

संतोष कुमार सोनकर 'मण्डल',
राजिम

समिति के सदस्य संस्थानों द्वारा आयोजित नराकास स्तरीय विभिन्न प्रतियोगिताओं की एक झलक

नराकास की 44 बैठक सह वार्षिक

पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां

नराकास मूल्यांकन उप समिति के सदस्यों का अध्यक्ष महोदय के साथ सौजन्य भेंट

कांकेर : कला, संस्कृति व आस्था की ऐतिहासिक नगरी

कला साहित्य एवं संस्कृति की ऐतिहासिक नगरी कांकेर प्राचीन समय में रियासत के रूप में दंडकारण्य, कुशावर्त, मौय, गुप्त एवं कल्चुरी वंश के साम्राज्य के अंतर्गत एवं बस्तर संभाग का नवगठित जिला मुख्यालय है, जो अपने दामन में अथाह सौंदर्य समेटे दूध नदी की कल–कल की मधुर निनाद करता जलप्रवाह प्राचीन रियासत की राजधानी व राजमहल के रूप में किला पहाड़, गड़िया पहाड़ जहां सोनई, रूपई सरोवर भग्नावशेष के रूप में अवस्थित सिंह द्वार तथा प्राचीन वैभव नगरी के पुरातात्विक अवशेष वर्तमान में कांकेर नगरी में स्थित राजमहल गढ़िया पहाड़ के निकट माता सिंहवाहिनी का मंदिर, निकट स्थित दक्षिणामुखी हनुमान मंदिर, राम मंदिर, द्वारिकाधीश का मंदिर, शंकर–पार्वती व गणेश जी का मंदिर, शक्ति व आस्था में विश्वास रखने वाले इतिहास शोध व पुरातत्व में रूचि रखने वाले एवं नैसर्गिक सौंदर्यबोध को आत्मसात करने वाले किसी भी पर्यटक के लिए आकर्षण का केन्द्र है, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक नगर–कांकेर।

कांकेर रियासत के प्रारंभिक युग में राजा नल के वंशजों को शासन था, फिर नागवंशीय राजाओं ने लंबे समय तक शासन किया। नलवंशीय शासनकाल की 32 स्वर्ण मुद्राएं सन् 1939 में ग्राम अंडेंगा से प्राप्त हुई थी, जो नागपुर के पुरातत्व संग्रहालय में सुरक्षित है। 13वीं शताब्दी से सोमवंशीय राजा कन्हारदेव का आगमन सिहावा रियासत में हुआ, इन्हीं की पीढ़ी के राजा भानुदेव ने कांकेर के गढ़िया पहाड़ या किला पहाड़ के कण्डरा राजा को मारकर अपनी राजधानी बना ली, सोमवर्शय राजाओं का शासनकाल सन् 1903 तक राजा नरहरिदेव के निधन तक चला जो पुत्रहीन थे, इनके दत्तक पुत्र कोमलदेव ने 1925 तक, पश्चात् इनके भी दत्तक पुत्र भानुप्रताप देव 1969 तक गद्दी पर बैठे। सोमवंशीय राजाओं के युग में कांकेर चरमोत्व पर था। इन शासको के काल के आसपास के ग्राम तहकापार, सरगपाल, में यत्र–तत्र प्राचीन मूर्तियॉ बिखरी पड़ी है, जाती है। सन् 1800 ईस्वी के पूर्व कांकेर ऊपरी सपाट मैदान पर स्थापित थी, पश्चात् स्थापित हुआ, जो गढ़िया पहाड़ के नीचे बसा सोनई–रूपई तालाब है, जिसमें वर्षभर पानी

रियासत का सांस्कृतिक वैभव अपने सांस्कृतिक विरासत के रूप में कांकेर तथा कुलगांव तथा कांकेर के विभिन्न मोहल्लों जिनकी पूजा–अर्चना ग्रामीणों द्वारा की रियासत की राजधानी गढ़िया पहाड़ के वर्तमान कांकेर नगर राजधानी के रूप में हुआ है। गढिया पहाड़ के ऊपर भरा रहता है, एक किवदंती के अनुसार कंडरा राजा ने अपनी प्रजा की भलाई के लिए यहॉ दो तालाब बनवाएं थे, किन्तु इसमें पानी नहीं भर पाया, पोला त्यौहार के दिन दो नन्ही बालीकाँयें सोनई–रूपई तालाब में खेल रही थी, तभी तालाब में पानी भरने लगा, और दोनों बालिकाओं का जल समाधि बन गई, तब से यह तालाब कभी नहीं सूखा है। राजाओं ने अपने लोक–परलोक सुधारने व प्रज्ञा के हित में अनेक तालाब खुदवाए, मंदिरों का निर्माण करवाया, जिनमें कुछ तो अभी सुरक्षित है और कुछ अवशेष मात्र रह गये है। कांकेर रियासत में दुर्गादेवी के नौ रूपों के कलात्मक व आकर्षक प्रस्तर प्रतिमा का निर्माण हुआ था। शक्ति स्वरूपा मां दुर्गा के मधुर तथा उग्र, दोनों ही रूपों की उपासना को काफी महत्व मिला है। गौर व श्याम दोनों वर्णों की देवियों की पूजा होने लगी। नगर के मध्य से प्रवाहित दूध नदी के किनारे गठिया पहाड़ के पास राजापारा स्थित मां सिंह वासिनी देवी का मंदिर आज जन आस्था का प्रतीक है। राजा के संबंधियों व 'राजपरिवार' से जुड़े लोगों के निवास के कारण इस मोहल्ले का नाम राजापारा पड़ा। इतिहास के अनुसार चंद्रवंशी राजा पद्मदेव माँ के मरम भक्त थे। वे घंटो एक पैर पर खड़े रहकर मॉ की अराधना करते थे। राजा पद्मदेव ने माँ सिंहवाहनी मंदिर का निर्माण करवाया था। विधि विधान से आदि शक्ति माँ की प्रतिमा स्थापित करवाई।

इस मंदिर के निकट ही दक्षिणमुखी हनुमानजी का मंदिर है। राम मंदिर, द्वारिकाधीश जी का मंदिर तथा निकट में शिव–पार्वती एवं गणेशजी की भव्य प्रतिमा है। कुछ वर्ष पूर्व तक यहाँ गणेश जी की दो भव्य प्रतिमा थी, जिसमें से एक चोरी चली गई।

किला पहाड़ में शीतला देवी का मंदिर है तथा रास्ते में भी देवी का एक मंदिर है, वर्तमान में किला पहाड़ के उपर तक जाने के लिए पक्की सिढ़ियों का निर्माण करवा दिया गया है तथा प्रकाश की भी व्यवस्था कर दी गई है। जागी पहाड़ के नीये कंकाली मंदिर स्थित है। कहा जाता है कि यहॉ के पुजारी को लगातार सपने आने लगे कि यहां देवी–देवताओं की मूर्तियां भू–गर्व में दबी हुई है। पुजारी ने राजा को अपने सपनों के बारे बताकर खुदाई करवाने को कहा, किन्तु राजा ने उस पुजारी के बातों की उपेक्षा कर दी। पुजारी द्वारा अनिष्ट की आशंका जाहिर करने पर, इस जगह की खुदाई करवाई गई। कंकाली माता, काल भैरव, हनुमान, बेताल आदि की भव्य मूर्तियां खुदाई से निकली। राजा ने इनके पूजा पाठ के लिए पुजारी को 300 एकड़ जमीन प्रदान की। कंकाली माता मंदिर के पास एक पत्थर पर अज्ञात लिपि में कुछ शब्द भी अंकित है। कांकेर शीतला पारा में शीतला देवी मंदिर पर्यटकों के लिए दर्शनीय स्थल है। कांकेर राजमहल में भी मां दंतेश्वरी का मंदिर है।

आवासीय सुविधाः राष्ट्रीय राजमार्ग –43 पर जिला मुख्यालय के रूप में कांकेर में पर्यटकों के लिए सारी सुविधाएं उपलब्ध है।

अन्य दर्शनीय स्थलः समूह पर्यटन के रूप में कांकेर के आसपास के अनेक पर्यटक स्थल चर्रे–मर्रे जलप्रपात, सिहावा बॉध, किला पहाड़ पर स्थित दो गुफाएँ, कांकेर से 23 कि.मी. दूर काना गॉव स्थित धारपारूम, कांकेर से 20 कि.मी. दूर मलाजमुण्डम जलप्रपात का पर्यटन पर्यटकों द्वारा किया जा सकता है।

इन स्थलों का पर्यटन पूरे वर्षभर संभव है तथापि जलप्रपातों का आकर्षण तथा आस्था केन्द्रों व मंदिरों की दृष्टि से शारदीय नवरात्र का समय अर्थात् अक्टूबर का माह सर्वोत्तम होता है। बस्तर में पर्यटन की अत्यधिक संभावनाएं है तथा कांकेर बस्तर के पर्यटन स्थलों का उत्तरी द्वार है। कांकेर से दक्षिण बस्तर के भोपालपट्टनम तक अनेक पर्यटन स्थल पर्यटकों को मौन आमंत्रण देते हैं।

अब्दुल अजीज खान, कांकेर

जोगीगुफा-उड़कुड़ा

कांकेर जिले का चारामा क्षेत्र विपुल खनिज संपदा के साथ सास्कृतिक एवं पुरातात्विक महत्व लिए हुए है, इसके प्रमाण में आज भी क्षेत्र में प्राचीन महत्व के शिलालेख, मूर्तियां, कौड़ी, ताम्रपात्र, औजार एवं अन्य प्राचीन वस्तुऐं समय–समय पर मिलती रहती है। जिले के इस पहचान के प्रति लोग आकृष्ट हुए लेकिन अमूल्य कलासंपदा और नीधियों से परिपूर्ण जिले के दुर्लभ स्थानों के प्रति जागरूकता का अभाव सा दिखाई देता है।

चारामा विकासखंड के ग्राम उड़कुड़ा जो लखनपुर से राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 43 से मात्र 3 कि.मी. में बसा है, गांव के पूर्व दिशा में 3 विशाल पर्वत श्रृंखलाऍं है। इनके मध्य एक छोटे पहाड़ी टीले में एक गुफा है जिसे ग्रामीण " जोगीगुफा" कहते हैं। जोगी शब्द संत महात्मा विद्वान के विशेषण के लिए प्रयोग किया गया लगता है, क्योंकि जोगीगुफा में महर्षि व्यास, नारायण की मूर्ति और धर्मराज यूधिष्ठिर की न्यायकुर्सी रखी हुई है, हैरत की बात है कि बस्तर अंचल में देवी देवता, भूत–प्रेत, जादू–टोना आदि के मानने का रिवाज है। आदिम संस्कृति से युक्त इस क्षेत्र में धर्मराज के नैतिक मूल्य और संत की शिक्षा शक्ति की अराधना करते देख सुखद आश्चर्य होता है। शायद यही कारण है कि आज भी गांव के वातावरण में धार्मिक व नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था दिखाई पड़ती है। गांव में मान्यता है कि अधार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों को धर्मराज यूधिष्ठिर खुद किसी न किसी रूप में दंडित करते हैं। इसी कारण गांव के लोग सेवा भक्ति और कर्म में ज्यादा विश्वास रखते हैं। गुरू–चेले की पुजा परम्परा अंचल में कब से है, यह बात तो इस गांव के पुजारी श्री ज्ञानसिंह जुर्री भी नहीं जानते। पैतृक सेवा और भक्ति के इस कार्य को वो अपने दादा–परदादा के जमाने से देखते आ रहे हैं। वे इस कार्य को अब भी आगे बढ़ा रहे हैं।

महर्षि वेदव्यास द्वापरयुग के ऐसे संत रहे हैं जिनसे सारा समाज आलौकित हुआ, अपनी दिव्य लेखनी से उन्होंने महाभारत व 18 पुराणों की रचना की। इनकी जयंती आषाढ़ पूर्णिमा को गुरू पूर्णिमा के रूप में मनायी जाती है। इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं। प्राचीन भारत में इसी दिन से शैक्षिक कार्य संपन्न होते थे।

उड़कुड़ा के जोगीगुफा के बारे में बताया जाता है कि छःमासी के समय यहाँ जोगी नाम का एक बाबा निवास किया करता था। इन्हीं की साधनास्थली वर्तमान में जोगीगुफा के नाम से प्रसिद्ध है। यहॉ जाने के लिए ग्राम के तालाब से जैसे ही आगे बढ़ते हैं सामने उंचाई में एक बड़े पत्थर पर दो गड्ढे बने हुए दिखाई देते हैं, जिसे ग्रामीण दो द्वारपाल की गद्दी मानते हैं। इस स्थल पर पत्थरों के खंड ऐसे रखे हुए हैं जैसे यह किसी गुफा का प्राकृतिक प्रवेशद्वार है। वहाँ से लगभग 70 से 80 मीटर अंदर पहाड़ी में जोगीगुफा है। बहुत पहले गुफा में एक जोगी कमंडल व लकड़ी की कुर्सी रखी हुई थी। वर्तमान में यहॉ महर्षि वेदव्यास की मूर्ति और धर्मराज यूधिष्ठिर की न्यायकुर्सी रखी हुई है। जहॉ लोग पान, फूल श्रीफल आदि चढ़ाकर पूजा अर्चना करते हैं। वैसे ग्राम पूजा में सर्वप्रथम मावली देवी की पूजा को महत्व दिया जाता है, देवी पूजा के बाद अन्य धार्मिक कार्य संपन्न होते हैं। दीपावली के दिन यहॉ मनौती व सुख समृद्धि के लिए " नंदिया बैला " चढ़ाया जाता है। ग्रामीण शुभकार्य में ग्राम छोर में विराजमान " बुन्देला मांझी " का स्मरण करना नहीं भूलते। जबकि जोगीगुफा के एक हिस्से में प्रस्तर खंडों से बने " धर्म कचहरी" में लोग पानी मांगने आते हैं समय पर यदि इस क्षेत्र में वर्षा नहीं होती तो ग्रामीण यहॉ पानी की फरियाद लेकर आते हैं। पूजापाठ करते हैं और रामायण का पाठ करते हैं, फिर पानी का गिरना लगभग निश्चित है। रामायण पाठ प्राचीन शैली में गाया जाता है, फरियाद पूर्ण होने पर यहां हवन किया जाता है। जोगीगुफा में चढ़ावे के रूप में पीली व लाल चादर चढ़ाई जाती है। गुफा में चढ़ाया गया नारियल या अन्य सामग्री घर नहीं ले जाते। यह परम्परा काफी प्राचीन है।

जोगीगुफा के सामने पर्वतश्रृंखला में से दांयी पहाड़ी को पाण्डवों का घर कहते हैं। इस पहाड़ी की उंचाई में कुन्तीनिवास व द्रौपदी निवास है। इन स्थानों पर हर समय जाना मुश्किल है क्योंकि रास्ता बड़ा दुर्गम है। बड़ी मुश्किल से यहाँ तक पहुंचा जा सकता है, वह भी अनुभवी ग्रामीणों, सिरहा व पुजारियों के मदद से ही। कुन्तीनिवास में चांदी का घोड़ा रखा है। पासापाली में पांच बड़े–बड़े पत्थर एक स्थान पर सिंहासन के रूप में रखे हुए है, जिसे पांचों पाण्डवों का आसन माना जाता है। यहीं से कुछ दूरी पर विदूर निवास खोह में चढ़ावे की पेटी रखी हुई है। इन स्थलों पर द्वापर युग में कभी पाण्डवों ने निवास किया था अथवा यहां से होकर गुजरे थे, ऐसी किवंदती है साक्ष्य के रूप में जोगीगुफा में कई प्रमाणस्वरूप पाण्डीपाली व धर्मकचहरी में पत्थरों पर पांच लोगों के सिर टिकाकर बैठने के चिन्ह अंकित हैं। वहीं पत्थर की छत पर " कै पु पां ड" लिखा हुआ है और हाथों के पंजों का निशान भी काफी प्राचीन प्रतीत होता है। रविवार के दिन को यहॉ शुभ मानते हैं। इसे " संतवार" कहा जाता है और इस दिन गुफा में शेर का दर्शन भी होता है।

ग्राम उड़कुड़ा वन जीवों के संरक्षण में वर्षों से योगदान देते आ रहा है। गांव में जंगली कबूतर (पड़की,परेवा) का शिकार वर्जित है, काफी प्राचीन मान्यता के अनुसार गांववाले यदि उस पर्वत से परेवा घर लाते हैं तो वह नाग में बदल जाता है। इसके अलावा " चांदी पत्थर " जिसमें चाँद की आकृति हल्के लाल रंग से बनी हुई है। गढ़ पहाड़ में पाण्डवों की वस्तुओं के भग्नावशेष (तीर,धनुष, हंडी एवं कौड़ी) रखे हैं। अड़हा पहाड़ में भी पुरातन महत्व के भग्नावशेष के होने की बात ग्रामीणजन स्वीकार करते हैं। चारामा के पुरातनस्थलों में उड़कुड़ा का भ्रमण काफी जिज्ञासापूर्ण व मनोरम है।

पहुँच मार्ग – राजधानी रायपुर से 135 कि.मी. कांकेर से 25 कि.मी. एवं ब्लॉक चारामा से 22 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। आवासीय **सुविधाऍं** – जिला मुख्यालय कांकेर में सरकारी रेस्टहाउस, मध्यम एवं उच्चस्तरीय होटल, चारामा में वन विभाग का रेस्टहाउस एवं मध्यम स्तर के होटल एवं लॉज उपलब्ध है।

गोपेन्द्र सिंह ठाकुर

तिलस्मी दण्डक गुफा

बस्तर के भूतल पर गिरि–श्रृखलाएँ, घाटियाँ, कल–कल प्रवाहित धाराएँ, गरजता हुआ रजत प्रवाहमय जलप्रपात, तरूओं से आच्छादित वन प्रांतर, जहाँ किसी भी पर्यटक का मन बाँध लेता है, वहीं भूगर्भीय श्रृंगार के रूप में गुफाएँ, कंदराएँ, जिन पर पड़ित अवशैल–उत्शैल, ड्रीप स्टोन की शुभ्र रत्न सम जटित रचनाएँ मन में अनूठा रोमांच पैदा करते हैं। बस्तर की पहाड़ियों में अनेक चिन्हित–अचिन्हित गुफाएँ हैं, जिनमें विश्व प्रसिद्ध कोटमसर गुफा, कनोहारी अरण्यक गुफा, खूबसूरत दण्डक गुफा, स्वर्गसम सौंदर्ययुक्त कैलाशगुफा आस्था प्रतीक सकलनारायण गुफा, तुलार गुफा आदि प्रमुख हैं।

पहुँच मार्ग :– जिला मुख्यालय जगदलपुर से 29 कि.मी. की दूरी पर दण्डक गुफा स्थित है। कोटमसर ग्राम से आगे एक मार्ग कोटमसर गुफा के लिये और दूसरे मार्ग से दण्डक गुफा पहुंचा जा सकता है। कोटमसर गांव से इसकी दूरी लगभग 6 कि.मी. है।

बस्तर प्रकृति का संगीतमय नैसर्गिक सौंदर्य का अथाह सागर धरा पर फैली वादियाँ, गगनचुंबी श्रृखलाएँ तथा भूगर्भ में अवस्थित गुफाएँ– बस्तर के श्रृंगार हैं। गुफा के क्षेत्रीय बोली में "करपन" या " गड़दा" भी कहते हैं। दण्डक गुफा इन्ही गुफाओं में से एक, अत्यंत विशालकाय, मनोहार तथा रोमांच से भरपूर, अनोखा आनंद देने वाला, पर्यटकों के लिए अनोखा पर्यटन स्थल है। जगदलपुर से कोंटा राजमार्ग पर जगदलपुर से 29 कि.मी. कांगेर राष्ट्रीय उद्यान वन परिक्षेत्र में प्रवेश हेतु कोटमसर नाका है, जहाँ दाहिनी ओर अन्य पर्यटन स्थल तीरथगढ़ के लिए मार्ग है, वहीं बाईं ओर कांगेर वन परिक्षेत्र अंतर्गत ग्राम कोटमसर हेतु मार्ग जाता है। कोटमसर ग्राम से आगे मार्ग पुनः दो भागों में बंट जाता है, जहॉ से एक मार्ग विश्व प्रसिद्ध कोटमसर गुफा के लिए तथा दूसरा मार्ग जैवमण्डल परिक्षेत्र की ओर ले जाता है। राजमार्ग के पास लगे वन विभाग के नाका में प्रवेश शुल्क अदा कर इस वन परिक्षेत्र में प्रवेश किया जा सकता है। वन विभाग द्वारा गाईड की व्यवस्था की जाती है। नाका के पास ही से सड़क के समानान्तर दाहिनी ओर कांगेर नदी प्रवाहित है, जिसके कल–कल की सुनाद के साथ प्रवाहित जलधारा मार्ग में यदा–कदा दृष्टव्य होकर पर्यटन के आनंद को दुगना कर देती है। द्विविभाज्य मार्ग से आगे तथा कोटमसर ग्राम से कुल 6 कि.मी. दूर जाने पर जहॉ दाहिनी ओर नदी प्रवाहित है, वहीं बाईं ओर पर्वत श्रृंखलाएँ फैली हुई है। कहीं–कहीं पर इन पर्वतों की चोटियॉ गगनचुंबी हो जाती है। 6वें कि.मी. पर बांयी ओर ऊँची पहाड़ी पर चढ़ने हेतु मिट्टी को काटकर तथा बॉस के टुकड़ों की सहायता से सीढीयॉ निर्मित है, तथा पक्की सीढ़ियों का निर्माण प्रस्तावित है। इन सीढ़ियों द्वारा लगभग 300 मीटर की ऊँचाई पर घने वन कुंज के बीच पहाड़ पर एक सीधी–सपाट चट्टान है। इसी भाग में एक गुफा द्वार अवस्थित है, जिसका ज्ञान आदिवासी समुदाय को काफी पहले से था। लाला जगदलपुरी ने इस गुफा का नाम "शिव–पार्वती गुफा" दिया है। क्षेत्र के आदिवासी अनिष्ट की आशंका से इस गुफा के बारे में कुछ नहीं बताते थे। मार्च 1995 में वन में लगी आग पर नियंत्रण हेतु निकले वन विभाग के गश्तीदल ने कुछ लोगों को यहॉ पर बैठे देखा, तभी वन परिक्षेत्राधिकारी पतिराम तारम को इस गुफा की जानकारी मिली तथा उन्हें इस गुफा को उजागर करने का श्रेय जाता है। वर्तमान में गुफा द्वार पर लोहे का गेट बना दिया गया है। अन्वेषक के गुफा में प्रवेश से उनके अस्वस्थता को जोड़ते हुए इसे दैवीय दण्ड माना गया। इसलिए इस गुफा का नाम "दण्डक गुफा " पड़ा।

दण्डक गुफा के प्रवेश द्वार से अंदर अंधकार का साम्राज्य है। शक्तिशाली टॉर्च या पेट्रोमेक्स की सहायता से प्रवेश करने पर द्वार के निकट से ही भीतर की ओर ढलान प्रारंभ हो जाती है, जो एक बड़े कक्ष तक जाती है। इस विशाल कक्ष में छत पर अवशैल तथा धरातल पार उत्शैल के बड़े–बड़े शुभ्र धवल शिलाखण्ड अत्यंत मनोहारी हैं। झाड़फानूस की भॉति छत पर अवशैल समूह की रेकों पर झिलमिलाते जल कण मन में अनोखा रोमांच पैदा करती हैं। दृष्टि अनथक, अपलक रूप से प्रकृति के कुशल चितेरे की इस अनूठी कारीगरी को अभिमूत होकर निहारती रहती है, कहीं अवशैल तथा उत्शैल मिलकर ड्रीपस्टोन के रूप में विशाल स्तम्भ की आकृति में छत को सहारा देता हुआ प्रतीत होता है। इस विशाल कक्ष में अनेक स्तंभ विभिन्न रूपों में है। कुछ शिलाखंड मानो किसी तपस्वी की मुद्रा में एकपदीय रूप में खड़े होकर बरसों से तपस्या में लीन रहने का भान कराते हैं।

इस विशाल कक्ष से एक अत्यंत संकीर्ण तथा दुर्गम मार्ग द्वारा गुफा के अन्य भाग में पहुँचा जा सकता है। जो पुनः एक अन्य विशाल कक्ष में पहुँचाता है। इस कक्ष में एक ओर कुएँ की भॉति गहराई बनी हुई है। इसके मध्य भाग से एक विशाल स्तम्भ ऊपर छत तक लाता है। यह अत्यंत अद्भूत है। इस स्तंभ के चारों ओर गहराई के रूप में बनी कुएँ जैसी आकृति में से नीरवता की स्थिति में जल के कल–कल के प्रवाह की सी ध्वनि गूँजती है, मानो जल स्त्रोत का प्रवाह कहीं भूगर्भ में प्रवाहित हो रहा हो। दण्डक गुफा तक का पर्यटन स्वयं के दोपहिये वाहन या कार, जीप आदि से असंभव है। कोटमसर नाका से वन विभाग द्वारा गार्ड, गाईड की व्यवस्था सामान्य शुल्क अदा कर प्राप्त की जा सकती है। चूँकि गुफा का श्रृंगार ही अंधकार है, इसलिए पेट्रोमेक्स व शक्तिशाली टॉर्च गुफा में प्रवेश व अवलोकन हेतु आवश्यक है।

अन्य दर्शनीय स्थल :– कोटमसर गुफा, अरण्यक गुफा, कांगेर धारा, कैलाश गुफा, सकल नारायण गुफा, तुलार गुफा, तीरथगढ़ चित्रकुट जलप्रपात आदि। आवासीय सुविधा – जगदलपुर से निकट होने के कारण विश्राम की सुविधा जगदलपुर में ही पर्यटकों के लिए सुविधाजनक है, तथापि कोटमसर ग्राम में वन विभाग द्वारा निर्मित विश्राम भवन है। जहॉ पर्यटक अनुमति प्राप्त कर विश्राम कर सकते हैं।

डॉ. आभा तिवारी, भिलाई

मण्डवा जलप्रपात

प्रकृति की गोद में अठखेलियां करता हुआ बस्तर नैसर्गिक सुदरता का अथाह सागर है. बीहड़ वीराने में खामोशी को तोड़ती किसी नदी या नाले की कल–कल का सुनाद. उद्दाम जल प्रवाह. एकाएक चट्टानों से सीधे नीचे को गिरता हुआ जलप्रपात किसी भी पर्यटक को बरबस ही अपने पाश में बांध लेता है. किसी परीकल्पना या कवि के सौंदर्य की कल्पना अगर कहीं साकार होती नज़र आती है. तो बस्तर में बिखरे वन सौंदर्य. बलखाती घाटियां. भूगर्भित गुफाएँ. आकाशोन्मुखी पवर्तमालाएँ.कल–कल बहते झरनों में समाई पड़ी है, इसी श्रृंखला में एक बेहद खूबसूरत, पर्यटकों के मन को बांध लेने में सक्षम जलप्रपात है – " मंडवा जलप्रपात" !

जगदलपुर से गीदम राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 16 पर जगदलपुर से 31 कि.मी. दूर ग्राम मावलीभॉटा है, जहॉ से 5 कि.मी. दक्षिण की ओर मंडवा जलप्रपात है। जलप्रपात तक जाने हेतु एक मार्ग रायकोट से 7 कि.मी. दूर है, किन्तु वाहन जलप्रपात स्थल से 3 कि.मी. दूर छोड़ना पड़ता है, जबकि मावलीभॉटा से 2 कि.मी. पहले बांयी ओर रेलवे क्रांसिंग के बाद जलप्रपात से मात्र 1 कि.मी. दूर तक वाहन द्वारा पहुंचा जा सकता है। जलप्रपात तक पहुंचने से पूर्व पहाड़ी नाले के प्रवाह को पत्थरों से पक्के रूप में बांधकर पानी को रोकने का प्रयास किया गया है, जिसके दूसरी तरफ दरखतों की लंबी श्रृंखला है, एवं इन दरखतों के पार " मूनगाबाहार" नाला लगभग 20 कि.मी. दक्षिण–पश्चिम की ओर ग्राम कटेनार, गूमडपाल, पखनार की पहाड़ियों से निकलता है, जहां निकट ही मूनगाग्राम भी स्थित है, स्थानीय भाषा में नाला का " बहार" भी कहते हैं। इसलिए इस नाले को क्षेत्रीय लोग " मुनगाबहार" के रूप में जानते हैं। यहॉ वर्ष भर पानी प्रवाहित होता है। किन्तु ग्रीष्मकाल में इसका प्रवाह अत्यंत क्षीण हो जाता है। इसी मुनगाबहार नाले पर सोपानबद्ध रूप में जलप्रवाह लगभग 70 फीट उंचाई से फथरीली चट्टानों की गहराईयों में अत्यंत मनोहारी रूप लेता हुआ गिरकर जलप्रपात बनाता है। इस जलप्रपात में सोपानमय समतल चट्टानें इसे एक सुंदर पिकनिक स्पॉट के रूप में पर्यटकों तथा आसपास के लोगों में मशहूर करती हैं। इन चट्टानों की चौंड़ाई कहीं कहीं 200 से 300 फीट है। इस जलप्रपात से दोनों ओर पेड़–पौधों का घना झूरमूट है, जलप्रपात के एक ओर पथरीली टेकरी बनी हुई है, जिसका उपरी भाग चौरस है। इस समतल भाग पर शिवलिंग तथा नंदी की पाषाण मूर्तियॉ स्थापित है। पास ही पेड़ के पास एक बड़े से शिवलिंग के आकार का पाषाणखंड रखा है, इसके निकट भी 7–8 नंदी बैल की मूर्तियॉ है, इस शिवालिंगाकृति पाषाणखंड के संबंध में क्षेत्रवासियों में जनश्रुति प्रचलित है कि यदि कोई नवविवाहित दंपत्ति या संतानहीन जोड़ा, संतान कामना लेकर वहॉ जाए और इस शिवलिंगाकार पाषाणखंड को एक हाथ से सीधा पकड़कर उठा ले तो उसे पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। इसलिए भी अनेक भक्तजन जलप्रपात के निकट इस स्थल तक जाते हैं तथा स्थापित शिवलिंग व नंदी की मूर्तियों की पूजा करते हैं।

इस चौरस स्थल के आसपास फूलों के पौधे उगे हुए हैं, हवा को झोकों से गिरनेवाले फूलों द्वारा मानो प्रकृति भी शिवपूजन में लीन रहती है। इस उंचे स्थल से शाम में निहारने पर जलप्रपात के संपूर्ण स्वरूप को एकसाथ देखा जा सकता है। दूर से रजतमय जलप्रवाह का सीढ़ी दर सीढ़ी पत्थरों के कटाव से होकर नीचे उतरना, जलनिपात के कारण पानी के बूंदों की फुहार नीचे जाकर संकलित होते हुए जलकुंड के रूप में दिखाई देती है, जिस पर आसपास के पेड़पौधों व उंचे टीलों की परछाईयॉ अद्भूत दृश्य उपस्थित करती है। जलकुंड से होकर जलधारा पुनः सरिता के रूप में पहाड़ी चट्टानों से बलखाती हुई दूर बीहड़ो में खो जाती है। आगे जाकर मुनगाबहार नाला एक अन्य नदी कांगेर में जाकर मिल जाता है, जो तीरथगढ़ जलप्रपात का निर्माण करता है।

मण्डवा जलप्रपात की खूबसूरती, कूदरत का अनोखा करिश्मा जो तेजी से पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित होता जा रहा है। जलप्रपात तक व्यवस्थित पहुंचमार्ग का न होना सबसे एक बड़ा बाधक है। इसके पर्यटनस्थल के रूप में विकसित होने से मण्डवा जलप्रपात पर्यटन के साथ ही निकट स्थित पुरातत्व महत्व के देवालय विश्वकर्मा मंदिर, जो जीर्णवस्था में ढोढरेपाल ग्राम अंतर्गत अवस्थित है, दोनों पर्यटन स्थलों का आनंद एक साथ समूह भ्रमण के रूप में लिया जा सकता है।

मण्डवा जलप्रपात जगदलपुर शहर से मात्र 36 कि.मी. दूर होने के कारण कुछ घण्टों में ही पर्यटन उपरांत यहॉ से वापस लौटा जा सकता है। विश्राम व भोजन व्यवस्था जगदलपुर या निकटस्थ विकासखंड मुख्यालय तोकापाल में संभव है, इसलिए मण्डवा जलप्रपात के पर्यटन के लिए स्वयं के दोपहिए या जीप, कार आदि द्वारा पेयजल, भोजन, जलपान आदि के साथ जाना सर्वोत्त्म है। मण्डवा जलप्रपात पर्यटकों के लिए अनोखा आनंद देने वाला तथा स्मृतिपटल पर स्थाई रूप से अंकित होनेवाला खूबसूरत पर्यटनस्थल है।

पहुँच मार्ग – जिला मुख्यालय जगदलपुर से गीदम राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 16 पर जगदलपुर से 31 कि.मी. दूर ग्राम मावलीभांटा है, जहॉ से 5 कि.मी. दक्षिण की ओर ग्राम मण्डवा के निकट ही मण्डवा जलप्रपात है।

आवासीय सुविधाएँ – चित्रकुट में सरकारी रेस्टहाउस तथा जगदलपुर में उच्च तथा मध्यम स्तरीय होटल, लॉज एवं प्रशासनिक गेस्टहाउस उपलब्ध है।

अन्य दर्शनीय स्थल – तीरथगढ़ जलप्रपात, कुटुम्बरसर गुफा, चित्रकोट जलप्रपात, चित्रधारा, कैलाशगुफा, कांगेरघाटी राष्ट्रीय उद्यान, तिरिया वन क्षेत्र, कोसा रटैड़ा जलाशय, बारसूर आदि ।

संदीप झा, रायपुर

कंकालीन - खारून नदी का उद्‌गम स्थल एवं श्रद्धा का केन्द्र

कंकालीन देवी की मान्यता के पीछे एक लोक कथा कही जाती है । चिरामसिंह नामक आदिवासी जीविकोपार्जन के लिये शाम को घने जंगल जाकर महुआ संग्रह किया करता था। प्रतिदिन महुआ जमाकर वह चट्‌टानों पर रख देता और फिर अधिक महुआ की तलाश में निकल जाता। रात होते–होते महुआ उठाने जब वह पूर्व स्थान पर लौटता था, तब महुआ की मात्रा कम होती दिखती, फिर भी जो मिलता उसे झोली में रखकर वह घर लौट आता ।

एक दिन महुआ बीनते–बीनते उसे काफी देर हो गई। अंधेरी रात में न महुआ दिखाई देता था, और न ही रास्ता, तभी एक दिव्य आकृति उसके सामने प्रकट हुई, चिराम घबरा गया, क्या करे, क्या न करे, परन्तु आकृति ने उसे ढ़ाढ़स बंधाते हुए कहा कि चिराम तुम घबराओ नहीं, मै तुम्हारी देवी हूँ । तुम अच्छी तरह महुआ बीन लो और घर जाकर हमेशा ही मेरी उपासना करते रहना।

यह कहकर आकृति विलुप्त हो गई, परन्तु उसे महसूस हुआ ज्यों अंधकार में भी कोई उसे रास्ता दिखा रहा है और उसका साथ निभा रहा है, लौटकर रात यों ही बीत गई। सुबह उसने घर के सदस्यों से और गाँव वालों से घटना का जिक्र किया। सभी प्रसन्न हो गये, सबको अनुभूति होने लगी, ज्यों देवी माता उनके गाँव आना चाहती है, फिर सब लोगों ने एक संकल्प लिया कि गाँव में देवी की स्थापना करेंगे। इस तरह गाँव में कंकालीन देवी की स्थापना हुई, कहा जाता है कि देवी ने चिराम को त्रिशुल उपहार में दिया था, आज भी वह मंदिर में स्थापित है, कंकालीन शक्तिदेवी दुर्गा का प्रतिरूप है। चिराम सिंह के वंशज ही अब तक कंकालीन की पूजा और मंदिर की देखरेख कर रहे है।

राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 36 में स्थित मरकाटोला से यह 3 कि.मी. दूर है एवं गुरूर से 16 कि.मी. और जिला मुख्यालय बालोद से 36 कि.मी. दूर घने जंगलों में स्थित है । खारून नदी के उद्‌गम स्थल कंकालीन गांव में प्रतिवर्ष पारम्परिक रूप से कंकालीन दशहरा मनाया जाता है। खासियत यहां यह है कि यह दशहरा पितृमोक्ष अमावस्या के तुरंत बाद आने वाले मंगलवार में ही आयोजित होता है । आम दशहरे की तरह कंकालीन दशहरा बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक नहीं माना जाता, न कोई वहां रावण का संहार किया जाता है दशहरे के नाम पर केवल वहां मंडई–मेले जैसी भीड़ दिखाई देती है और श्रद्धालुजन कंकालीन देवी की पूजा–अर्चना करते दिखाई पड़ते हैं।

खारून नदी के उदगम का स्वरूप झरना यहां की प्राकृतिक सुंदरता में और भी अभिवृद्धि कर देता है, मंदिर भव्य चट्‌टान पर निर्मित है, देवी की प्रतिमा काल्पनिक रूप से क्षेत्र के मूर्तिकार ने बनाई है । चिराम बाबा का लाया त्रिशूल देवी माँ के हाथों में सुसज्जित है, चिराम के निधन के बाद लगातार उनकी वंशावली के लोग ही बइगा का कार्यभार संभाल रहें है ।

देवी के चमत्कार :– कहा जाता है कि देवी के प्रांगण में पहुँचने व उनके दर्शन मात्र से रोगों व दोषों से मुक्ति मिलती है । 25 वर्ष पूर्व जब मै व्यंग्यकार प्रदीप मेहता के साथ कंकालीन दशहरा देखने गया था, तब मैने जो रोमांचक दृश्य देखा था, आज भी नहीं भुला सकता औरतें जमीन पर लेटी थी और ध्वजधारी उनके उपर पैर रखकर निकल जाते थे, एक मान्यता थी कि ऐसे करने से देवी का आशीर्वाद मिलता है और संतान सुख की प्राप्ति होती है। इसी तरह मान्यता है कि कंकालीन देवी जीर्ण से जीर्ण रोगो का प्रतिकार करती है, यहां तक कंकालीन का नाम लेकर जलते अंगारों पर चलने से बाल भी बांका नही होता ।

कंकालीन दशहरा कब से मनाया जा रहा है, बता पाना कठिन है, देवी दर्शन का लेकर उमड़ती भीड़ ही कालान्तर में मेले का पर्याय बन गया है, ऐसा कहा जाता है मंगलवार देवी के लिये शुभ है। होलिका दहन भी यहां 15 दिन पूर्व मनाया जाता है। क्वांर और चैत्र नवरात्रि में यहां ज्योतिकलश जलाए जाते है, पूरे 9 दिन ही मेले का सा दृश्य रहता है । गोंड़ों के देवताओं के अलावा यहां प्रसिद्ध पुजारी लोगो की भी प्रतिमूर्तियां पूजनीय है। कंकालीन देवी के अविर्भाव और स्थापना के साथ पेटेचुवा गांव का नाम कंकालीन पड़ गया है। पूरे क्षेत्र में मान्यता है कि कंकालीन देवी की आराधना से रोगमुक्ति होती है, निःसंतानों को संतान सुख मिलता है और परिवार–समाज में सुख–समृद्धि का समावेश होता है।

डॉ. प्रकाश पतंगीवार, रायपुर

तुरतुरिया - प्राकृतिक एवं सौन्दर्य की अनुपम स्थली

राजधानी रायपुर से 123 कि.मी. सिरपुर से 40 कि.मी. दूरी पर धार्मिक ऐतिहासिक नगरी तुरतुरिया स्थित है। रायपुर एवं महासमुंद से सिरपुर के लिये नियमित बस सेवाएं उपलब्ध है जिससे यात्रा किया जा सकता है । संत वाल्मीकि की नगरी के रूप में विख्यात तुरतुरिया सिरपुर समे 40 किमी की दूरी पर स्थित धार्मिक ऐतिहासिक नगरी है। तुरतुरिया शब्द की उत्पत्ति ध्वनि अनुकरणात्मक की वजह से मानी जाती है । तुरतुर की आवाज से बहता झरना अपनी कलात्मकता और मधुरता लिये जैसे इस स्थान का निरन्तर बहते हुये जाप करता है तुरतुरिया में प्राकृतिक झरने बहुत ही मनोरम और आकर्षक स्वरूप में लोकप्रिय पर्यटन स्थल का आंनद देते है। एक और मत है कि इस क्षेत्र बालमदेही का दूसरा नाम सुरसुरी गंगा था और तुरतुरिया इसका अपभ्रंश स्वरूप है ।

तुरतूरिया में बहुत सी मूर्तियां प्राप्त हुई है, जो शैव काल की बौद्ध एवं जैन धर्म संबंधित ये मूर्तियां 6 वी. एवं 7 वी. शताब्दी की है जो तुरतुरिया के सिर के समकालिन प्रतीक है । पुरातात्विक वैज्ञानिक जे. ओ. बेगलर उत्खनन में छोटे–छोटे कई खम्भों कर खोज की थी उनके उत्खनन शोध कार्य को उन्ही के शब्दों में वहां पर कुछ खम्भें बहुत ही विचित्र वह नीचे से चौकोर है ,चौकोर हिस्सा मात्र अलंकृत है बिना किसी सजावट के इसके उपर अष्टकोशीय फैला हुआ शिखर व खम्भे का गोलाकार पतला हिस्सा निकला हुआ है, शिखर खुद भी एक चौकोर शीर्ष फलक समे ढका हुआ है खम्भों का छोटा आकार उनके इस्तेमाल के निर्धारण करने को मुश्किल बनाते है। वो छत जो थी दरवाजे के बाजू को सहारा देने के लिए इस्तेमाल नहीं की जा सकती थी। बेगलर द्वारा यह सब 8 वीं सदी में बनाये गये थें ।

शेष स्तूपों के अवशेष कुछ घाटों पर पाये गये जहां लोग नहाने का मजा लेते है। यह मंदिर बहुत ही अच्छे उदाहरण प्रस्तुत करते है। वास्तुकालीन वैभव खासतौर पर विभूषित खम्भे व दरवाजों के बाजू वास्तव में तुरतुरिया बहुत ही लुभावनी खोजों में से एक है यहां बहुत से अवशेष अभी भी मौजूद हैं , जिन्हें खोजा जाना अभी बाकी है।

स्थानीय निवासियों के लिए यह क्षेत्र धार्मिक आस्था से जुड़ा हुआ है। संत वाल्मीकि की नगरी के रूप में प्रसिद्ध इस नगर में ही वाल्मीकि रामायण की रचना की गई है । संतो का आश्रम में माता सीता भी पहाड़ की चोटी पर स्थित है मान्यता है कि इसी आश्रम में माता सीता ने अपने जुड़वा बच्चों लव–कुश को जन्म दिया था। भगवान राम को वनवास के समय यहीं पर शरण दी थी। तुरतुरिया धार्मिक एतिहासिकता लिये अपने प्राकृतिक सौन्दर्य से अलंकृत एवं वैभवशाली नगरी है ।

नीता देशमुख, भिलाई

ईटों के प्राचीन मंदिरों का गढ़ - खरौद

मंदिरों के वैभवशाली इतिहास में छत्तीसगढ़ हमेशा से अग्रणी माना जाता रहा है, इतिहास गवाह है कि यहाँ कई प्रतापी राजाओं ने लंबे समय तक शासन करते हुये छत्तीसगढ़ की धरा में अनेक उतकृष्ट एवं भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया, जो हमेशा से ही भक्तों की आस्था का केंद्र रहें हैं। इसी कारण से इन मंदिरों की प्रसिद्धि दूर–दूर तक फैली हुई है। ये मंदिर संस्कृति एवं वैभव के सर्वोत्कृष्ट नमूने होने के साथ पर्यटकों के आकर्षण के केंद्र भी है। प्राचीन समय में बने ये मंदिर आज भी अपनी एतिहासिकता की गाथा बयां करते हैं। ऐसा ही एक भव्य मंदिर खरौद गांव स्थित लक्ष्मणेश्र महादेव मंदिर है, इस मंदिर की खासियत जानने के लिये हमने उसके इतिहास का जायज़ा लिया।

लक्ष्मणेश्र मंदिर प्रारंभ से भक्तों की आस्था एवं श्रद्धा का प्रतीक माना जाता रहा है। प्रभु भोलेनाथ अपने भक्तों पर हमेशा कृपा बनाये रहते हैं। खरौद 21 अंश उत्तरी अंक्षाश एवं 82 अंश 32 पूर्वी देशांतर से बिलासपुर से लगभग 70 कि.मी. तथा शिवरीनारायण से 4 कि.मी. की दूरी पर जांजगीर, चांपा जिले में स्थित है। खरौद वैसे तो एक छोटा सा गांव है, किंतु यह स्थल यहां स्थित ईटों के प्राचीन मंदिरों के कारण दूर–दूर तक प्रसिद्धि है। प्राचीन समय में यहां पर बहुत से मंदिरों का निर्माण हुआ, जिसमें से अधिकांश तो नष्ट हो चुके हैं, पर जो बसे हैं उनमें से आंदल–देऊल मंदिर, शवरी मंदिर, लक्ष्मणेश्र मंदिर एवं ईशानेश्वर मंदिर आज भी अपने विशेष स्थापत्य एवं उत्कृष्ट वास्तुकला के कारण अद्वितीय एवं दर्शनीय है।

आज भी विद्यमान है शबरी मंदिर के भग्नावशेष :– यह मंदिर गाँव के दक्षिणी छोर पर एक ऐतिहासिक सरोवर के पश्चिमी तट पर स्थित है। सरोवर के दक्षिणी छोर पर किसी प्राचीन मंदिर के भग्नावशेष विद्यमान है। पूर्वाभिमुख एवं तारकाकार भू–संयोजना में यह मंदिर सिरपुर के लक्ष्मण मंदिर के सादृश्य ही है, जिसमें गर्भगृह व सामने स्तंभों पर आधारित मंडल सन्निहित है। पिछली शताब्दी में मंदिर में बड़े पैमाने पर जीर्णोद्धार किया गया। जिसके प्रमाण मंदिर के शिखर, नागर व मंडप की दीवारों पर देखे जा सकते हैं। मंदिर का शिखर नागर शैली में बनाया गया हैं। मंडप में 2–2 पंक्तियों में 6–6 स्तंभों की योजना है एवं उन पर उत्कीर्ण मूर्तियॉ राजिम के मंदिर में साम्यता रखती है। बाह्य भित्तियों परवर्ती काल में निर्मित हुई है। प्रवेश द्वार की द्वार शाखाओं के अधोभाग पर दोनों ओर नदी देवियों गंगा एवं यमुना का अंकन है, जिसके शीर्ष दल पर गरूड़ को दो भागों में पूँछ पकड़े दिखाया गया है। जिनका उर्ध्व भाग मानव रूप में है, जिन्हें मण्डप में कुछ देवी–देवताओं की आदम कद प्रतिमाऐं रखी हुई है। इन्हें आस–पास के भग्न मंदिरों से संग्रहित किया गया है। गर्भगृह की भित्तियों पर चूना प्रलेपित है। भद्रस्थ की सभी देव प्रतिमां संरक्षित हैं। शैलीगत वास्तुकला के आधार पर इसका निर्माण काल सातवीं सदी के मध्यकाल में रखा जा सकता है।

पहुँच मार्ग – राजधानी रायपुर से 170 कि.मी., बिलासपुर से 70 कि.मी. तथा शिवरीनारायण से 4 कि.मी. की दूरी पर जांजगीर चांपा जिले में स्थित है। निकटतम रेल्वे स्टेशन जांजगीर चांपा है।

उत्कृष्ट नमूना है आंदल देऊल मंदिर :– प्रस्तर की लगभग 4 फीट ऊँची पीठिका पर निर्मित यह मंदिर भरी ईंटों का बना हुआ है। पश्चिमाभिमुख यह मंदिर भी दक्षिण कोशल के तारकाकार मंदिर परंपरा का ही एक उत्कृष्ट उदाहरण है। वर्तमान में मंदिर का गर्भगृह मात्र ही सुरक्षित है। जिसका शिखर भग्न है। मंदिर का गर्भगृह वर्गाकार एवं 6 फीट 3 ईंच आकार का है। मंदिर की बाह्य भित्तियों के ऊपर भद्रस्थ व कर्णरथों पर गजलक्ष्मी, नृत्य गणेश, नृसिंह, ऐरावत पर सवार इंद्र, दसभुजी दुर्गा, गरूड़ासीन विष्णु, कुबेर एवं महिषासुर मर्दिनी आदि की प्रतिमाओं का अंकन है। संपूर्ण मंदिर को कभी चूने से प्रलेपित किया गया था। जिसके अवशेष अभी भी यत्रतत्र विद्यमान है। गर्भगृह का प्रवेश द्वार अपने उत्कृष्ट अलंकरण के कारण प्रसिद्ध है।

सवा लाख छिद्रों से निर्मित भव्य शिवलिंग :– खरौद में शिव के विराट स्वरूप की पूजा दूल्हादेव के रूप में की जाती है। शिव के साथ शक्ति एवं कंकालीन देवी की पूजा ग्राम देवी के रूप में की जाती है। नगर प्रवेश द्वारों पर तालाब में नगर प्रवेशद्वारों पर तालाब एवं उनके किनारे भव्यमंदिर स्थित है। इसमें भगवान शंकर, लक्ष्मणेश्र मंदिर के पूर्व में शीतला माता का मंदिर एवं उत्तर में श्रमसागर का देवधरा तालाब और हनुमानजी की कीर्तिपताका, दक्षिण में शबरी देवी का कलात्मक मंदिर विद्यमान है। मध्य में इंदल देव का मंदिर पर्यटकों के खास आकर्षण का केन्द्र है। इन मंदिरों मे सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन मंदिर है – लक्ष्मणेश्र महादेव मंदिर। सिरपुर के चन्द्रवंशी राजाओं द्वारा बनाए गए इस मंदिर में एक खण्डित शिलालेख में इंद्रबल एवं ईशानदेव नामक दो शासकों का उल्लेख है। यहॉ ई. सन् 1192 के एक शिलालेख में कलिंगराज के रत्नदेव तृतीय हैह्यों की पूर्ण वंशावली के विवरण है। 1300 साल पुराने 8वीं शताब्दी के इस मंदिर के गर्भगृह में एक अद्भूत व अनोखा शिवलिंग है, इसमें सवा लाख छिद्र हैं। इस संबंध में प्राचीन मान्यता है कि लक्ष्मण लंका दहन के बाद जब वापस अयोध्या लौट रहे थे तब वे कुष्ठ रोग से पीड़ित हो गए और वहीं गिर गए। तब उन्होंने सवा लाख शिवलिंग बनाकर भगवान शंकर का आह्वान किया तभी शंकर भगवान ने उन्हें ठीक कर दिया। यहॉ पर हर वर्ष फरवरी माह में मेला भरता है और महाशिवरात्रि का भव्य मेला लगता है। राजधानी रायपुर से लगभग 165 कि.मी. दूर स्थित है, महानदी, शिवनाथ एवं जोंक नदी का संगम स्थल शिवरीनारायण। यहॉ से लगभग 3 से 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है खरौद, जहां शिव मंदिर व शैवमठ के कारण शिवाकांक्षी कहलाता है।

दीनदयाल साहू, भिलाई

बाबा गुरूघासीदास जी की तपोभूमि-गिरौदपुरी

छत्तीसगढ़ में तीज त्यौहार, मेला मड़ई का विशेष महत्व है धार्मिक भावनाओं, सद्विचारों, नवसोच, आत्मीयता, नवसंगम और उमंग का सौरभीय प्रेम पंखुड़ियॉ मुदिता में विकसित होती है। मेला–मड़ई के माध्यम से संस्कारों की संवृत्ति संवरण प्रेरणा सुख शिक्षा और सम्मान के आत्मसात की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है।

श्रद्धा के संवाहक, विश्वास के मूल अनुराग के सुरक्षित सुमन, एकता का समीर, समता का प्रकाश, हमारी इन परम्पराओं में रचे बसे है। मेला और मड़ई...मानव जीवन के उमंग, और आस्था के अभिन्न अंग है। मानव जीवन एक वृक्ष है तो हमारी परम्पराएं कुलकित मनोहर सुमन है। शास्त्रों–पुराणों के उदार पृष्ठों की परमगाथा इन्हीं परम्पराओं की अविरल धारा में शब्दवार गूंजित होती है।

वर्षा ऋतु के पश्चात् शरद का आगमन होता है, धरती हरीतिमा का श्रंगार करती है। वसंत तक पूर्ण यौवना होकर फिजा में मादकता भर देती है। सूर्य की सुहानी स्वर्णिम किरणें, परिमल के साथ बहती हवा नव पादपों से पौढ़, वृक्षों की कोमल टहनियों में पक्षियों का कलरव, कोयल की कूक, भौंरों का गूंजन, तितलियों का नैसर्गिक श्रंगार, कलियों की मुस्कान, फूलों का हँसता चेहरा इस धरती को सतलोकसम बना देता है ऐसे समय में धरती की पावन और विशाल गोद में जगह–जगह मेला और मड़ाई का गमकता वातावरण मन को भा जाता है। इसी कड़ी में संत शिरोमणि, ज्ञानप्रवर, परमपाल संतबोधी गुरू घासीदास जी की जन्म स्थली गिरौदपुरी धाम का मेला अपने जनसैलाब की सिन्धु धारा सम गंभीरता और सतनाम भाव को स्थापित करता है।

फागुन शुल्क पक्ष पंचमी से सप्तमी तक त्रिदिवसीय गिरौद का भव्य मेला अपने आप में महिमामय हो जाता ह। पहाड़ों की गोद में बसा होने के कारण इसे गिरौद कहा गया जहाँ प्रकृति का सौंदर्य, आकाश की निराली छटा, प्रातः सूर्य का आकाश में उछलना ऐसा लगता है, मानो हिरणों के कुलॉचे, गायों का झुण्ड इस धरती को वैभव भण्डार बना देते हैं। गिरौदपुरी सतनाम में गूंजता पवित्र धरती है यह किशोरों और नव बालाओं की किलकारी भरा अजीर सा लगता है, जिसके चारों ओर प्रसन्नता के फूल खिलें हों, और दिन में सूर्य का रिश्ते नायक पौढ़ आतिथ्य तथा रात्रि में चंद्रमा का रजतरंग मनमोहक रूप प्रकृति के पूरे ऑचज को सौंदर्य प्रदान करता है।

<u>पहुँच मार्ग</u> –राजधानी रायपुर से 135 कि.मी. बलौदाबाजार होते हुए ग्राम बरपाली सड़क मार्ग से सीधे जीप या बस द्वारा गिरौदपुरी पहुँचा जा सकता है। बिलासपुर से 80 कि.मी. शिवरीनारायण से मात्र 15 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

शिवरीनाराण से लगभग 16 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित गिरौदधाम... सतनाम, श्रद्धा, विश्वास और कल्याण की भावना लिये गुरू बाबा की स्मृति और उनके उपदेशों को उजागार करता है। अहिंसा परमोधर्मः मद्यपान निषेध, समता, एकता तथा मानवतावाद को स्थापित करने का संदेश देता है। गिरौदधाम पहँचने के लिए उत्तर तथा पश्चिम दिशा से अनेक साधन उपलब्ध हो जाते हैं। गिरौद बस्ती से लगभग 1 कि. मी. की दूरी पर मुख्य प्रवेश द्वार हैं, तथा यहॉ से करीब 1.5 कि.मी. पर मुख्य सतनाम मंदिर अवस्थित है, मुख्य सतनाम मंदिर के ठीक नीचे दक्षिण की ओर चरणकुण्ड एवं आगे अमृतकुण्ड है। जलपान कर श्रद्धालुजन अपनी कल्याण भावना में मुद्रित होते हैं।

चरणकुण्ड तथा अमृतकुण्ड मार्ग के दोनों ओर पहाड़ियाँ आकाश को निरत निहारती है। ऊँचे–ऊँचे वृक्ष, हरी–हरी पत्तियॉ मन को भा जाती है। पावस में स्नात तरूपादपों की सुंदरता निराली होती है। गिरौदधाम के मुख्यद्वार से दक्षिण दिशा में मात्र 4 कि.मी. की दूरी पर प्रवाहमान जोग नदी है, जिसके दोनों तटों पर उतुंग वृक्ष सतनाम अनुरागियों के स्वागत में खड़े रहते हैं। मेला के अन्य दिनों में येवीरान तट कृषकों, चरवाहों और पक्षियों की चहचहाहट से मन भाते है। जोग नदी के पावन तट पर जगह–जगह सतनाम लघु एवं अस्थायी चूल्हे पर सतनाम भोग भण्डारा अनवरत चलता रहता है।

भण्डारपुर, तेलासी, खड़वा, चटुवा, खपरी, बोड़सराधाम चकवाय, पटाढ़ी, पचरी और अमरताल जैसे सतनाम धर्म स्थल में अलग–अलग तिथियों में मेला का आयोजन होता है। गिरौदपुरी धाम का मेला फागुन शुक्ल सप्तमी को झण्डारोहण के साथ पूर्ण होता है। राजगुरू, धर्मगुरू अथवा छत्तीसगढ़ राज के विशिष्ट जन द्वारा 14–15 लाख श्रद्धालुओं की लालसा, उमंग श्रद्धा और जय जयकार के मध्य संधया 4 बजे ध्वज की जय... सतनाम की जयकारा के साथ गगन मण्डल गूँज जाता है। सजी हुई दुकानों की श्रेणियॉ भी इस उत्सव से भर जाती है। गिरौद मेला में दिवस सहित रात्रि में अनवरत सांस्कृतिक कार्यक्रम होता रहता है, जिसमें सतनाम धर्म के कलाकारों, प्रवचन कर्ताओ, विद्वानों, संतों, महंतों एवं विशिष्ट जनों के विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है। यह सतनामवाणी, गुरू घासीदास जी के प्रति अगाध श्रद्धा, संगीत और स्नेह सम्मेलन का अनुपम संगम है। श्री गुरूघासीदास जी का नाम सतनाम और गिरौदपुरी धाम, युगों–युगों तक अमर रहेगा।

<u>आवासीय सुविधा–</u> गिरौदपुरी एवं निकटतम स्थल बिलासपुर के उच्च एवं मध्यम स्तरीय हॉटल, लॉज एवं प्रशासनिक गेस्ट हाऊस।

मंगत रवीन्द्र, मुख्य पोस्ट ऑफिस, कापन (अकलतरा)

श्रृंगीऋषि आश्रम-सिहावा

दण्डकारण्य का प्रवेश द्वार सिहावा न केवल अपनी वन तथा खनिज सम्पदा के कारण प्रसिद्ध है, अपितु अपनी ऐतिहासिक तथा पौराणिकता के कारण आज भी लोगों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। छत्तीसगढ़ मे चित्रोत्पला गंगा तथा उड़ीसा में जीवन–दायिनी के रूप में जन मानस में बसी महानदी का उद्‌गम स्थल के साथ–साथ सप्तऋषियों की तपोस्थली होने के कारण यह क्षेत्र इतिहासवेत्ताओं के साथ–साथ धार्मिक श्रद्धालुओं को आज भी सहज किन्तु शोधार्थी की तरह प्रेरित कर आकर्षित कराता है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर छत्तीसगढ़ शासन द्वारा सिहावा को पर्यटन क्षेत्र में शामिल किया है तो आइए जाने इस अंचल की खासियत को–

नामकरण की किवदंतियाँ– सिहावा नामकरण के पीछे कई तरह की जनश्रृति, किवदंतियाँ इस क्षेत्र में प्रचलित है। सिहावाः सिंहआवा जाहिर है कभी इस अंचल में कभी मनुष्य की आवाज से ज्यादा शेरों की दहाड़ सुनायी पड़ती थी। कुछ लोग कहते हैं, सिंहआवा सिहावा अर्थात् जिसका सिर हवा में हो, वह सिहावा यही खासियत है सिहावा की आज भी बहुत सारे श्रद्धालु श्रृंगीऋषि आश्रम में पास बहने वाली ठंडी हवा का आनंद लेने के लिए जाते हैं। यहाँ के हवा की खासियत है कि उपर तक पहुंचने के कारण उपजी सारी थकान को मिटा देती है।

सप्तऋषियों की तपोस्थली – पौराणिक कथाओं में इस बात का संकेत मिलता है कि वनाच्छिदत सिहावा अंचल की धरती सप्तऋषियों की तपोस्थली रही है। महेन्द्रगिरि पर्वत (पौराणिक नाम) जिसे वर्तमान में सिहावा पर्वत कहते हैं, में विभाण्डक ऋषि के आश्रम में ऋंगी ऋषि ने तत्व ज्ञान प्राप्त किया। वहाँ उन्होंने अखण्ड ब्रम्हचर्य का पालन करते हुए वेदों का पूर्ण अध्ययन करते हुए तपोबल से वृष्टियज्ञ तथा उत्तरेष्टि यज्ञ करके संबंध में विशेष सिद्धि प्राप्त की।

अंगदेश राजा रोमपाद अयोध्या नरेश राजा दशरथ के परम मित्र थे। रोमपाद का कोई पुत्र नहीं था। महर्षि ऋंगी ऋषि की कृपा से पुत्रेष्ठि यज्ञ द्वारा उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। पुत्र रत्न की प्राप्ति होने पर राजा रोमपाद ने अपनी पुत्री शांता को राजा दशरथ को सौंप दिया। राजा दशरथ ने अपनी पुत्री की तरह उसकी देखभाल की। महाराज रोमपाद ने परमहर्षित होकर अपनी रूप, गुण संपन्न पुत्री शांता का विवाह वैदिक विधि–विधान से महर्षि ऋंगी ऋषि के साथ कर दिया, उधर रोमपाद ने भी अपने मित्र दशरथ को पुत्रेष्ठि यज्ञ कराने पर पर बल दिया। रामायण की कथा के अनुसार दुर्वासा ऋषि ने भी अयोध्या नरेश दशरथ के बारे में बताया था कि उनके चार पुत्र होंगे। वशिष्ठ के आग्रह पर महर्षि ऋंगी ऋषि पुत्रेष्ठि यज्ञ के लिए अयोध्या गए। यज्ञ सफल हुआ और ऋषि के आशीर्वाद से राजा दशरथ के चार पुत्र हुए।

कमण्डल से महानदी की उत्पत्ति– महानदी (चित्रोत्पला गंगा) की उत्पति महर्षि ऋंगी ऋषि ने अपने प्रिय शिष्य महानंद के नाम पर नदी का नाम महानदी रखा। इस संबंध में पौराणिक कहानी यह है कि भागीरथी के प्रयास से धरती पर जब गंगा का अवतरण हुआ तो गंगा दर्शन के लिए क्षेत्र के सारे ऋषि हिमालय की ओर गये । ऋषियों ने महर्षि ऋंगी ऋषि को भी गंगा दशन हेतु चलने का निवेदन करने की इच्छा जताई पर ऋंगी ऋषि ध्यानावस्था में थे। ऋषियों ने ध्यान भंग करना उचित नहीं समझा। जब गंगा दर्शन कर ये लौटे तब भी ऋंगी ऋषि ध्यानावस्था में ही थे। अतः ऋषियों ने गंगाजल ऋंगी ऋषि के कमण्डल में डाल दिया। कुछ दिनों के बाद जब ऋषि ने अपनी समाधि तोड़ी, ध्यानावस्था से बाहर आने के लिए अपने लटों को हिलाया तब पास रखा हुआ कमण्डल लटों से टकराने के कारण लुढ़क गया। कमण्डल लुढ़कने से एक जलकुण्ड (महानदी कुण्ड जमीन की सतह से लगभग 400 मीटर की उंचाई पर) बना और इसी जलकुण्ड से महानदी उत्पत्ती हुई। जलकुण्ड से गंगा जल एक विशाल जलधारा के रूप में महानदी के रूप में 'गणेश घाट' पर प्रकट होकर पूर्व दिशा की ओर बहने लगी।

पर्वत पर पहुंचकर आप ऋंगी ऋषि की प्रतिमा, 'महानदी कुण्ड' का दर्शन कर सकते है। इसके अतिरिक्त और भी कई तरह के प्राचीन देवी–देवताओं की प्रतिमा पहाड़ पर मौजूद है। जिनके दर्शन किये जा सकते है। पर्वत का सबसे ऊंचा भाग होने के कारण चारों दिशाओं के दूर–दूर तक के प्राकृतिक दृश्यों का आनंद भी उठा सकते हैं। यहां से दुधावा बांध का मनोरम दृश्य दिखाई पड़ता है। उपर पहुंचते ही यात्रा की सारी थकान मिट जाती है। यहां की हवा की खासियत है। ठीक पहाड़ के नीचे दंतेश्वरी गुफा के नीचे भीतरारास नामक गांव में सुंदर सरोवर आज भी विद्यमान है। श्रद्धालुओं के लिए पर्वत के उपर पर्यटन विभाग द्वारा पेय जल की व्यवस्था की गई है।

किस मौसम में जायें– वनाच्छादित होने के बाद भी सहज पहुंच मार्ग पर होने के कारण सिहावा किसी भी मौसम में पहुंचा जा सकता है। यहां हर मौसम का आनन्द लिया जा सकता है, पर अगस्त से लेकर नवम्बर का समय वहां के प्राकृतिक दृश्य को और भी रमणीय बना देता है।

<u>पहुँच मार्ग</u> – वायुमार्ग–निकटतम विमानतल 98 कि.मी. की दूरी पर रायपुर के माना में स्थित है। रेल मार्ग–निकटतम रेल्वे स्टेशन धमतरी है, जिसकी दूरी 22 कि.मी. है, सड़क मार्ग–रायपुर से 98 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

विश्वम्भर प्रसाद चन्द्रा, नगरी

ऐतिहासिक एवं पौराणिक स्थली-सेतगंगा

मुंगेली जिले के पश्चिम में पेशुआ नाला के पथ पर सिथित सेतगंगा एक ऐतिहासिक एवं पौराणिक स्थल है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान श्रीराम, जानकी व लक्ष्मणजी की प्रतिमा है। साथ ही भगवान शंकर, हनुमान, राधा कृष्ण, विश्वकर्मा एवं महामाया मंदिर है। यहाँ अनेक देवी देवताओं की प्रतिमा स्तंभों में उकेरी गई है। इसे देखने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे देवताओं की सभा लगी है। द्वारपाल के रूप में दशानन (रावण) मौजूद है। शिवालय के पार्श्व भाग में उकेरी गई शिल्पकलाएँ खजुराहो की कलाकृति की झलक देती है। कुंड का जल गंगा के समान पवित्र एवं पूण्यदायक माना जाता है।

सेतगंगा के नामकरण के लिए अनुमान है कि सेतगंगा "सेतुगंगा" हो सकता है, श्वेत गंगा नहीं क्योंकि अब से 30 वर्ष पूर्व तक यहाँ के कुंड के आसपास जलस्तर एकदम सतह पर था। व्यक्ति को एक हाथ की गहराई में बावली, कुओं से पेयजल पर्याप्त मात्रा में मिल जाता था। इसलिए भी नर्मदाकुण्ड से सेतुगंगा का नामकरण अधिक उपयुक्त जान पड़ता है।

पुरातात्विक, पौराणिक व ऐतिहासिक महत्व के इस धर्मस्थली में प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा में तीन दिवसीय मेले का आयोजन होता है। मेला क्षेत्र में फैले हाटबाजार वहाँ के आकर्षण है, तीन दिनों तक आने–जाने का सैलाब देखते बनता है। यहाँ का संचालन अखिल भारतीय श्रीपंच हरिव्यासी, निर्वाणी अखाड़ा, बंशीवट बृंदावन द्वारा होता है। यहॉ के पुजारी को महंत कहते हैं, जो ब्रम्हचारी व नागा होते हैं। यहाँ नवरात्रि के दोनों पक्षों में महामाया सिद्धेश्वरी मंदिर में ज्योति कलश प्रज्जवलित किया जाता है। भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया विधिवत निकाली जाती है। यहाँ की कुछ प्राचीन प्रतिमाएँ बिलासपुर संग्रहालय में सुरक्षित हैं। वर्तमान में मंदिर परिसर से लगा हुआ संत गुरू घासीदास जी का श्वेत मंदिर व जैत खंभ का निर्माण कराया गया है, जो सुख शांति प्रदाता एवं सतनाम धर्मावलंबियों की निष्ठा का प्रतीक है।

पहुँच मार्ग :– राजधानी रायपुर से 119 कि.मी., जिला मुख्यालय मुंगेली से 16 कि.मी. की दूरी पर प्राचीन स्थल सेतगंगा स्थित है। आवागमन के लिये निजी बस व टैक्सी की सुविधा उपलब्ध है।

स्थल से संबंधित किंवदंतियॉ :– पंडरिया के जमींदार दलसाय बहुत ही दयालु, शांतिप्रिय एवं नर्मदा जी के अनन्य भक्त थे। प्रायः अमरकंटक जाकर कुण्ड में स्नान करते तथा नर्मदा जी की पूजा अर्चना में लीन हो जाते, लेकिन वृद्धावस्था के कारण जब अमरकंटक जाने में असमर्थ हो गए तो उनका मन बड़ा व्यथित हुआ। तब अन्न जल त्याग कर नर्मदा जी के सुमिरन में लग गए, एक रात, मैया ने स्वप्न में उनके राजसीमा में प्रकट होने की बात कहीं। दूसरे दिन मुनादी करवाई गई। कुछ तलाश के बाद गंगा के समान पवित्र जल के बुलबुले के रूप में अवतरित नर्मदा को एक कुण्ड में सुरक्षित कराकर उसकी पवित्रता को प्रचारित किया गया। वहॉ एक बस्ती बसाई गई। कालांतर में यही स्थान सेतगंगा "सेतुगंगा" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जनश्रुति अनुसार उस काल में जब हैजा का कहर मचा, तो कुण्ड में स्नान करने अथवा कुण्ड का जल छिड़कने से रोग से मुक्ति मिल जाती थी। वर्तमान में पदस्थ महंत जी को रात्रि में लगभग 2 बजे भगवान बजरंग बली जी का दर्शन हुआ। एक भक्त को गुप्त नवरात्रि (आषाढ़मास) में माता महामाया ने दर्शन देकर कृतार्थ किया।

आवासीय सुविधा :– सेतगुंगा मंदिर प्रांगण में धर्मशाला की आवासीय सुविधा, जिला मुख्यालय मुंगेली में छ.ग. शासन का रेस्ट हाउस, मध्यम स्तरीय लॉज एवं हॉटल की सुविधा उपलब्ध है।

शहरी शोरगुल से दूर ग्रामीण परिवेश में स्थित सेतगंगा का पुरातन मंदिर व नर्मदाकुण्ड अपनी ऐतिहासिक कथाओं को समेटे हुए हैं। यहॉ के नैसर्गिक दृश्य जिंदगी की आपाधापी से त्रस्त मन को सुकून देते हैं तथा कुण्ड में स्नान करके नर्मदा स्नान का पुण्य लिया जा सकता है।

राकेश गुप्त 'निर्मल', मुंगेली

गौ तीर्थ-बानबरद

छत्तीसगढ़ राज्य में प्राचीन मान्यताऐं, परम्पराऐं आज भी संरक्षित है, जिसे छत्तीसगढ़वासी पूरी आस्था व सम्मान के साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांरित करते हैं। इस आस्था में हमारी प्राचीन इतिहास की झलक भी मिलती है और मार्मिक कथाऐं भी, ऐसे ही छत्तीसगढ़ में परिजनों की मृत्यु पर भी पिंडदान क्रियाकर्म व श्रद्धा की परम्परा है। गाय को पोषक, प्रदायक व दिव्य शक्ति प्रदाता कहा है। यजुर्वेद में गौ को पर्यावरण को नुकसान से बचने वाली संबोधन में प्रयुक्त हुआ है। आयुर्वेद में गाय से प्राप्त सभी पोषक तत्व शारीरिक विकारों का शोधन करने वाली अद्वितीय औषधि के रूप में वर्णित है। छत्तीसगढ़ अंचल में गाय को पशुधन माना जाता है, वैसे भी यहाँ गाय अध्यात्मिक व वैज्ञानिक रूपों की मान्यताएँ पूर्व से है। गौ को माता के रूप में प्रतिष्ठित करने का तात्पर्य उसके द्वारा प्राप्त पोष्क तत्व व पंचगव्य (घी,दूध,दही,गौ–मूत्र तथा गोबर) है।

गाय पुरातन काल से मूल्यवान संपत्ति के रूप में मान्य थी, गौ–दान, दण्ड निर्धारण क्रय–विक्रय, वस्तु विनिमय व राष्ट्रीय सम्पति में गायें शामिल थीं, कामधेनु, नंदिनी आदि गायें ऋषियों तथा देवताओं की संपत्ति थी।

वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि गाय के गोबर से लीपे स्थान पर रेडियो विकिरण से रक्षा करने की सबसे अधिक शक्ति होती है, घी को गाय के उपलों के साथ जलाने में मैंथोले, फिनोल, अमोनिया, फार्मेलिन गैस उत्सर्जित होती है जो वायुमण्डल को शुद्ध रखती है।

छत्तीसगढ़ में गाय संपत्ति तो है ही साथ ही उसे माता की संज्ञा भी दी गयी है। हमारे यहाँ गाय अन्य राज्यों की भॉति उपेक्षित नहीं है प्राचीन काल की पूजा प्रथा के अनुकूल आज भी गौ पूजा प्रतिष्ठित है। छत्तीसगढ़ में गौ को माता के समान–सुरक्षा तथा सम्मान दिया जाता है, यहाँ गाय के आकस्मिक निधन पर गाय का पिंडदान करने की प्राचीन परम्परा आज भी कायम है। गाय की हत्या को छत्तीसगढ़ में लउठी लाग गे कहा जाता है, किन्तु प्राकृतिक मृत्यु, बीमारी या कीटाणु लगने से गाय की मृत्यु को बड़े काम या भगवान दण्ड कहा जाता है। यदि गाय के चरवाहे द्वारा लापरवाही या धोखे से किसी गाय की मृत्यु हो जाती है तो चरवाहे को गौ हत्या का पश्चाताप करना पड़ता है, अन्यथा अंचल में मान्यता है कि उस चरवाहे का गौ हत्या का पाप लगता है। गौ हत्या के पाप से मुक्त होने के लिए चरवाहा उसी समय उसी कपड़े में घर से 21 दिन बाहर रहता है और इन 21 दिनों तक वह गॉव के बाहर भीख माँगकर खाता है। भीख में मिली वस्तुओं को चरवाहा गाँव के खार (गाँव से अलग कृषि क्षेत्र) में पकाता है और एकांता व अकेले में खाता है। कभी–कभी चरवाहे को मौसम के अनुकूल घर से खार में खाना पहुँचाया जाता है। बताये गये नियत स्थान पर चरवाहे के घर वाले खाना छोड़ देते है, उसे चरवाहे द्वारा प्राप्त कर एकांता में खाया जाता है, किन्तु गाँव से लाये खाने को खाते समय चरवाहे ऑख में पट्टी बॉध लेता है। मान्यता है कि यदि चरवाहा आँख पर पट्टी नहीं बाँधी तो खाना उसे लाल रंग का दिखाई देता है, अथवा खाने में रक्त दिखाई देता है। गाँव में भी यह अप्रत्यक्ष जानकारी होती है कि चरवाहे को खाना खाते खार में भटकते समय अनदेखा कर देवें 20 दिन पूर्ण होने के पश्चात् 21 वें दिन चरवाहा पशु कियाकर्म व पिण्ड दान हेतु बानबरद आता है।

बरबरद, अहिवारा नगर पंचायत के जिला दुर्ग के अंतर्गत आता है। बानबरद संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य का एकलौता प्रसिद्ध गौ तीर्थ है। यहां प्राचीन मंदिर बावली व उद्यान है, जहां गौ का पिण्ड व श्राद्ध किया जाता है। प्राचीन मंदिर में विष्णुजी की चतुर्भुजी मूर्ति है, जिसे ग्रामीण चतुर्भुज विष्णु महाराज कहते हैं। यहां पर गौ के कियाकर्म, पिण्डदान आदि मंदिर के पुजारी द्वारा विधि–विधान से किया जाता है। पिण्डदान व श्राद्ध के पश्चात् जिस लौठी से गौ हत्या हुई थी उसे मंदिर के साथ बनी बावली में विसर्जित कर दिया जाता है। कहा जाता है कि इस बावली के अंदर दो प्राचीन कुएँ हैं, तत्पश्चात् वहीं पर सत्यनारायण की कथा की जाती है। चरवाहे के बानबरद से क्रियाकर्म संपन्न कर गॉव लौटने के पश्चात् गाँव के दईहान (पशुओं को चराने ले जाने के पूर्व एकत्रित रखने को स्थान) पर पुनः सत्यनारायण की कथा करायी जाती है। इसके पश्चात् चरवाहा परिवार या गोत्र के लोंगों को पाप मुक्त भोज कराता है। गौ–हत्या से मुक्त होने के पश्चात् चरवाहा पुनः अपने गाय चराने के काम में लग जाता है। जनश्रुति है यदि गौ हत्या के बाद कोई चरवाहा किसी को नहीं बताता व गौ कियाकर्म नहीं करता है तो उसे खाने में खून दिखाई देता है।

गौ तीर्थ बानबरद का मेला पूरे छत्तीसगढ़ में प्रसिद्ध है। यहां माघी पूर्णिमा को मेला लगता है। यह मेला पशु मेला के लिए प्रसिद्ध है। यहां अच्छी नस्लों के बैलों का क्रय–विक्रय होता है, तथा दूर–दूर से किसान यहां पशुधन के लिए आते हैं। इस पशु मेला में घोड़े भी क्रय–विक्रय के लिये लाये जाते हैं।

बानबरद पहुंचने के लिये कुम्हारी, भिलाई व दुर्ग से नंदिनी मांईस, अहिवारा पहुंचकर, टैक्सी बानबरद 3 कि.मी. पहुंचा जा सकता है। बानबरद से 4 कि.मी. में भिलाई स्टील प्लांट एरोड्रम है। पूरे देश में छत्तीसगढ़ राज्य का नाम गर्व से लिया जाना चाहियें, क्योंकि सिर्फ हमारे यहां गौ तीर्थ है।

आवासीय सुविधाऐं– जिला मुख्यालय दुर्ग में छ.ग.शासन का रेस्ट हाऊस, उच्च एवं मध्यम स्तरीय हॉटल धर्मशाला एवं इस्पात नगरी भिलाई में मध्यम एवं उच्च कोटि के हॉटल एवं लॉज की सुविधा उपलब्ध है।

<u>पहुँच मार्ग</u> –राजधानी रायपुर से राष्ट्रीय सड़क मार्ग में भिलाई पॉवर हाऊस से नंदनी रोड में 52 कि.मी. एवं जिला मुख्यालय दुर्ग से 25 कि.मी. दूरी पर स्थित है। निकटतम रेल मार्ग दुर्ग जक्शन है।

एस.के. राजा, भिलाई

प्रज्ञागिरि - बौद्ध तीर्थ स्थल

प्रज्ञा – ज्ञान बुद्धि और सरस्वती, डोंगरगढ़ का ऐसा पर्व जहाँ ज्ञान, बुद्धि और सरस्वती की प्राप्ति होती हो, उसे कहा जाता है छत्तीसगढ़ की पुण्यस्थली, राजा कामसेन की नगरी, कामाख्या व कामावतीपुरी डोंगरगढ़ में प्रज्ञागिरि की उपादेयता, बौद्ध धर्म को छत्तीसगढ़ में विस्तार ही नहीं, अपितु प्राचीन बौद्ध धर्म का गौरव प्राप्त करती है।

बुद्धम शरणम् गच्छामि, धम्मम् शरणम गच्छामि, संघम् शरणम गच्छामि की ऋचाओं से गुंजायमान प्रज्ञागिरि छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 106 कि.मी., राजनांदगाँव से 36 कि.मी. पर डोंगरगढ़ की प्रसिद्ध शक्तिपीठ माँ बम्लेश्वरी देवी का मंदिर है जो सघन वनों से आच्छादित छोटी–छोटी डोंगरी से घिरा हुआ गढ़ डोंगरगढ़ की पर्वतीय श्रृखला में अनेक डोंगरियाँ है । इन्हीं में माँ बम्लेश्वरी डोंगरी के उत्तर–पूर्व दिशा में नंगारा डोंगरी स्थित है। इस पर्वत में तथागत भगवान गौतम बुद्ध की ध्यानसथ मुद्रा में प्रतिमा सथापित कर इस पर्वत का नाम प्रज्ञागिरि रखा गया । लगभग 650 मीटर ऊंचे इस पर्वत में 50 फीट ऊंची ध्यानस्थ मुद्रा की प्रतिमा का विधिवत परित्राण पाठ कर स्थापित किया गया । इस स्थापना दिवस पर विश्व के विभिन्न देशों के बौद्ध अनुयायियों ने भाग लिया था। जिसमें जापान के सोमनहोरी शावा व भारत के अन्य प्रांतों से बौद्ध, भिक्षु एवं देश के बौद्ध धर्मावलंबियों ने डोंगरगढ़ पहुचकर, इस प्रज्ञागिरि पावन तीर्थ में भाग लिया था। नागपुर (महाराष्ट्र) एवं छत्तीसगढ़ के मध्य एक दर्शनीय बौद्ध तीर्थ के रूप में स्थापित प्रज्ञागिरि दोनो राज्यों के मध्य बौद्ध धर्म की समरसता का प्रतीक है।

प्रज्ञागिरि पर्वत पर सूर्योदय होते ही सूर्य की प्रथम किरण ज्यों ही प्रतिमा के मुख मण्डल पर प्रतिबिम्बित होती है, त्यों ही प्रकृति की अद्‌भुत छटा सुनहरे आभा मण्डल के रूप में बिखरता हुआ दृष्टिगोचर होकर ऐसा प्रतीत होता है कि सुनहरी प्रभामण्डल युक्त भगवान बुद्ध घाटियों के मध्य से एकाएक अवतरित हो रहे हों ।

सूर्यास्त में यहाँ प्रकृति की अनुपम लीला दृष्टिगोचर होती है, दिनभर का थका सूरज दूर क्षितिज में मलिनता की लालिमा ली हुई किरणें प्रतिमा पर प्रतिबिम्बित होते ही ऐसी प्रतीत होती हैं कि भगवान बुद्ध धीरी–धीरे घाटियों में समाहित हो रहे है। चीनी यात्री फाह्यान (299–414) ने मुख्य रूप से 6 स्थानों को बौद्ध तीर्थ के रूप में उल्लेख करते हुए वहाँ की यात्रा सुखद बतायी है :–

लुम्बिनी – जहाँ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था, बौधगया – जहाँ गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था , सारनाथ – जहाँ इन्होंने धर्मचक्र प्रवर्तन किया था, श्रावस्ती(जेतवन बिहार) – जहाँ 25 वर्ष तक धर्मोपदेश दिया, संकिता – जहाँ ब्रम्हा एवं दन्द्र के साथ माता को उपदेश देकर, कुशीनगर – जहाँ उन्हें निर्वाण प्राप्त हुआ था।

चीनी बौद्ध यात्री इत्सिंग (671–695) ने उपरोक्त स्थानों के साथ दो और स्थानों को जोड़ा था, राजगृह का कुक्कुट पादगिरी– गौतम बुद्ध ने यहाँ रहकर उपदेश दिये थे, वैशाली जहाँ उन्होंने सम्पूर्ण जीवन का दृष्टांत वर्णित किया था।

चीनी बौद्ध यात्रीयुवान–चांग(629–645) ने इन 8 स्थानों के अतिरिक्त बौद्ध धर्म स्थल के रूप में उल्लेख किया है, जहाँ लोग धार्मिक यात्रा पर आते–जाते और पूजा वस्तु समर्पित करते थे । व्हेनसाँग के अनुसार :–

ओशोलाना संघाराम : जहाँ गौतम बुद्ध के चरण चिन्ह अंकित थें ।

मथुरा :– जहाँ बुद्ध के शिष्यों के शरीरावशेष पर स्तूप बना था।

कपीथ :– अशोक ने यहाँ की धार्मिक यात्रा की थी ।

कन्नौज :–जहाँ गौतम बुद्ध के दाँत के दर्शन होते है।

इसके अतिरिक्त सारनाथ में बुद्ध की भव्य मूर्ति स्थापित है अशोक ने सारनाथ की यात्रा की थी और बौद्ध तीर्थों में इसका प्रमुख स्थान था । अशोक ने बुद्ध से संबंधित सभी स्थानों पर स्तूप निर्माण करवाया था और अनेक स्थानों की धार्मिक यात्रा की थी। युवान–चाँग ने इसी तरह पाट्‌लीपुत्र, बौद्धगया में बोधि वृक्ष, उद् में पुरूपगिरि नामक संघाराम, पुण्डवर्धन, वैशाली, प्राम्बोधि पहाड़, बुद्धवन पिपुलगिरि राजगिरि, नालन्दा आदि स्थानों का तीर्थ सथल के रूप में उल्लेख किया है, वहीं अनुयायियों को धार्मिक यात्रा कर मूर्ति, स्तूप आदि की पूजा करने और बहुमूल्य वस्तुएं समर्पित करने का उल्लेख किया है ।

धनंजय कुमार मेश्राम, भिलाई

अरण्यक गुफा

बस्तर के कदम पर जलप्रताप, गुफाएँ पहाड़ियाँ नदियाँ, घाटियाँ, ऐतिहासिक, पौराणिक एवं धार्मिक स्थल है। बस्तर नैसर्गिक सौंदर्य का अथाह सागर है, अरण्यक गुफा जीवंत अवशैल शैल (स्टेलेमाइट एवं स्टेलेग्टाइट) का विशाल समूह है जिसमें नुकीले शिव लिंगाकृति संरचनाओं से जलकण टपकती रहती है। रहस्य को अपने में समेटे तिमिर श्रंगार युक्त गुफा में टार्च आदि की कृत्रिम रोशनी पड़ने पर जलकण बहुरंगी चमक लिये झिलमिला उठते हैं। अपेक्षाकृत नव अनुसंधानित गुफा होने के कारण ड्रीप स्टोन में जलप्रवाह नमीयुक्त मिट्टी, विशाल कक्षों में विभाजित, विभिन्न आकृतियों से अतल गहराई की ओर ले जाती यह गुफा अद्भुत एवं रोमांचकारी है। ऊपरी छत पर भंवर आकृति, राजमहल सी प्राचीर, छोटे–बड़े आकृति के अवशैल का वादन करने पर वर्ण प्रिय संगीत लहरी पर्यटकों को रोमांचित करती है।

उत्शैल निर्मित साक्षात लक्ष्मी जी की सजीव प्रतिमा, गजमस्तक, भीतरी गुफा में मकर युगल की आकृति, एक अन्य कक्ष में दो विशाल स्तंभों पर अवस्थित शिवलिंग आध्यात्मिक भाव जागृत कर नतमस्तक होने की प्रेरणा देते हैं। अत्यंत संकीर्ण मार्ग में इंच–इंच धराशायी होकर सटकने पर एक अन्य कक्ष का अद्भुत दृश्य मन को चारूपाशा में निबद्ध करता है। 18–25 फीट के कक्ष के ऊपरी छत पर असंख्य जीवंत अवशैल रचनाएँ हैं, जिनके नोकों से झिलमिलाते जलकण सतत् टपकते रहते हैं।

गुफा के भीतर का अनुभव जितना रोमांचकारी है, गुफा के बाहर शीतल बयार, घने तरू कुंज जलप्रवाह का कल–कल निनाद उतना ही आहादकारी है। **नामकरणः** अरण्यक का नाम करण ही उसकी सुषमा का घोतक है। मादरकोंटा के निकट मंगलपुर पहाड़ी के ऊपर जुलाई 96 की प्रथम बारिश की पड़ने वाली बौछारों ने शैलखंडों की ऊपरी परत की मिट्टी बहा दी थी, तब बनी एक खोहनुमा रचना मात्र के प्रति ग्रामीणों की जिज्ञासा का आसपास के संगमरमरी पत्थरों के प्रति दैवीय आस्था ने क्षेत्र में चर्चा का विषय बना दिया, आसपास के ग्रामीण उक्त स्थल तक भीगा चाँवल, नारियल, अगरबत्ती लेकर आने लगे तथा पूजा–पाठ करने लगे और इस बात की जानकारी जब तोकापाल में मनीष गुप्ता, पुस्तक के लेखक डॉ.सुरेश तिवारी व रूद्रनारायण पानीग्राही, अजय सेमसन, डॉ पवन मरकाम और दिनेश पाण्डेय को मिली, तब वे उत्सुकतावश उक्त स्थल का अवलोकन करने जा पहुँचे। ग्रामीणों द्वारा एक सामान्य गड्ढे के पास पत्थर रखकर उस पर रखी कुछ संगमरमरी आकृतियों को पूजा करते देखकर पूछने पर ज्ञात हुआ कि ये शैलखंड इसी खोहनुमा गड्ढे से मिले हैं, किंतु साधन के अभाव में किसी भी ग्रामीण ने इस नवीन दर्शी खोह के भीतर जाने के प्रति भय का प्रदर्शन किया। तब समिति साधनों के साथ इस दल ने उस खोहनुमा गड्ढे में प्रवेश किया। बाहरी भाग से छोटी–सी बनी दरार, भीतर नीचे सीधी उतार की ओर ले जाने लगी। नीम अंधेरा, सीलन, घुटन तथा जमीन की फिसलन एक–एम इंच आगे बढ़ने से रोकती थी। जैसे–जैसे नीचे भू–गर्भ में उतरते गए, मार्ग बड़ा एवं भीतर बहुत विशाल गुफा कक्ष दिखाई दिया और तब शुरू हुआ जिज्ञासा तथा रोमांच का अनूठा सफर और उजागर हुआ एक खूबसूरत नई–अरण्यका गुफा।

सील का इतिहास / किवदंती– प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर मंगल पहाड़ी पर देवी माता का वास होना स्थानीय पुजारियों के द्वारा बताया जाता है। जुलाई 1996 में बारिश के मौसम में गाँव के कुछ युवा इन्ही पहाड़ी क्षेत्र में विचरण कर रहे थे, तब उन्होंने एक मयूर को उड़ते देखा, वे इसका पीछा करते–करते बॉस कुंज में पहुँचे और बांस को जड़ तक काट डाले। मयूर इन्हें नहीं मिला पर प्रथम बारिश की बौछार ने शैलखंडों के ऊपरी परत की मिट्टी को बहा दिया और खोहनुमा रचना दिखाई पड़ने लगी। गाँव का पुजारी कुछ नीचे तक ही उतर पाया और उसे स्टेलेग्साइट की लक्ष्मी जी की आकृति दिखाई पड़ी वह अवशैल के टुकड़े तोड़कर ऊपर आया और प्रचारित किया कि इस गुफा में लक्ष्मी का वास है, उन्होंने प्रत्यक्ष प्रकट होकर मुझे दर्शन दी है। इससे ग्रामीणों में जिज्ञासा और आस्था जागृत हुई। और हर बृहस्पतिवार को वहॉ दर्शनार्थियों की भीड़ जुटने लगी। पुजारी अवशैन बंद को पाषाण पर स्थापित कर पूजा पाठ करने लगा, लोग चढ़ावा भी चढ़ाने लगे। इस ख्याति को सुनकर अरण्यक भ्रमण दल के सदस्यों ने वहाँ का भ्रमण किया और इस गुफा के प्रथम प्रवेशी बनें।

समूह पर्यटन के रूप में अन्य निकटस्थ पर्यटन स्थल–बस्तर जिला के कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान के सीमा क्षेत्र में स्थित होने के कारण अरण्यक गुफा के साथ–साथ अन्य पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया जा सकता है, जिसमें तोकापाल विकासखंड स्थित मंडवा जलप्रपात खूबसूरत पिकनिक स्थल है जो तोकापाल से 12 कि.मी. दूर हैं।

आवासीय सुविधा : जगदलपुर जिला एवं संभाग मुख्यालय है यहां अच्छे स्तर की होटलें, रेस्टहाऊस, सर्किट हाऊस की सुविधाएं उपलब्ध है। **अन्य दर्शनीय स्थलः** कुटुम्बसर गुफा, कैलाश गुफा, दण्डक गुफा, सकलनारायण गुफा, तुलार गुफा, उसूर गुफा, रानी गुफा, चित्रकुट जलप्रपात, तीरथगढ़ जलप्रपात आदि।

पहुँच मार्ग –जिला मुख्यालय जगदलपुर से दंतेवाड़ा मार्ग पर ग्राम ताबाड़ा राजू, कर्मा, मादर कोटा तक की सड़क है, मादर कोटा से लगभग 2 कि.मी. कि दूरी पर कोसम झोड़ी प्रवाहित है, इसे पार कर छोटी से पहाड़ी की चढ़ाई पर अरण्यक गुफा का मुख्य द्वार अवस्थित है।

डॉ सुरेश तिवारी, तोंकापाल

मलाजकुंडम जलप्रपात

छत्तीसगढ़ को प्रकृति ने अपना खजाना दोनों हाथों से लुटाया है। कहीं वनोच्छादित भूमि हैं तो कहीं कल–कल बहती नदियॉ इसकी पावन धरा को सीचित करती हैं। वन्य प्राणी यहॉ के वनों में स्वच्छंद विचरण करते हैं। यह श्रृंखला सरगुजा से लेकर बस्तर तक चली है। पूरे छत्तीसगढ़ में वन, वन्यप्राणी व प्रकृति की अनमोल देन मिलती है। यहॉ अनेक नदियॉ बहकर मुख्य नदियों में विलीन हो जाती हैं। नदी अपना मार्ग स्वयं बनाती है। मार्ग में आने वाली बाधाओं को पार कर वह आगे बढ़ती है। नदी के नये नये मार्ग बनाना ही झरनों का निर्माण करता है। जलप्रपात चट्टानों से गिरता जल ही है। वह किसी नदी या नाले का जल हो सकता है। इस जलराशि का गिरना ही सौंदर्य के प्रतिमान बनाता है। ऐसे ही एक जलप्रपात का नाम है मलाजकुंडम । यह बस्तर का प्रवेशद्वार कहे जाने वाले कांकेर जिले में स्थित है।

नामकरण :– मलाजकुंडम जलप्रपात तक पहुंचने पर छोटे से सुंदर जलप्रपात के दर्शन होते हैं, जो पर्यटकों के मन को बांध लेते हैं। कांकेर से मलाजकुंडम जलप्रपात तक पहुंचने पर दूध नदी को मार्ग में तीन बार पार करना पड़ता है। क्षेत्रीय आधार पर मलाजकुंडम का नामकरण भी अनोखा है। क्षेत्रीय लोगों के अनुसार मलाज गड्ढा को कहते हैं जिसमें कुडुम नाम की अनोखी मछली पाई जाती है। जो सांप की तरह फुफकारती है। कुडुम मछली दूध नदी के उद्गम स्थल के आसपास बहुतायत में पाई जाती है। इसलिए इस घाटी का नाम ही मलाजकुंडम पड़ गया है।

पहुँच मार्ग :– कांकेर रायपुर से राष्ट्रीय राजमार्ग पर 140 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। वहॉं से बस्तर की ओर आगे बढ़ने पर 16 कि.मी. राजमार्ग से दांयी ओर जाने पर मलाजकुंडम जलप्रपात है।

मलाजकुंडम जलप्रपात :– मुख्य सड़क से अंदर जाने पर कुछ ही दूरी पर जंगल प्रारंभ हो जाता है। यह जंगल की नीरवता आकर्षित करती है। रास्ते में जल की धारा मिलती है। कुछ ही दूर जाने पर पानी के गिरने की मधुरतम ध्वनि सुनाई देती है। यहीं पर है मलाजकुंडम जलप्रपात। मलाजकुंडम दूध नदी का जलप्रपात है। दूध नदी ऊँची चट्टानों से उद्गमित होकर कांकेर नगर में बहती है। फिर वह महानदी में मिल जाती है। इस जलप्रपात का दृश्य नीचे से मनोहारी लगता है। पूरी जलराशि अलग–अलग चरणों में नीचे तक आती है। चारों ओर हरियाली इसके सौंदर्य को और निखारती है। बड़ी जलराशि की धार नीचे आती है तो सैकड़ों फुहारें अपने साथ लाती है। इसका शीतल जल तन–मन को भिगो देता है। जलराशि कहां से आ रही है यह जानने की उत्कंठा चट्टानों पर उपर चढ़ने को मजबूर करती है। उपर चढ़ने पर नीचे छोटी सी घाटी का अलग ही रूप देखने को मिलता है। उपर से गिरती जलधाराऍं मानो नटखट बालिका के समान नीचे उतरती है उसमें उतनी ही चंचलता व शोखी होती है।

दूध नदी :– उपर जाने पर दूध नदी का उद्गम स्थल मिलता है। यहीं से धारा निकलती है और पहाड़ी से नीचे आकर नदी का रूप ले लेती है। जलप्रपात नीचे आकर एक स्थान पर इकट्ठा होकर कुंड का रूप बनाता है इसलिए इसका नाम मलाजकुंडम रखा गया है। इस जलप्रपात का अनुपम सौंदर्य अविस्मरणीय है। स्वच्छ, श्वेत जलराशि मन को मोह लेती है और दूध नदी दूध सा सफेद जल होने का एहसास कराती है।

जिला मुख्यालय कांकेर से सबसे निकट जलप्रपात एवं पर्यटनस्थल होने के कारण यहॉं पर्यटकों की सदा भीड़ बनी रहती है। दोपहिया या चारपहिया वाहन से यहॉ तक आसानी से पहुंचा जा सकता है।

अन्य दर्शनीय स्थल :– कांकेर का सिंहवाहिनी मंदिर, गड़िया पहाड़, किला पहाड़, सोनई रूपई तालाब, कांकेर पैलेस, केशकाल घाटी आदि। **आवासीय व्यवस्था** :– जिला मुख्यालय कांकेर में विश्रामगृह एवं मध्यम एवं उच्चस्तरीय हॉटल तथा लॉज की सेवा उपलब्ध है। केशकाल में वन विभाग छ.ग. शासन का विश्रामगृह उपलब्ध है।

मलाजकुंडम जलप्रपात के असीम नैसर्गिक सौंदर्य को निहारने के बाद वापसी के लिए एक अन्य मार्ग भावगिर, नवांगांव, मनकेशरी होकर जाने से मार्ग में मनकेशरी बांध देखने को मिलता है। जो एक पहाड़ी नदी पर बना हुआ है। ट्रैकिंग करते हुए दूध नदी के प्रवाह के साथ आगे जाने पर केशकाल घाटी से निकलने वाली हटकूल नदी व दूध नदी का संगम स्थल भी एक सुंदर पिकनिक स्पॉट है। इसी तरफ कांकेर से 7 कि.मी. आगे जाकर दूध नदी और महानदी का संगम स्थल भी मनोहारी है। घाटी के घुमावदार रास्ते पहाड़ी पर उपर की ओर चढ़ते हुए बस्ती तक पहुंचना पर्यटक को अनोखे रोमांच से भर देता है। बस्ती की बसाहट से लगभग 1 कि.मी. की दूरी पर सुंदर मनोहारी निर्झर जलप्रपात अत्यंत आकर्षक जहॉं तक लोक निर्माण विभाग द्वारा निर्मित सड़क भी बनी हुई है। वाहन को बस्ती में बनी प्राथमिक शाला के आसपास छोड़कर जलप्रपात तक पैदल जाना पड़ता है। एक अन्य मार्ग घाटी पर चढ़ते समय बस्ती पहुंचने के पूर्व से ही जलप्रपात के लिए जाता है जो सीधे वहां तक पहुंचाता है जिसके लिए बस्ती के किसी जानकार व्यक्ति को साथ लेना सुविधाजनक होता है।

मोहम्मद नईम, रायपुर

सिद्धपीठ माँ चण्डिका आश्रम - नेवनारा

कुसमी से प्रस्थान कर जब स्वामी वीतराग महाराज जी वनारा गये तो रायपुर रोड में गाँव से बाहर उन्होंने माँ चण्डी को स्थापित कर चण्डिका आश्रम बनाया। यह आश्रम आज पूरे क्षेत्र के लोगों के लिए श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। इस आश्रम को ट्रस्ट के रूप में विकसित किया गया है, इसका विस्तार 20 एकड़ क्षेत्र में हैं, जहां यज्ञशाला, धर्मशाला, बगीचा, सामुदायिक भवन व विभिन्न देवी–देवताओं के मंदिर है। यहां की प्रमुख देवी माँ चण्डिका है, जो दुर्गा माता का ही रूप मानी जाती है। चण्डी विकराल होती है, अर्थात शत्रुओं पर टूट पड़ने के कारण दुर्गा का नाम रणचण्डी या चण्डी पड़ा।

माता चण्डिका शेर पर सवार है, जिनके एक हाथ में त्रिशुल दूसरे में तलवार तीसरे में खप्पर (ज्वाला) व चौथे में ढाल है, यहां के मुख्य पुजारी वर्तमान में मौनी बाबा है। इसके पूर्व स्वामी वीतराग महाराज थे, जिसकी धुनी लगातार प्रज्जवलित रहती थी, उनके ब्रह्मलीन होने पर उन्हें जमीन के नीचे समाधिस्थ अवस्था में ही रखा गया।

चण्डी मंदिर के पार्श्व में माता कालिका का मंदिर है, जहाँ मूर्ति व परिधानों का रंग गहरा स्याह रंग है। मैं कालिका जीभ निकालकर हाथ में तलवार धारण की हुई है। काली के भी दो रूप माने गये हैं, एक शमशान काली दूसरी भद्रकाली, रूपाकार से यहां स्थापित मूर्ति शमशान काली की है। भद्रकाली का वर्ण सिंदुरी माना गया है। दुश्मनों के सर्वनाश के लिए शमशान काली की और अष्ट सिद्धियों, नौ निधियों को प्राप्त करने के लिए भद्रकाली की अराधना की जाती है। भद्र का अर्थ शिष्ट या सभ्य होता है। यहां के अन्य मंदिरों में हनुमान जी, संतोषी माता, गंगा मैया, श्री राधा–कृष्ण, सती मंदिर, राम–सीता, लक्ष्मण व बटुक भैरव का मंदिर प्रमुख है, एक ओर प्रमुख मंदिर स्वयंभू भगवान शिवजी का है। श्री शिवजी पीपल की जड़ से उत्पन्न हुए हैं, उनका लिंगाकार ऊपरी शिरा ही दृष्टव्य है। कालिका माता के ठीक सामने बटुक भैरव का मंदिर है, ऐसी मान्यता है कि माता दुर्गा का दर्शन भैरों के दर्शन के बिना अधूरा रहता है। भैरव शब्द तीन अक्षरों भ,र,व से बना है।

विश्वस्य भरणाढ़ रमणाढ़ ढमनात् सृष्टि स्थिति संहारकारी परंशिवः। संपूर्ण विश्व (ब्रह्माण्ड) का सृजन करने, उसका पालन करने और संहार करने वाला भैरव ही एक मात्र परमतत्व है। भैरव की अन्य परिभाषओं में 'विभेति क्लेशो यस्मादिति भैरव', जो समस्त प्रकार की विपतियों को भी भयभीत कर दे वहीं भैरव के अनुचर है। एक बार ब्रह्माजी अहंकार के वशीभूत होकर स्वंय को सब देवों में श्रेष्ठ समझने लगे। नारायण के अंशज श्रतु से रहा न गया उन्होंने स्वयं को श्रेष्ठ बताया किंतु वेद पुरूषों ने शिवशंकर को ही कैवल्य रूप माना। सनातन प्रणव ने भी भगवान शिव से कोई बड़ा नहीं है कहा किन्तु बह्मा और श्रतु की अज्ञानता दूर नहीं हुई तब दोंनों के मध्य एक ज्योति प्रकट हुई। वह ज्योति पुरूषकार नील लाहीत वर्ण, त्रिशूलधारी, त्रिनेत्र, सर्पआभूषित रूप में बदल गई। वह ज्योति पुरूष बालक रोने लगा। बह्मा के पंचममुख से उत्पन्न उस रोने वाले बालक को रूद्र कहा गया। वह बालक हैरवाकार में बदल गया। बह्माजी ने उन्हें कहा 'हे बत्स काल भी तुमसे डरता है अतः तुम काल भैरव कहलाओगे।' उस भैरवाकृति ने अपने बांयें हाथ की कनिष्ठा के नख से बह्माजी के पांचवे सिर को काटकर उन्हें दण्डित किया था क्योंकि उस पांचवे सिर ने शिवजी की निंदा की थी। ऐसा करते ही बह्माजी की अज्ञानता मिट गई। शिवजी ने उस बाल स्वरूप भैरव को आदेश दिया कि इस कटे मुंड को लेकर भिक्षायापन करते हुये लोक भ्रमण करो। काशीनगरी पहुंचते ही ब्रह्म हत्या का पाप मिट जायेगा। वह मुंड स्वंय गिर पड़ा जहां गिरा उस स्थान का नाम 'कपालमोचन' पड़ा बाद में भगवान शंकर ने भैरो को काशीपुरी का कोतवाल नियुक्त किया।

भैरव मंदिर से उतरते ही एक विशाल जीवन दायक पीपल वृक्ष मिलता है। पीपल से अधिक आक्सीजन उत्सर्जित होने के कारण इसे पूज्य वृक्ष माना जाता है। आक्सीजन प्राण वायु है। इस पीपल की जड़ से उत्पन्न शिवलिंग के ऊपर नल से अनवरत जलबिंदु टपक कर भगवान शिव को हलाहल कालकुट विष के ताप और ज्वलन से मुक्ति प्रदान करती दिखती है। यहीं माता चंडिका का स्वयंभू प्रस्तर मूर्ति है जिसमें रोली लेपन कार्य किया गया है। देवी को कांच की दीवारों से घेर दिया गया है तथा मॉ को स्पर्श न करें का निर्देश लिख दिया गया है। अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए हजारों दर्शक यहां मनोकामना श्रीफल बांधते हैं। मनोकामना पूर्ण होने पर आभार स्वरूप श्रधालु पुनः पधारकर उस नारियल को तोड़ते हैं।

पहुँच मार्ग: राजधानी रायपुर से लगभग 40 किलो मीटर तथा तहसील बेरला से लगभग 14 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। निकटतम रेल्वे स्टेशन रायपुर है।

आवासीय सुविधा – तहसील बेरला स्थित शासकीय रेस्ट हाउस एवं जिला मुख्यालय दुर्ग में रेस्ट हाऊस के अलावा मध्यम एवं उच्च स्तरीय हाटल / लाज की सुविधा उपलब्ध है।

डा. राजेन्द्र पाटकर 'स्नेहिल' बेरला

दामाखेड़ा मंदिर

कबीर पंथ, परम अविनाशी चेतन स्वरुप युगदृष्टा सतगुरु कबीर साहब का सीधा सच्चा मनुष्य के जीवन की मुक्ति का मार्ग है, साहब चारों युगों में चार नामों से कमशः सतयुग में सत्यसुकृत, त्रेता में मुनीन्द्र नाथ, द्वापर में करुणामय और कलयुग में कबीर साहब के नाम समे अवतरित होकर एक ही बात को समझाते हैं :–

युगनि–युगनि हम आइ चेतावा
आये जगत मंझारा हो
हते विदेह देह धरि आये
आया कबीर कहाये हो

कबीर साहब का अवतरण मध्यकाल के संक्रमण काल में जातीय संघर्ष, साम्प्रदायिक उन्माद, सामाजिक भेदभाव एवं धार्मिक कट्टरता के समय हुआ, उनकी साखियाँ, उनकी वाणी ही कबीरपंथ के धार्मिक सिद्धांत है। छत्तीसगढ़ में कबीर पंथियों की तीर्थ स्थली दामाखेड़ा, एक छोटा सा ग्राम है। यह कबीरपंथियों की आस्था का छत्तीसगढ़ में सबसे बड़ा केंद्र माना जाता है। कबीर साहब के सत्य, ज्ञान तथा मानवतावाद सिद्धांतों पर आधारित कबीरमठ की स्थापना 1903 में कबीरपंथ के 12 वें गुरु उग्रनाम साहब ने दशहरा के शुभ अवसर पर की थी, तब से दामाखेड़ा कबीरपंथियों के प्रमुख तीर्थ स्थल के रुप में प्रसिद्ध है।

मध्यप्रदेश के जिला उमरिया के अतंगर्त बांधवगढ़ निवासी संत धर्मदास कबीर साहब के प्रमुख शिष्य थे जिन्हें कबीर साहब ने अपना संपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया और उनके द्वितीय पुत्र मुक्तामणि नाम साहब को 42 वंशों तक कबीरपंथ का प्रचार–प्रसार करने का आर्शीवाद प्रदान किया। इस तरह मुक्तामणि नाम साहब कबीरपंथ के प्रथम गुरु कहलाये, जिन्होंने छत्तीसगढ़ के ग्राम कुदुरमाल, जिला कोरबा को कबीरपंथ के प्रचार–प्रसार हेतु अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

इसके बाद वंशगुरु ने विभिन्न क्षेत्रों में कबीरपंथ का प्रचार–प्रसार का कार्य स्थान परिवर्तित करते रहे। इस प्रकार छत्तीसगढ़ के कबीरपंथ में वंश गुरुओं की परंपरा कुदुरमल से प्रारंभ होकर रतनपुर, मण्डला मध्यप्रदेश, धमधा, सिहोड़ी मध्यप्रदेश, कबीरधाम कवर्धा होते हुए दामाखेड़ा पहुंची, तब से लेकर वर्तमान तक दामाखेड़ा कबीरपंथियों की आस्था एवं श्रद्धा का प्रमुख केंद्र बना हुआ है, वर्तमान में पंद्रवहे वंशगुरु प्रकाशमुनि साहब, कबीर साहब की वाणी–वचनों के माध्यम से पंथ का प्रचार–प्रसार कर रहें हैं, छत्तीसगढ़ में कबीर साहब द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलने वाले लाखों लोग हैं जिन्हें कबीरपंथी कहा जाता है। कबीर पंथ को अपनाने से उनके जीवन में बड़ा सुधार हुआ है। मांस–मदीरा का त्याग कर वे सरल–सादा एवं शालीनता पूर्वक जीवन व्यतीत कर रहें हैं। गुरु से कंठी लेकर कोई भी कबीरपंथ को अपना सकता है, चाहे वो किसी भी जाति, वर्ग या संप्रदाय का हो। कबीर साहब ने जाति–पंथी, छआछुत, बाह्य आडंबर, पाखंड को त्यागकर सत्य, अंहिसा, प्रेम, दया और मानवता का पाठ पढ़ाया है, यही कारण है कि यह संप्रदाय एक मानवधर्म के रुप में स्थापित हो गया है। छत्तीसगढ़ में अनेक स्थानों पर कबीर आश्रम स्थित है जिन्हें संचालित करने वाला महंत कहलाता है। महंत की नियुक्ति वंशगुरु द्वारा अधिकार पत्र प्रदान कर की जाती है, जो कबीर पंथ में प्रचार–प्रसार का कार्य करते हैं। आश्रम की व्यवस्था देखने वालों को दीवान, पुजारी, कोठारी और भंडारी का पद दिया जाता है।

कबीर पंथ में चौका, आरती का बहुत महत्व है, यह गुरु पूजा का विधान है, चौका आरती भारत देश की प्राचीन परंपरा है। किसी शुभ अवसर पर अथवा पर्व पर घर–घर में चौक पूरकर आरती कलश जलाए जाते हैं तथा गुरुदेव को ऊंचे स्थान पर बिठाकर नारियल, पुष्प अर्पित कर कबीर साहब एवं संत धर्मदास के पदों का गायन करते हैं, इसे चौका आरती कहते है।

छत्तीसगढ़ में दामाखेड़ा कबीरपंथी श्रद्धालुओं के लिये प्रमुख आस्था का केंद्र है। समाधि स्थल में कबीर साहब की जीवनी को बड़े ही मनमोहक एवं कलात्मक ढ़ंग से दीवारों में उकेरा गया है। कबीर साहब के प्रगट स्थल की जीवंत झांकी श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। समाधि मंदिर के मध्य में वंशगुरु उग्रनाम साहब, दयानाम साहब, ग्रंथमुनि साहब एवं गुरुमाताओं की समाधियाँ स्थित है, साथ ही यहाँ पर कबीर पंथ के प्रथम गुरु मुक्तामणि नाम साहब का मंदिर बना हुआ है, जिसके ठीक सामने कबीर पंथ का प्रतीक सफेद ध्वज संगमरमर के चबुतरे पर लहरा रहा है। दूर–दूर से श्रद्धालुगण एवं अनुयायी यहाँ माथा टेकने आते हैं।

दामाखेड़ा में दशहरा पर्व भी बड़े उल्लास के साथ मनाने की परपरां है क्योंकि इसी दिन दामाखेड़ा में वंश की स्थापना हुई थी। तब से लेकर आज तक इस पर्व का आयोजन धूमधाम से किया जाता है। दशहरा के दिन वंशगुरु की भव्य शोभायात्रा परंपरागत ढ़ंग से निकाली जाती है, जिसमें संत–महंत एवं भक्तगण बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। इसी प्रकार कबीर साहब के प्रगट दिवस को भी कबीर जयंती के रुप में ज्येष्ठ अमावस्या के दिन धूमधाम से मनाया जाता है। दामाखेड़ा कबीरपंथ की एक ऐसी पवित्र तीर्थस्थली है, जहाँ बैरागी एवं गृहस्थ दोनों ही तरह के कबीरपंथी आते है, इसी कारण से कबीरपंथ को मानव जाधर्म कहा जाता है। दामाखेड़ा का द्वार संपूर्ण मानवजाती के लिये खुला हुआ है।

पहुंच मार्ग : वायु मार्गः रायपुर निकटतम हवाई अड्डा है, जो मुंबई, दिल्ली, नागपुर, भुवनेश्वर, कोलकाता, रांची, विशाखापट्नम एवं चैन्नई से जुड़ा है। रेल मार्गः हावड़ा–मुंबई मुख्य रेल मार्ग पर रायपुर रेल्वे जंक्शन है।, सड़क मार्गः रायपुर से निजी वाहन एवं यात्री वाहन से जाया जा सकता है। **आवासीय सुविधाएँ** : रायपुर के उच्च एवं मध्यम स्तरीय हॉटल, लॉज एवं प्रशासनिक गेस्ट हाउस उपलब्ध है। **अन्य दर्शनीय स्थान** : उदंती अभ्यारण, छाता पहाड़, सुफरा मठ, शिव मंदिर, चंद्रखुरी, बारनवापारा अभ्यारण आदि।

रामविशाल, सेक्टर–1, भिलाई

लुतरा शरीफ - दरबारे इन्सान अली

लुतरा शरीफ, लुतरा वाले बाबा सैय़यद इन्सान अली शाह की दरगाह के रूप में प्रसिद्ध है। लुतरा शरीफ छत्तीसगढ़ में ऐसा पावन स्थल है, जो श्रद्धा और आस्था का प्रमुख केन्द्र माना जाता है। श्रद्धा के इस केन्द्र में पूरी होती है हर मनौतियॉं, मस्जिदों और मंदिरों के इतिहास में छत्तीसगढ़ हमेशा अग्रणी रहा है।

पहुँच मार्ग :– बिलासपुर, बलौदा मार्ग पर बिलासपुर से लगभग 32 कि.मी. की दूरी पर छत्तीसगढ़ में बाबा इन्सान अली शाह पवित्र स्थल लुतरा शरीफ स्थित है। यहॉं पहुँचने के लिए बिलासपुर स्टेशन है (रेलमार्ग) बिलासपुर से बलौदा–सड़क मार्ग से किसी भी वाहन से सीधे लुतरा शरीफ दरगाह पहुँचा जा सकता है।

इतिहास :– हजरत इन्सान अली शाह के पूर्वज छत्तीसगढ़ में कब आये इसकी कोई ऐतिहासिक जानकारी नहीं है लेकिन कहा जाता है कि उनके खानदान का काफिला दिल्ली से भोपाल होते हुए सरगुजा आया और यहॉं से बिलासपुर होतु हुए रतनपुर गाँव पहुंचे, फिर रतनपुर छोड़कर बछौद ग्राम पहुंचे और उसे ही अपनी कर्म स्थली बनाया। कुछ लोगों का कहना है कि हजरत इन्सान अली के दादा कुछ अरसा रतनपुर में गुजारकर बछौद में बस गये, जहाँ आपके पिता माजिद सैय़यद मरदान अली एवं खुद आपका भी जन्म इसी स्थान पर हुआ। आपका जन्म सन 1845 में हुआ था। यहॉं उल्लेखनीय है कि खमरिया ग्राम के गौटिया जनाब मोहीनुद्दीन साहब की बेटी हजरत उम्मेद बी से हजरत बाबा इन्सान अली का निकाह हुआ। यहॉं जमींदारी से बहुत सारी जमीन उन्हें लुतरा शरीफ में मिली थी और यही स्थल बाबा की कर्म स्थली है।

कहा जाता है कि हजरत बाबा इन्सान अली का पारिवारिक जीवन सुखमय नहीं रहा, उनके घर में बेटी पैदा हुई तथा कम उम्र में ही उसका इन्तेकाल हो गया। बेटी के गम को मॉं बर्दाश्त नहीं कर पाई और वह भी अल्लाह को प्यारी हो गई। बाबा के जीवन में दुखों का पहाड़ टूट पड़ा, किन्तु बाबा विचलित नहीं हुए, शान्त स्वभाव होने के कारण पूरे गम को पी गये। इस विषम परिस्थिति में उनके जीवन में बदलाव आता गया।

हजरत बाबा इन्सान अली रहमतुल्लाह अलैह अपनी हयात (जीवन) में एकदम ही फक्कड़ मिजाज थे। उन्हें खान–पान की कोई सुध–बुध न होती। कपड़ों का कोई ख्याल न होता था। अजब कैफियत का आलम था। वे ऐसी बातें करते जो दूसरों को समझ से परे होती। वे तन्हा रहना ज्यादा पसन्द करने लगे। धीरे–धीरे उन्हें दीन से, धर्म से ज्यादा लगाव हो गया। वे रात की तन्हाई में, कभी ऊँचे पहाड़ों पर तो कभी जंगल के सन्नाटे में कभी तालाब के बीच पहुँचकर खुदा के ध्यान में लीन हो जाते थे। धीरे–धीरे उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई और वे संत कहलानें लगे। ऐसे वली अल्लाह के संत आला हजरत साहब फरमाते हैं :–

तेरी नस्ल पाक में है, बच्चा–बच्चा नूर का
तू है एने नूर, तेरा सब घराना नूर का।।

आवासीय सुविधा – बिलासपुर में लोक निर्माण विभाग का रेस्ट हाउस एवं जिला मुख्यालय में उच्च एवं मध्यम स्तरीय हॉटल एवं लॉज की व्यवस्था उपलब्ध है। एक ही दिन में श्रद्धालु दरगाह का दर्शन कर बिलासपुर लौट सकते हैं।

इस बीच आपको नागपुर के बाबा ताजुद्दीन का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। उनके निरन्तर सम्पर्क में आने पर आपका नागपुर आना–जाना लगा रहा। इस प्रकार सहानियत दौलत आपको हासिल हुई। नागपुर से प्रकाशित धर्मग्रन्थों में बाबा इन्सान अली का जिक्र सबसे पहले आता है। उनका छत्तीसगढ़ प्रेम अंचल में ज्यादा प्रसिद्धि का कारण बना लोग दूर–दूर से आते बाबा उनसे छत्तीसगढ़ी में बातें करते। हजारों लोग उनके भक्त बन गये। इस दरबार में दूर–दूर से दीन दुखियारे आते और बाबा का आशीर्वाद लेकर लौट जाते। बाबा एक चमत्कारी पुरूष थे। उन्होंने कई अवसरों पर चमत्कार कर लोक कल्याणकारी कार्य किये। इस तरह बाबा की शोहरत न सिर्फ छत्तीसगढ़ बल्कि प्रदेश और देश में होने लगी।

बाबा के तबियत विशाल (मृत्यु) के पहले से ही बिगड़ गई थी। खबर अंचल में फैल चुकी थी। रायपुर से मौलाना फारूकी साहब दवाओं के लिये पहुँचे। रात का वक्त था, तारीख 28 सितम्बर ईशा की नमाज के एन वक्त बाबा के होठों पर अजीब सी मुस्कुराहट थी। बाबा के चेहरे से उन दिनों रूहानियत टपक रही थी। बाबा कभी हंसते, कभी मुस्कुराते और खुद अपने आप में मगन हो जाते। लोग दुआएँ करने लगे। ये बुझते दिये की अन्तिम चमक थी। अजान के समय बाबा ने सबको अलविदा कहा। 29 सितम्बर 1960 को हजारों लोगों की गमगीन ऑखों ने बाबा को सूपुर्दे खाक (दफन) कर दिया। आज भी पूरे भारत में जायरीन, दीन, दुखियारे मजार आते हैं और फैज हासिल करते हैं। बाबा उनकी मनोकामना जरूर पूरी करते हैं यही कारण है कि आज भी बाबा की मजार आस्था का मरकज है। यहॉं हिन्दू–मुस्लिमय, सिख, ईसाई सभी धर्म के लोग आते हैं।

मो. अबु तारिक, भिलाई

राजाबाबा-गोड़ समाज के किसानों के देवता

जिला दुर्ग, धमतरी व बस्तर की सीमा रेखा राष्ट्रीय राजमार्ग 43 के जंगल क्षेत्र में एक पठार है जिसे राजाराव पठार कहा जाता है। इस पठार पर जंगल के देवता राजा बाबा का देवस्थल है। यह पठार आस–पास के लगभग 10 ग्रामों के प्रमुख आस्था का केन्द्र है। राजा बाबा को छत्तीसगढ़ के जनजीवन में जंगल के मालिक के रूप में मान्यता है। किन्तु वन्य कृषक इसे किसान के देव मान कर अपनी फसल का द्वितीय दाना राजा बाबा को अर्पित करते हैं। किसान अपनी पहली फसल मॉ कंकालिन पेटेचुआ को अर्पित करते हैं। इसके पश्चात् ही अंचल में नवाखायी का पर्व मनाया जाता है।

राजा बाबा पठार में गणेश चतुर्थी पर्व भादो माह के प्रथम शुक्रवार को बाल पर्व मनाया जाता है। धान की बाली को पूरे विधि विधान के साथ राजा बाबा को अर्पित कर आगामी वर्ष अच्छी फसल हेतु निवेदन किया जाता है। इस बाल पर्व में दुर्ग जिले के 30 गॉव के ग्रामीण (केवल विवाहित पुरूष ही) सम्मिलित होते हैं। राजा बाबा के पठार में कन्या वर्ग, महिलाऍ व कुँवारे युवक सम्मिलित नहीं हो सकते और न ही ये वर्ग राजा बाबा का प्रसाद ग्रहण कर सकते हैं। राजा बाबा का प्रसाद पठार पर ही खाया जाता है। गॉव में व घर में लाने की मनाही है। यह परम्परा सदियों से चली आ रही है। यह कठोर नियम उन विवाहित पुरूषों पर भी लागू होता है, जिसकी स्त्री रजस्वला काल में हो, वह भी पठार पर नहीं जा सकता। इस कठोर नियम के कारण भी, पठार में दैवीय शक्ति आज भी कायम है। राजाबाबा के प्रति आस्था और विश्वास को जीवंत किया है अंचल के चरवाहा वर्ग (राउत जाति के लोगों) जब वे जंगल में गाय चुराने जाते हैं तो जंगल में उनके रक्षक राजा बाबा होते हैं, उनका विश्वास है कि राजा बाबा अप्रत्यक्ष रूप से जंगली जानवर से उनकी गायों की रक्षा करते हैं। चरवाहा वर्ग इस आस्था के फलस्वरूप प्रतिवर्ष राजा बाबा के पठार में पूजा पाठ कर सोहई चढ़ाते हैं, एवं सफेद रंग के मुर्गे की बलि समर्पित करते हैं। राजा बाबा को सफेद वस्तुऍ, सफेद फूल, सफेद वस्त्र, सफेद ध्वजा आदि ही चढ़ाया जाता है। राजा बाबा देवस्थल में एक पाषाण को लोहे के 12 दौरी (12 ताग के लोहे के तार) से बॉधा गया है। प्राचीन मान्यतानुसार यह एक बग्गधरा (बाघ) देव का पाषाण रूप है। यदि इन 12 ताग में से एक भी तार टूट गया या किसी ने शरारत से निकाल दिया तो बाघ जंगल में चरवाहे के गाय बैल को मार गिराता है। ऐसे में ग्रामीण (विवाहित पुरूष) राजा राव पठार आकर बग्गधरा को पुनः 12 ताग के तार (सांकल) से बांध कर नींबू काटा जाता है एवं पूजा अर्चना करने के पश्चात् बाघ का आतंक बंद हो जाता है। पठार के देव स्थल में, लिंगों देव की भी स्थापना है जिनका प्राचीन विधि से पूजा अर्चना की जाती है। मनोकामना पूर्ण होने पर श्रद्धालु राजा बाबा को एक घोड़ा बनाकर समर्पित करते हैं। राज मार्ग 43 के किनारे रखे घोड़े मनोकामना के हैं। राजा बाबा का देवस्थल यहॉ से 200मी. अंदर पठार पर है। वैसे तो राजा बाबा का कोई भी दिन दर्शन कर सकते हैं किन्तु शुक्रवार के दिन दर्शन की ज्यादा मान्यता है। ज्यादातर किसान पानी की मॉग को लेकर राजा बाबा के पठार पर आते हैं और उनकी मॉग अवश्य पूरी होती है।

अंचल में आस्था और विश्वास के साक्षी है, दुर्ग जिले के ये तीस ग्राम कर्रेझर, ओनाकोना मुसकेसा, अलोरी, भेंसमुड़ी, पोड़य, कोचवाही, अमलीपारा, मुजालगोंदी, मरकाटोला, नगवेल, कंकालीन, जंगली, भेजा, गोटाटोला, रूपूटोला, आडेनाडीही, घानापुरी, बालोदरहन, खैरडीगी, मंडगाहन, मोका, साल्हेभाट, दरगाहन, नवागांव, जगतरा, सोहतरा, नैकुरा, आमापानी, बरपानी।

दिनेश वर्मा, चारामा

कोरिया - जिले के प्रमुख जलप्रपात

हमारे देश का इतिहास वर्षों पुराना है। जहाँ अनेक सभ्यताएँ संस्कृतियाँ फली–फूली हैं। आज भी पुरातात्विक अवशेषों से हमें इनकी जानकारी मिलती है। इस जिले के अंतर्गत आने वाले मंदिरों, पर्वतों, तपोभूमियों एवं दर्शनीय स्थलों की प्राचीन काल से बहुत बड़ी धरोहर बिखरी एवं ध्वस्त अवस्था में लुप्त प्राय पड़ी है। जहाँ इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारियाँ हासिल होती है, जिसमें मनन–चिन्तन के मार्ग अवरूद्ध होते हैं, जिले में पुरातात्विक विभाग के नाम पर मात्र एक शिक्षक कार्यरत हैं, जो इस क्षेत्र की जानकारी रखते है। शोधार्थी को स्वयं स्थानीय निवासियों के सहयोग से इन स्थलों के सर्वेक्षण करने का अवसर मिला व जानकारियाँ प्राप्त हुई।

इतिहास का सर्वमान्य सिद्धांत है कि कला, संस्कृति व पुरातात्विक अवशेषों व मान्यताओं का विस्तार निश्चित गति से निश्चित दिशा में होता है। यह जिला जंगलों, पहाड़ों व नदियों के बीच स्थित होने के बावजूद भी इसका अपना ऐतिहासिक व पुरातात्विक महत्व है, यहाँ पाये जाने वाले प्रमुख जलप्रपातों का विवरण निम्नानुसार है :–

अमृतधारा मनेन्द्रगढ़ :– जिला मुख्यालय से दूरी 35 कि.मी. बैकुंठपुर–नागपुर लाइग्राम से 8 कि.मी. दूर अमृतधारा जलप्रपात स्थित है। यह प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल उत्तर दिशा में स्थित है, जहाँ से हसदेव नदी का उद्‌गम होना बताया जाता है। यह कोरिया जिले के साथ ही सरगुजा जिले में भी काफी लोकप्रिय है। इस प्रपात का नाम अमृतधारा क्यों पड़ा, इस नामकरण के पीछे रोचक कथा पुराण में मिलती है। महर्षि बामदेव जो एकान्त झरने के पास घने जंगलों के मध्य तपस्यारत थे, यहीं महर्षि सूतजी ने उन्हें 18 विधाओं से युक्त पुराणों की संपूर्ण कथा और शिवपुराण भी सुनाया। महर्षि बामदेव ने कहा " हे प्रभु आपने इस स्थान पर वर्षभर अमृत की वर्षा की है", इसलिए लोग इस धारा का नाम अमृतधारा कहने लगे।

रमदहा प्रपात जनकपुर :– बनास नदी पर चारों ओर पहाड़ तथा जंगल से घिरा सुंदर प्राकृतिक स्थल है। यहाँ गर्मियों के दिनों में पर्याप्त पानी व ठण्डी हवा बहती है। रमदहा जलप्रपात किसी भी सैलानी को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखता है। ये प्राकृतिक वर्षों से स्थानीय जनों के पिकनिक व सैर–सपाटे के लिए मशहूर है। यह जलप्रपात अपने प्रपात, सुंदर जंगल, मुरेरगढ़, बनास नदी व पुरातात्विक अवशेष होने की वजह से प्रसिद्ध है। श्यामवर्णीय चट्टानों से यह पर्वत, जिसमें पानी रिसकर प्रपात के रूप में 60–70 फीट की ऊँचाई से गिरता है तथा एक बड़े तालाब अथवा झील में एकत्रित होकर पत्थरों से होता हुआ आगे बहता है। उतनी ऊँचाई से गिरने पर प्रपात की ध्वनि किसी मधुर संगीत के धुन के समान कानों में लगती है और अपनी ओर आकर्षित करती है। पहाड़ के ऊपर जहां से बनास नदी का पानी बहता है, बरसात में यह दृश्य और भी मनोरम हो जाता है। यहाँ एक प्राचीन शिवजी का मंदिर है, स्थानीय वन विभाग की ओर से बैठने की व्यवस्था की गई है। रास्ता कच्चा उबड़–खाबड़ होने तथा रास्ते में छोटी सी नदी भी पड़ती है, जिसकी वजह से पर्यटकों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शासन यदि इस दिशा में ठोस पहल करे तो इस स्थल रमणीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

कर्मघोंघा मनेन्द्रगढ़ :– पहुँच मार्ग :– जिला मुख्यालय से 55 कि.मी. दूर, छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश की सीमा के बीच मनेन्द्रगढ़ (कोरिया) विकासखण्ड के समीप स्थित है। 8 कि.मी. दूर बैरीडांड रेल्वे स्टेशन है वहाँ से उतरकर लगभग 3–4 कि.मी. जंगल में अंदर चलना पड़ता है। दूसरा रास्ता मनेन्द्रगढ़ से इमली गोलाई चौंक से ग्राम भलौर व साल्ही होते हुए लगभग 2 कि.मी. पैदल चलने का कर्मघोंघेश्वर धाम व रमणीक जलप्रपात है।

कर्मघोंघा पहुंचने पर सर्वप्रथम कर्मघोंघेश्वर धाम का बोर्ड लगा हुआ है। बीच में छोटा सा हवनकुण्ड है, बाये तरफ एक धर्मशाला है, यदि साफ–सफाई से रखा जाए तो साधु–संतों के रूकने एवं भण्डारा की व्यवस्था अच्छे से हो सकती है तथा दाहिने तरफ 25 फीट का एक चबूतरा है। हवनकुण्ड के सामने लगभग 12–15 फीट की ऊँचाई पर सीढ़ियों से चढ़ने पर तीन छोटे–छोटे मंदिर हैं। बीच का मंदिर अपेक्षाकृत थोड़ा बड़ा है। इस मंदिर में कर्मघोंघेश्वर भगवान शंकर विराजमान है, मूर्ति के उपर एक मटका रखा हुआ है, जिसमें शिवरात्रि में स्थानीय श्रद्धालु लोग जल भर देते हैं, जो बूँद–बूँद कर मूर्ति पर गिरता रहता है। बांयी ओर के मंदिर में हनुमान जी की लगभग दो–ढाई फीट की प्रतिमा है तथा बगल में गदा रखी हुई है। इसके बगल में भगवान शिवजी की छोटी सी प्रतिमा है। बांई तरफ के मंदिर में माँ दुर्गाजी की प्रतिमा है, जो काले रंग की है। मंदिर के सामने चबूतरा है, जिसमें स्थानीय व श्रद्धालु लोग महाशिवरात्रि के समय भजन कीर्तन करते हैं। दुर्गा जी की प्रतिमा पर चूड़ियाँ चढ़ी हुई है, जिससे प्रतीत होता है कि स्थानीय ग्रामीण महिलाएँ नवरात्र के लगभग 1 माह बाद कर्मघोंघेश्वर धात पहुँची हो। यहाँ महाशिवरात्रि के अवसर पर मेला लगता है। यहाँ आस–पास के ग्रामीण पूजा–अर्चना तथा पिकनिक मनाने आते हैं। यहाँ मनोरम दृश्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

विनोद कुमार पाण्डेय

We are everywhere, say, SAIL-Rourkela, Bhilai, Bokaro, Durgapur, Burnpur, Bhadravati, Salem, RINL-Vizag, NINL-Duburi, BHEL-Haridwar, RWF-Bengaluru & Air India - Mumbai

हम सर्व-व्याप्त है : सेल-राउरकेला, भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, बर्नपुर, भद्रावती, सेलम, आर.आई.एन.एल. विभाग, एन.आई.एन.एल-डुबरी, बी.एच.आई.एल.-हरिद्वार, आर.डब्लू.एफ-बंगलुरू एवं एअर इंडिया-मुंबई

फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड

(भारत सरकार का एक उपक्रम), मिनी रत्न-II कंपनी

FERRO SCRAP NIGAM LIMITED

(A Govt. of India Undertaking), A Mini Ratna - II Company

ISO 9001:2008 14001:2004 & O.H.S.A.S. 18001:2007 प्रमाणित कंपनी

व्यर्थ का उपयोग - हमारा आदर्श

तकनीक - हमारा औजार

हम "व्यर्थ को अर्थ" में सम्परिवर्तित कर इस्पात संयंत्रों को विशिष्ट सेंवाएँ देने हेतु कृत संकल्पित है।

FSNL Bhawan,
Equipment Chowk,
Central Avenue,
Post Box No. - 37
BHILAI - 490 001
CHHATISGARH.

Tel. No. : 2222474/2222475 (P & T)
4036/4037 (BSP)
Fax No. : 0788 - 2220423
0788 - 2223884
E-mail : mds@fsnl.co.in
Website : www.fsnl.nic.in
CIN : U27102CT1989GOI005468

हम सर्व-व्याप्त है : सेल-राउरकेला, भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, बर्नपुर, भद्रावती, सेलम, आर.आई.एन.एल. विभाग, एन.आई.एन.एल-डुबरी, बी.एच.आई.एल.-हरिद्वार, आर.डब्लू.एफ-बंगलुरू एवं एअर इंडिया-मुंबई

We are everywhere, say, SAIL-Rourkela, Bhilai, Bokaro, Durgapur, Burnpur, Bhadravati, Salem, RINL-Vizag, NINL-Duburi, BHEL-Haridwar, RWF-Bengaluru & Air India - Mumbai

BSNL 3G
Faster than your thoughts

बदलते प्लान लाए बड़ी खुशियां

सबके लिए है कुछ न कुछ खास

BSNL
Connecting India Faster

Meet the young India
Emerging with flying colors
dynamic & versatile in every manner
let the world know
we are back with a bang
Happy Independence Day

अधिक जानकारी के लिए मिलायें टोल फ्री नं:
1800 180 1503
www.bsnl.co.in

ज्ञान की उड़ान
अब भरोसे के संग

देना विद्या लक्ष्मी*
शिक्षा ऋण योजना
भारत और विदेश में शिक्षा के लिये
नियमित पाठ्यक्रम के लिये

भारत में स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएचडी और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों तथा विदेश में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों द्वारा प्रस्तावित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिये ऋण.

ऋण की राशि
- भारत में शिक्षा के लिये ₹10 लाख तक
- विदेश में शिक्षा के लिये ₹20 लाख या इससे अधिक

देना व्यावसायिक*
शिक्षा ऋण योजना
व्यावसायिक
और कौशल विकास पाठ्यक्रमों के लिये

भारत सरकार या एनएसडीसी, एसएसएम, एसएससी द्वारा संचालित या सहायता प्राप्त व्यावसायिक/कौशल विकास पाठ्यक्रमों और एसएलबीसी / एसएलसीसी द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रमों के लिये ऋण.

- ऋण की राशि अधिकतम ₹ 1,50,000 तक

*शर्तें लागू

अधिक जानकारी के लिये कृपया अपनी नज़दीकी शाखा से संपर्क करें.

www.denabank.com

देना बैंक
DENA BANK
(भारत सरकार का उद्यम)
विश्वस्त पारिवारिक बैंक
देना है तो भरोसा है

मध्य क्षेत्रीय राजभाषा प्रथम पुरस्कार(लगातार चौथी बार) एवं प्रमाणपत्र श्री आर.एस. चतुर्वेदी एवं श्री विजय मैराल द्वारा मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री एम.रवि कौ सौपते हुए

समिति के वेब साईट का लोकार्पण

नराकास के वेबपेज का उद्घाटन करते हुए सहायक निदेशक (कार्यान्वयन)
राजभाषा विभाग मध्य क्षेत्र, भोपाल

नराकास के वेबपेज का अवलोकन करते हुए कार्यपालक निर्देशक (खदान-रावघाट)
एवं कार्यपालक निर्देशक (कार्मिक एवं प्रशासन)

छत्तीसगढ़ के नयनाभिराम पावन धाम

प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा से परिपूर्ण
कला एवं संस्कृति का अनूठा संगम